व्याकरण भारती

भाग 6

भारती भवन
पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

प्रकाशक—
भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)
www.bharatibhawan.in email: editorial@bbpd.in

नई दिल्ली—4271/3 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, दूरभाष 23286557
नोएडा—ए-61 बी/2 सेक्टर 63, नोएडा-201 307, दूरभाष 4757400
पटना—ठाकुरबाड़ी रोड, पटना-800 003, दूरभाष 2670325
कोलकाता—10 राजा सुबोध मल्लिक स्क्वेयर, कोलकाता-700 013, दूरभाष 22250651
बेंगलुरु—नं॰ 98 सिरसी सर्किल, मैसूर रोड, बेंगलुरु-560 018, दूरभाष 26740560

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण 2021
पुन:मुद्रण 2022

व्याकरण भारती भाग 6
कलाजी ऑफसेट, पटना-800 026 द्वारा मुद्रित

आमुख

प्रत्येक बच्चे में भाषा सीखने का गुण जन्मजात होता है। वह अपने आसपास के परिवेश की भाषा को सुनता है, समझता है और फिर उसे बोलना सीखता है। इस अनौपचारिक भाषा-शिक्षण में वह तीन-चार वर्षों में अपने परिवार तथा परिवेश से व्यवहार में आनेवाली भाषा सीख लेता है। जब वह विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने जाता है, तब उसे भाषा के चार कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना—में से दो कौशलों पढ़ना और लिखना को सीखना होता है।

ऐसा माना जाता है कि व्याकरण एक कठिन विषय है। अतः व्याकरण जैसे कठिन विषय से बच्चों को परिचित कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, विशेषकर प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के लिए। व्याकरण में नियमों पर अधिक बल दिया जाता है, इसलिए बच्चों को इसे आत्मसात करने की बजाय रटना पड़ता है। व्याकरण सीखने का मूल उद्देश्य भाषा के बारे में सीखना न होकर भाषा-व्यवहार सीखना होता है।

व्याकरण भारती 6 में सरलता और सरसता के साथ-साथ स्तर का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। हमारा उद्देश्य बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से भाषा-व्यवहार सिखाना रहा है। दूसरे शब्दों में इसे खेल-खेल में भाषा-शिक्षण भी कह सकते हैं।

इस पुस्तक में व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। परिभाषाओं को रटाने की जगह सरल तरीके से व्याकरण सिखाने का प्रयास किया गया है। पाठों में पर्याप्त मात्रा में चित्र दिए गए हैं। पाठ के अंत में हमने जाना में पाठ से मिले ज्ञान को दोहराया गया है। बच्चे जो जान चुके हैं, उसे पुष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास दिए गए हैं। पुस्तक में जगह-जगह पर प्रभावी भाषा-शिक्षण के उद्देश्य से कार्यकलाप दिए गए हैं। जाना-समझा द्वारा पाठ से संबंधित बिंदुओं को अधिक स्पष्ट किया गया है।

व्याकरण की यह पुस्तक अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रकाशक

विषय सूची

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण 5
2. वर्ण-विचार और उच्चारण अशुद्धियाँ 10
3. संधि 20
4. शब्द-विचार 27
5. पर्यायवाची शब्द 33
6. विलोम शब्द 37
7. अनेकार्थक शब्द 40
8. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 43
9. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 47
आओ दोहराएँ 1 51
10. उपसर्ग 52
11. प्रत्यय 57
12. समास 61
13. संज्ञा 67
14. लिंग 73
15. वचन 80
16. कारक 86
17. सर्वनाम 94
18. विशेषण 99
आओ दोहराएँ 2 107

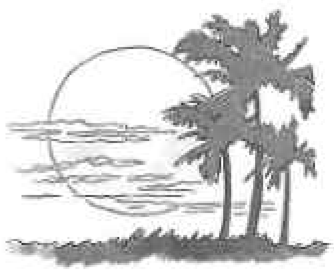

19. क्रिया 108
20. काल 114
21. अविकारी शब्द—क्रियाविशेषण 118
22. संबंधबोधक 124
23. समुच्चयबोधक 127
24. विस्मयादिबोधक 130
25. वाक्य 133
26. वाक्य रचना की अशुद्धियाँ 137
27. विरामचिह्न 140
आओ दोहराएँ 3 145
28. मुहावरे और लोकोक्तियाँ 146
29. अपठित गद्यांश 153
30. अपठित पद्यांश 157
31. संवाद-लेखन 161
32. चित्र-वर्णन 164
33. अनुच्छेद-लेखन 167
34. कहानी-लेखन 171
35. पत्र-लेखन 175
36. निबंध-लेखन 182
आओ दोहराएँ 4 188

1 भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

सुनना और बोलना

पढ़ना और लिखना

कक्षा में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना क्रियाओं द्‌वारा एक-दूसरे से बात कही, सुनी और समझी जा रही है। व्याकरण में बातचीत के इस माध्यम को भाषा कहते हैं।

> वह माध्यम, जिसके द्‌वारा हम अपने विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट कर सकते हैं तथा दूसरों के विचारों को सुनकर या पढ़कर समझ सकते हैं, भाषा कहलाता है।

भाषा का अर्थ

भाषा की उत्पत्ति संस्कृत के 'भाष्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है अपने भावों और विचारों को व्यक्त करना। इस प्रकार भाषा का अर्थ है—सार्थक ध्वनि-संकेतों से अपने मन की बात को समझाना तथा दूसरे के मन की बात को समझना।

भाषा का उद्‌देश्य

भाषा का उद्‌देश्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करना है। भाषा मन में नए विचारों को उत्पन्न करने में सहायता करती है। भाषा एक राष्ट्र की उन्नति में सहायक होती है तथा ज्ञान को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

भाषा के रूप

भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं—मौखिक भाषा और लिखित भाषा।

मौखिक भाषा	लिखित भाषा
1. मौखिक भाषा, भाषा का आरंभिक रूप है।	1. लिखित भाषा, भाषा का स्थायी रूप है।
2. इसमें अपने भावों और विचारों को बोलकर प्रकट किया जाता है।	2. इसमें अपने भावों और विचारों को लिखकर प्रकट किया जाता है।
3. सुनना और बोलना प्रमुख होते हैं।	3. पढ़ना और लिखना प्रमुख होते हैं।
4. परिवर्तन सरलता से किया जा सकता है।	4. परिवर्तन करने में समय लगता है।
5. उदाहरण—संवाद करना, भाषण देना।	5. उदाहरण—सूचनापट, पुस्तकें।

भाषा और बोली

बोली भाषा का आरंभिक रूप है। बोली एक छोटे-से क्षेत्र में बोली जाती है। थोड़े-थोड़े स्थान के अंतर पर बोली के स्वरूप में परिवर्तन आ जाता है। हरियाणवी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, खड़ी बोली आदि बोलियाँ हैं। बोली में किसी साहित्य की रचना नहीं होती। परंतु, जब किसी बोली में साहित्य की रचना आरंभ हो जाती है तथा उसका स्वरूप विकसित हो जाता है, तब बोली भाषा का रूप ले लेती है। हिंदी भाषा खड़ी बोली का ही विकसित रूप है।

मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा

मातृभाषा वह भाषा होती है, जिसे बच्चा अपनी माँ और अपने परिवार से सीखता है। इसे सीखने के लिए उसे विशेष रूप से प्रयास नहीं करना पड़ता।

राष्ट्रभाषा वह भाषा होती है, जो देश के एक बड़े भाग में बोली जाती है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिंदी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार,

झारखंड, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह और दिल्ली में बोली जाती है। राष्ट्रभाषा सारे देश के विचार-विनिमय का साधन होती है तथा पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है।

राजभाषा सरकारी कार्यालयों में कामकाज के लिए प्रयोग की जानेवाली भाषा होती है। हमारी राजभाषा हिंदी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था।

लिपि

लिखित भाषा में हिंदी की मूल ध्वनियों के लिए कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न वर्ण कहलाते हैं। इन वर्णों के लिखने की विधि को लिपि कहते हैं।

प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि भाषाएँ भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। उर्दू भाषा अरबी/फ़ारसी लिपि में, अंग्रेज़ी रोमन लिपि में, पंजाबी गुरुमुखी लिपि में और तमिल भाषा को तमिल लिपि में लिखा जाता है।

मौखिक ध्वनियों के लिखने की विधि लिपि कहलाती है।

सोचो और बताओ

इन भाषाओं की लिपि कौन-सी है?

बांगला	____________	मलयालम	____________
गुजराती	____________	असमी	____________
कन्नड	____________	तेलुगु	____________
कोंकणी	____________	अंग्रेज़ी	____________

कन्नड देवनागरी गुजराती असमिया रोमन तेलुगु बांगला मलयालम

लिपि का महत्व

लिपि भाषा को स्थायी रूप देने में सहायक होती है। लिपि के द्वारा साहित्य की रचना होती है। लिपि द्वारा ही ज्ञान को आनेवाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

व्याकरण

व्याकरण का शाब्दिक अर्थ है—वि+आ+करण, अर्थात भली-भाँति समझाना। व्याकरण की सहायता से शब्दों को शुद्ध रूप में प्रयोग करना सीखते हैं तथा अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं।

जिस शास्त्र द्वारा शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमों को जाना जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

व्याकरण के विभाग

व्याकरण के मुख्य तीन विभाग हैं—1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विन्यास।

1. वर्ण-विचार में वर्णों के आकार, उच्चारण और वर्णों के मेल से बननेवाले शब्द बनाने के नियम दिए जाते हैं।
2. शब्द-विचार में शब्दों के भेद, रूपांतरण और उत्पत्ति का वर्णन किया जाता है।
3. वाक्य-विन्यास में वाक्य के प्रमुख अवयवों का परस्पर संबंध बताया जाता है।

हमने जाना

- भाषा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है।
- भाषा के प्रमुख दो रूप हैं—मौखिक भाषा और लिखित भाषा।
- मौखिक ध्वनियों के लिखने की विधि लिपि कहलाती है।
- व्याकरण हमें भाषा का शुद्ध रूप से प्रयोग करना सिखाता है।
- व्याकरण के मुख्य तीन विभाग होते हैं—वर्ण-विचार, शब्द-विचार तथा वाक्य-विन्यास।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. सरकारी कार्यालयों में कामकाज में प्रयोग की जानेवाली भाषा कौन-सी होती है?

राष्ट्रभाषा राजभाषा मातृभाषा

ख. भाषा को स्थायी रूप देने में कौन सक्षम है?

व्याकरण लिपि मौखिक भाषा

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ________ भाषा में सरलता से परिवर्तन किया जा सकता है।

ख. ________ खड़ी बोली का ही विकसित रूप है।

ग. ________ को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था।

घ. हिंदी भाषा की लिपि ________ है।

ङ. ________ भाषा को स्थायी रूप देने में सहायक होती है।

3. मौखिक भाषा → बोलकर

लिखित भाषा → लिखकर

लिखित और मौखिक भाषा के रूपों को छाँटकर सही स्थान पर लिखिए।

वाद-विवाद करना गाना गाना पत्रिका समाचार-पत्र श्यामपट पर लिखना भाषण देना

मौखिक भाषा ____________ ____________ ____________

लिखित भाषा ____________ ____________ ____________

मौखिक भाषा लिखित भाषा से किस प्रकार भिन्न है?

____

4. सही मिलान कीजिए।

क. विचारों के आदान-प्रदान का साधन	व्याकरण
ख. मौखिक ध्वनियों को लिखने की विधि	राष्ट्रभाषा
ग. देश के अधिकांश भाग में बोली जानेवाली भाषा	भाषा
घ. भाषा का शुद्ध प्रयोग सिखानेवाला शास्त्र	लिपि

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. भाषा का क्या अर्थ है? बोली और भाषा में मुख्य दो अंतर लिखें।

ख. राष्ट्रभाषा और राजभाषा में क्या अंतर है?

ग. व्याकरण से क्या अभिप्राय है? इसका क्या महत्व है?

कार्यकलाप

1. शिक्षक विद्यार्थियों से समाचार-पत्र का वाचन करवाएँगे तथा उन्हें शुद्ध रूप से मौखिक अभिव्यक्ति करना सिखाएँगे।
2. शिक्षक दस रुपये के नोट को देखने के लिए कहेंगे तथा उसपर लिखी गई भाषाओं की लिपि को पहचानने के लिए कहेंगे।

जाना-समझा

कभी-कभी हम संकेतों द्वारा भी अपनी बात कहते हैं, जिसे कुछ लोग सांकेतिक भाषा कहते हैं। परंतु, संकेतों द्वारा हम पूरी तरह से अपनी बात सार्थक रूप से स्पष्ट नहीं कर पाते। इसलिए, संकेतों को भाषा नहीं कहा जा सकता।

2 वर्ण-विचार और उच्चारण अशुद्धियाँ

वाक्य शब्द **वर्ण**

वर्ण

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, इसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते। वर्णों के मेल से शब्द तथा शब्दों के मेल से वाक्य बनते हैं, जिनके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

वर्ण—आ, आ

शब्द में प्रयुक्त वर्ण—आ + ज् + आ

वाक्य में प्रयुक्त वर्ण—आ + ज् + आ, र् + आ + ज् + आ, ब् + ए + ट् + आ

भाषा की वह सबसे छोटी इकाई, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

वर्णमाला

किसी भाषा के सभी वर्णों को जोड़कर जब उसे एक व्यवस्थित रूप दे दिया जाता है, तब उसे वर्णमाला कहते हैं। किसी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा की वर्णमाला का ज्ञान होना आवश्यक है।

वर्णमाला वर्णों का व्यवस्थित समूह होता है।

हिंदी की वर्णमाला

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है। हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है—

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार अं (ं) विसर्ग अः (:) अनुनासिक अँ (ँ)

व्यंजन

कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	→ पंचम वर्ण
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़् ढ़्
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	

अंतस्थ व्यंजन	य्	र्	ल्	व्
ऊष्म व्यंजन	श्	ष्	स्	ह्
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र
आगत ध्वनियाँ	ऑ	ज़	फ़	

हिंदी वर्णमाला में मुख्य रूप से दो प्रकार के वर्ण पाए जाते हैं—स्वर और व्यंजन।

स्वर

स्वर स्वतंत्र रूप से बोले जानेवाले वर्ण होते हैं। इन्हें बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती। ये अन्य वर्णों के उच्चारण में उनकी सहायता करते हैं। स्वरों के उच्चारण में हवा मुख में बिना रुके बाहर निकलती है। हिंदी में कुल ग्यारह स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों के भेद—

स्वर

ह्रस्व स्वर: अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों में अंतर

ह्रस्व स्वर वे स्वर होते हैं, जिनके उच्चारण में बहुत कम समय, अर्थात एक मात्रा का समय लगता है। दीर्घ स्वर वे स्वर होते हैं, जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना, अर्थात दो मात्रा का समय लगता है।

स्वरों की मात्राएँ

व्यंजनों के साथ स्वरों का प्रयोग करते समय स्वरों के स्थान पर उनके लिए निश्चित चिह्न लगाए जाते हैं, जिन्हें स्वरों की मात्राएँ कहते हैं। 'अ' को छोड़कर सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ	—	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
प्रयोग	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ

> **विशेष** 'र' के साथ 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ उसके नीचे न लगकर उसके बीच में लगती हैं।
> जैसे—रुचि, रुपया (र + उ = रु)
> रूप, अमरूद (र + ऊ = रू)

अनुस्वार (ं)

अनुस्वार का उच्चारण करते समय हवा नाक से बाहर निकलती है। पंचम वर्ण ङ्, ञ्, ण्, न्, म् के पश्चात यदि उसी वर्ग का अन्य वर्ण आए, तो पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। इसका चिह्न वर्ण के ऊपर लगी एक बिंदी होता है।

पंचम वर्ण	अनुस्वार के रूप में प्रयोग			
ङ्	अङ्क	अंक	पङ्ख	पंख
ञ्	पञ्चम	पंचम	पञ्छी	पंछी
ण्	घण्टा	घंटा	कण्ठ	कंठ
न्	अनन्त	अनंत	अन्धकार	अंधकार
म्	अम्बर	अंबर	सम्पूर्ण	संपूर्ण

विसर्ग (:)

विसर्ग का उच्चारण 'ह' की भाँति होता है। इसका चिह्न वर्ण के बाद लगे दो बिंदु (:) होते हैं। विसर्ग का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दों के साथ ही किया जाता है। हिंदी में इसका प्रयोग बहुत कम होता है; जैसे—छिः, प्रातः।

> **विशेष** अनुस्वार और विसर्ग न तो पूर्णतः स्वर होते हैं और न ही व्यंजन। इसलिए, इन्हें अयोगवाह कहते हैं। अयोगवाह का अर्थ है—जो योग न होने पर भी साथ चले।

अनुनासिक (ँ)

अनुनासिक का उच्चारण करते समय हवा नाक और मुँह दोनों से बाहर निकलती है। अनुनासिक का चिह्न है—चंद्रबिंदु। परंतु, यदि किसी शब्द के ऊपर शिरोरेखा लगी होती है, तो चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल बिंदु लगाते हैं; जैसे—ध्वनियाँ, ध्वनियों।

व्यंजन

व्यंजन वे ध्वनियाँ होती हैं, जिनके उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुख में रुककर बाहर निकलती है।

व्यंजनों को स्वर रहित दिखाने के लिए उनके नीचे एक छोटी तिरछी रेखा (्) खींची जाती है, जिसे हलंत कहते हैं; जैसे—बुद्धिमान, चिह्न।

व्यंजनों के प्रकार—

व्यंजन

स्पर्श व्यंजन | अंतस्थ व्यंजन | ऊष्म व्यंजन

स्पर्श व्यंजन

वे व्यंजन, जिनका उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के (विभिन्न स्थानों—कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ आदि) किसी-न-किसी भाग का स्पर्श करती है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। 'क' से 'म' तक के सभी व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

स्पर्श व्यंजनों को पाँच वर्गों में बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग के प्रथम वर्ण के आधार पर उस वर्ग का नाम रखा गया है।

वर्ग			वर्ण			उच्चारण का स्थान
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ

अंतस्थ व्यंजन

अंतस्थ व्यंजन उन व्यंजनों को कहते हैं, जिनका उच्चारण करते समय हमारी जीभ मुख के किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती। य, र, ल, व अंतस्थ व्यंजन हैं।

ऊष्म व्यंजन

ऊष्म व्यंजन ऐसे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण एक प्रकार की रगड़ से उत्पन्न ऊष्म वायु द्वारा होता है। अर्थात, इनका उच्चारण करते समय हवा मुख में रगड़ने से एक प्रकार की ऊष्मा उत्पन्न करती है। श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन हैं।

दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन

कुछ व्यंजन ऐसे हैं, जो दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। ऐसे व्यंजनों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

संयुक्त व्यंजन संयुक्त व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। इनकी संख्या चार है—

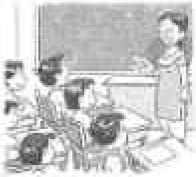

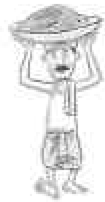

क्ष = क् + ष् + अ	त्र = त् + र् + अ	ज्ञ = ज् + ञ् + अ	श्र = श् + र् + अ
कक्षा, रक्षा	चित्र, पत्र	यज्ञ, ज्ञान	श्रमिक, श्रम

द्वित्व व्यंजन जब एक ही व्यंजन दो बार साथ-साथ प्रयोग किया जाता है, तब उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। इसमें पहला व्यंजन स्वर रहित और दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है।

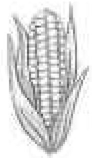

क् + क = क्क	च् + च = च्च	ट् + ट = ट्ट	त् + त = त्त
मक्का, चक्की	बच्चा, सच्चा	लट्टू, मिट्टी	कुत्ता, पत्ता

संयुक्ताक्षर जब कोई स्वर रहित व्यंजन किसी अन्य स्वर सहित व्यंजन से जुड़ता है, तब उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं; जैसे—

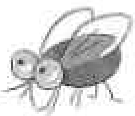

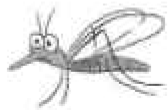

क् + ख = क्ख	प् + य = प्य	च् + छ = च्छ	स् + त = स्त
मक्खी, मक्खन	प्याज़, प्यास	मच्छर, अच्छा	पुस्तक, बस्ता

'र' के विभिन्न रूप

'र' को चार प्रकार से प्रयोग किया जाता है—

1. वर्ण के रूप में—'र' को शब्द में वर्ण के रूप में प्रयोग किया जाता है; जैसे—रजनी, रात आदि।
2. रेफ़ (र्) के रूप में—जब स्वर रहित 'र' किसी व्यंजन से पहले आता है, तब उसे रेफ़ (र्) के रूप में उस व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है, जिससे पहले उसका उच्चारण किया जाता है; जैसे—धर्म (ध + र् + म)।
3. 'र' (्र) पदेन—जब 'र' से पहले कोई स्वर रहित खड़ी पाई वाला व्यंजन होता है, तब 'र' स्वर रहित व्यंजन के नीचे एक तिरछी रेखा के रूप में लगाया जाता है।
जैसे—प्रकाश (प् + र + का + श)।
4. 'र' (्र) पदेन—जब कोई स्वर रहित व्यंजन नीचे से गोलाई लिए होता है, तब उसके नीचे 'र' (्र) का प्रयोग होता है; जैसे—ट्रक (ट् + र + क)।

आगत ध्वनियाँ

दूसरी भाषाओं से ली गई ध्वनियाँ आगत ध्वनियाँ कहलाती हैं। 'ज़', 'फ़' तथा 'ऑ' आगत ध्वनियाँ हैं। 'ज़', 'फ़' को उर्दू भाषा से तथा 'ऑ' को अंग्रेज़ी भाषा से लिया गया है। इन्हें अधिकतर उर्दू तथा अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों के साथ प्रयोग किया जाता है; जैसे—

ज़ जहाज़, ज़मीन फ़ फ़सल, बर्फ़ **ऑ** डॉक्टर, ऑफ़िस

विशेष 'ज़' तथा 'फ़' के नीचे लगे बिंदु को नुक्ता कहते हैं। नुक्ते का प्रयोग उर्दू भाषा के शब्दों में किया जाता है।

वर्ण-विच्छेद

वर्णों को मिलाकर शब्दों का निर्माण होता है। किसी शब्द के सभी वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे—

समय	स् + अ + म् + अ + य् + अ	रजत	र् + अ + ज् + अ + त् + अ
कारण	क् + आ + र् + अ + ण् + अ	वर्ण	व् + अ + र् + ण् + अ
नासिका	न् + आ + स् + इ + क् + आ	प्रयोग	प् + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ
इनकी	इ + न् + अ + क् + ई	ट्रक	ट् + र् + अ + क् + अ
जुड़ना	ज् + उ + ड़् + अ + न् + आ	कक्षा	क् + अ + क् + ष् + आ
समूह	स् + अ + म् + ऊ + ह् + अ	त्रिभुज	त् + र् + इ + भ् + उ + ज् + अ
कृपा	क् + ऋ + प् + आ	ज्ञानी	ज् + ञ् + आ + न् + ई
रेखा	र् + ए + ख् + आ	श्रमिक	श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ
मैल	म् + ऐ + ल् + अ	सज्जन	स् + अ + ज् + ज् + अ + न् + अ
बोलना	ब् + ओ + ल् + अ + न् + आ	गट्ठर	ग् + अ + ट् + ठ् + अ + र् + अ
मौखिक	म् + औ + ख् + इ + क् + अ	फ़सल	फ़् + अ + स् + अ + ल् + अ

सोचो और बताओ

अंदर ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

हँसना ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

वर्ण-संयोग

किसी शब्द के अलग किए हुए वर्णों को मिलाकर लिखना वर्ण-संयोग कहलाता है; जैसे—

आ + ग् + अ + त् + अ	आगत
स् + व् + अ + र् + अ	स्वर
अ + य् + ओ + ग् + अ + व् + आ + ह् + अ	अयोगवाह
अ + न् + उ + स् + व् + आ + र् + अ	अनुस्वार

अ + न् + उ + न् + आ + स् + इ + क् + अ	अनुनासिक
स् + प् + अ + र् + श् + अ	स्पर्श
र् + उ + प् + अ + य् + आ	रुपया
त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ	त्रिशूल

उच्चारण की अशुद्धियाँ

एक भाषा को सीखते समय हम पहले उसके वर्णों का उच्चारण, तत्पश्चात उसका लेखन सीखते हैं। हम जिन वर्णों का उच्चारण अशुद्ध रूप से करते हैं, हम निश्चित रूप से उनका लेखन भी अशुद्ध रूप से करते हैं। उच्चारण की अशुद्धियाँ मुख्य रूप से अज्ञानता, मातृभाषा के प्रभाव, स्थानीय प्रभाव आदि के कारण होती हैं। भाषा का शुद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य है कि उच्चारण-संबंधी दोषों को दूर किया जाए। इसके लिए पठन-पाठन तथा लेखन अभ्यास पर बल देना चाहिए।

उच्चारण दोष के कारण उत्पन्न अशुद्धियाँ

'अ' तथा 'आ' से संबंधित अशुद्धियाँ

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अकांक्षा	आकांक्षा	आधीन	अधीन
अज़ाद	आज़ाद	परिवारिक	पारिवारिक
अधार	आधार	प्रमाणिक	प्रामाणिक
अगामी	आगामी	अत्याधिक	अत्यधिक

'इ' तथा 'ई' से संबंधित अशुद्धियाँ

उन्नती	उन्नति	दिवार	दीवार
परिक्षा	परीक्षा	श्रीमति	श्रीमती
कवयीत्री	कवयित्री	पत्नि	पत्नी
दवाईयाँ	दवाइयाँ	बिमारी	बीमारी

'उ' तथा 'ऊ' से संबंधित अशुद्धियाँ

ऊच्च	उच्च	हिंदु	हिंदू
रुमाल	रूमाल	पुज्य	पूज्य
अमरुद	अमरूद	डाकु	डाकू
रूपया	रुपया	रुप	रूप

'ए' तथा 'ऐ' से संबंधित अशुद्धियाँ

एतिहासिक	ऐतिहासिक	ऐकता	एकता
सैना	सेना	एनक	ऐनक

'ओ' तथा 'औ' से संबंधित अशुद्धियाँ

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
त्यौहार	त्योहार	पड़ौसी	पड़ोसी
लोकिक	लौकिक	ओद्योगिक	औद्योगिक

अन्य अशुद्धियाँ

संतोश	संतोष	उज्वल	उज्ज्वल
कलस	कलश	चरन	चरण
किरन	किरण	उचारण	उच्चारण
पड़ाई	पढ़ाई	घनिष्ट	घनिष्ठ
चिन्ह	चिह्न	धुँआ	धुआँ
कयारी	क्यारी	चारदीवारी	चहारदीवारी
छमा	क्षमा	प्रसंशा	प्रशंसा
प्रशाद	प्रसाद	आर्शीवाद	आशीर्वाद
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना	पाचवाँ	पाँचवाँ
ब्राम्हन	ब्राह्मण	स्वास्थ	स्वास्थ्य
श्रृंगार	शृंगार	सन्यासी	संन्यासी
भैय्या	भैया	दुसकर	दुष्कर

हमने जाना

- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।
- वर्णमाला वर्णों का व्यवस्थित समूह होता है।
- स्वर स्वतंत्र रूप से तथा व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में कम समय तथा दीर्घ स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है।
- अनुस्वार का उच्चारण नाक से तथा अनुनासिक का उच्चारण मुँह और नाक दोनों से होता है।
- व्यंजन मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन और ऊष्म व्यंजन।
- संयुक्त व्यंजन, संयुक्ताक्षर तथा द्वित्व व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं।
- आगत ध्वनियाँ दूसरी भाषाओं से ली गई ध्वनियाँ हैं।
- किसी शब्द के सभी वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।
- किसी शब्द के अलग किए गए वर्णों को मिलाकर लिखना वर्ण-संयोग कहलाता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. भाषा की सबसे छोटी इकाई कौन-सी होती है?

   वर्ण   शब्द   वाक्य

   ख. हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या कितनी है?

   दस   ग्यारह   तैंतीस

2. स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।

   स्वरों तथा व्यंजनों को अलग करके लिखिए।

   क. विद्यार्थी ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

   ख. तपस्या ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

   ग. व्याकरण ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

   घ. व्यवस्थित ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

   ङ. उच्चारण ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

3. वे व्यंजन कौन-से होते हैं जिनके उच्चारण में–

   जिह्वा मुख के भाग का स्पर्श करती है। ____________

   जिह्वा मुख के भाग का पूरी तरह स्पर्श नहीं करती। ____________

   एक प्रकार की ऊष्मा उत्पन्न होती है। ____________

   सही मिलान कीजिए।

क. ऊष्म व्यंजन	य	र	ल	व
ख. अंतस्थ व्यंजन	च	छ	ज	झ
ग. स्पर्श व्यंजन	श	ष	स	ह

4. दिए गए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए।

   क. अधार ____________   **ख.** परिवारिक ____________

   ग. दवाईयाँ ____________   घ. रूपया ____________

ङ. त्यौहार ____________ च. घनिष्ट ____________

छ. आर्शीवाद ____________ ज. सन्यासी ____________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अनुस्वार और अनुनासिक में क्या अंतर है?

ख. हलंत किसे कहते हैं? इसका प्रयोग क्यों किया जाता है?

ग. 'र' का प्रयोग कितने रूपों में किया जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

घ. संयुक्त व्यंजनों तथा संयुक्ताक्षरों में अंतर उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

हिंदी वर्णमाला के वर्ण उलट-पुलट गए हैं। इन्हें सही स्थान पर लिखिए।

स्वर	आ इ अ ई ऊ उ ऋ ऐ ए औ ओ						स्वर		
अनुस्वार	अः	अनुनासिक	अँ	विसर्ग	अं		अनुस्वार	अनुनासिक	विसर्ग
व्यंजन	**कवर्ग**	क	ग	ख	ङ	घ	व्यंजन	**कवर्ग**	
	चवर्ग	ज	च	छ	झ	ञ		**चवर्ग**	
	टवर्ग	ट	ठ	ड	ण	ढ		**टवर्ग**	
	तवर्ग	द	त	थ	ध	न		**तवर्ग**	
	पवर्ग	प	भ	म	फ	ब		**पवर्ग**	
अंतस्थ व्यंजन		श	ष	स	ह		अंतस्थ व्यंजन		
ऊष्म व्यंजन		य	र	ल	व		ऊष्म व्यंजन		
संयुक्त व्यंजन		ऑ	ज़	फ़			संयुक्त व्यंजन		
आगत ध्वनियाँ		क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		आगत ध्वनियाँ		

जाना-समझा

स्वरों के तीन भेद माने जाते हैं—ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर तथा प्लुत स्वर। प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से तीन गुना समय लगता है। इसका प्रयोग करते समय ३ का अंक लगाया जाता है। इसका प्रयोग अधिकतर संस्कृत शब्दों में होता है।
जैसे—ओ३म।

3 संधि

संधि का अर्थ होता है—मेल। संधि दो वर्णों के मध्य होती है। इसमें पहले शब्द का अंतिम वर्ण तथा दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर एक भिन्न वर्ण बन जाते हैं।

जैसे—दीप + अवली	(दो शब्द)
द् + ई + प् + अ	(प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण)
अ + व् + अ + ल् + ई	(दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण)
द् + ई + प् + अ अ + व् + अ + ल् + ई	(दो वर्णों का मेल)
अ + अ = आ	(नया वर्ण)

दो निकटवर्ती वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।

संधि-विच्छेद

संधि किए हुए शब्दों को पुनः अलग करके लिखना संधि-विच्छेद कहलाता है।

संधि दीप + अवली = दीपावली

संधि-विच्छेद दीपावली = दीप + अवली

संधि के भेद

संधि के प्रमुख तीन भेद हैं—स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।

स्वर संधि

दो स्वरों के मध्य होनेवाली संधि स्वर संधि कहलाती है।

जैसे—हिम + आलय = हिमालय
(अ + आ)

स्वर संधि के भेद

स्वर संधि के पाँच भेद हैं—1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण संधि 5. अयादि संधि।

1. दीर्घ संधि

जब किसी स्वर के बाद सजातीय स्वर आता है, तब दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

अ — आ	इ — ई	उ — ऊ
आ	ई	ऊ

'अ' तथा 'आ' की संधि

अ + अ = आ	सूर्य	+ अस्त	=	सूर्यास्त	मत	+ अनुसार	=	मतानुसार
	परम	+ अर्थ	=	परमार्थ	स्व	+ अर्थ	=	स्वार्थ
अ + आ = आ	रत्न	+ आकर	=	रत्नाकर	धर्म	+ आत्मा	=	धर्मात्मा
	पुस्तक	+ आलय	=	पुस्तकालय	शिष्ट	+ आचार	=	शिष्टाचार
आ + अ = आ	विद्या	+ अभ्यास	=	विद्याभ्यास	विद्या	+ अर्थी	=	विद्यार्थी
	रेखा	+ अंश	=	रेखांश	यथा	+ अर्थ	=	यथार्थ
आ + आ = आ	विद्या	+ आलय	=	विद्यालय	वार्ता	+ आलाप	=	वार्तालाप
	महा	+ आशय	=	महाशय	राजा	+ आज्ञा	=	राजाज्ञा

'इ' तथा 'ई' की संधि

इ + इ = ई	गिरि	+ इंद्र	=	गिरींद्र	रवि	+ इंद्र	=	रवींद्र
	अभि	+ इष्ट	=	अभीष्ट	मुनि	+ इंद्र	=	मुनींद्र
इ + ई = ई	कपि	+ ईश	=	कपीश	कवि	+ ईश्वर	=	कवीश्वर
	गिरि	+ ईश	=	गिरीश	प्रति	+ ईक्षा	=	प्रतीक्षा
ई + इ = ई	मही	+ इंद्र	=	महींद्र	नारी	+ इच्छा	=	नारीच्छा
	शची	+ इंद्र	=	शचींद्र	रजनी	+ इंदु	=	रजनींदु
ई + ई = ई	सती	+ ईश	=	सतीश	रजनी	+ ईश	=	रजनीश
	पृथ्वी	+ ईश	=	पृथ्वीश	नारी	+ ईश्वर	=	नारीश्वर

'उ' तथा 'ऊ' की संधि

उ + उ = ऊ	गुरु	+ उपदेश	=	गुरूपदेश	भानु	+ उदय	=	भानूदय
	लघु	+ उत्तर	=	लघूत्तर	सु	+ उक्ति	=	सूक्ति

उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि		लघु + ऊर्मि = लघूर्मि	
	साधु + ऊर्जा = साधूर्जा		भानु + ऊर्जा = भानूर्जा	
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव		वधू + उपदेश = वधूपदेश	
	भू + उद्धार = भूद्धार		स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय	
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्जित = भूर्जित		वधू + ऊर्जा = वधूर्जा	
	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि		भू + ऊष्मा = भूष्मा	

सोचो और बताओ

देव + आलय ________________ हरि + ईश ________________

2. गुण संधि

गुण संधि में स्वरों के मेल से इस प्रकार परिवर्तन होता है—

अ/आ + इ/ई = ए   अ/आ + उ/ऊ = ओ   अ/आ + ऋ = अर्

अ + इ = ए	देव + इंद्र = देवेंद्र	स्व + इच्छा = स्वेच्छा
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश	सुर + ईश = सुरेश
आ + इ = ए	महा + इंद्र = महेंद्र	राजा + इंद्र = राजेंद्र
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश	राका + ईश = राकेश
अ + उ = ओ	चंद्र + उदय = चंद्रोदय	पर + उपकार = परोपकार
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि	जल + ऊर्मि = जलोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव	यथा + उचित = यथोचित
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि	महा + ऊर्मि = महोर्मि
अ + ऋ = अर्	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	ब्रह्मा + ऋषि = ब्रह्मर्षि	राजा + ऋषि = राजर्षि

3. वृद्धि संधि

वृद्धि संधि में स्वरों के मेल से इस प्रकार परिवर्तन होता है—

अ/आ + ए/ऐ = ऐ   अ/आ + ओ/औ = औ

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक	हित + एषी = हितैषी
अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य	नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य

आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव	तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य	राजा + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य
अ + ओ = औ	जल + ओघ = जलौघ	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी
अ + औ = औ	परम + औषध = परमौषध	वन + औषध = वनौषध
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी	महा + ओज = महौज
आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध	महा + औदार्य = महौदार्य

सोचो और बताओ

नर + इंद्र ________ महा + औघ ________

4. यण संधि

यण संधि में इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर इस प्रकार परिवर्तन होता है—

इ, ई + भिन्न स्वर	उ, ऊ + भिन्न स्वर	ऋ + भिन्न स्वर
य	व	र

इ, ई + अ = य	यदि + अपि = यद्यपि	नदी + अर्पण = नद्यर्पण
इ, ई + आ = या	इति + आदि = इत्यादि	देवी + आगम = देव्यागम
इ, ई + उ = यु	अति + उत्तम = अत्युत्तम	सखी + उचित = सख्युचित
इ, ई + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून	नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि
उ + अ = व	मनु + अंतर = मन्वंतर	सु + अल्प = स्वल्प
उ/ऊ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत	वधू + आगमन = वध्वागमन
उ + इ/ए = वि/वे	अनु + इत = अन्वित	अनु + एषण = अन्वेषण
ऋ + अ/आ = र/रा	पितृ + अनुमति = पित्रनुमति	मातृ + आनंद = मात्रानंद

5. अयादि संधि

अयादि संधि में ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद भिन्न स्वर आने पर इस प्रकार परिवर्तन होता है—

ए,	ऐ,	ओ,	औ + भिन्न स्वर
अय्	आय्	अव्	आव्

ए + अ = अय्	ने + अन = नयन	शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय्	नै + अक = नायक	गै + अक = गायक
ओ + अ = अव्	पो + अन = पवन	श्रो + अन = श्रवण
औ + अ = आव्	पौ + अन = पावन	पौ + अक = पावक

व्यंजन संधि

किसी व्यंजन के स्वर अथवा व्यंजन से मेल होने पर उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।

व्यंजन + स्वर

जगत्	+ ईश	= जगदीश	सत्	+ आचार	= सदाचार
षट्	+ आनन	= षडानन	दिक्	+ अंबर	= दिगंबर
स्व	+ छंद	= स्वच्छंद	उत्	+ आहरण	= उदाहरण
अनु	+ छेद	= अनुच्छेद	राम	+ अयन	= रामायण

व्यंजन + व्यंजन

वाक्	+ मय	= वाङ्मय	दिक्	+ गज	= दिग्गज
जगत्	+ नाथ	= जगन्नाथ	सम्	+ गम	= संगम
उत्	+ लास	= उल्लास	उत्	+ हार	= उद्धार
सत्	+ जन	= सज्जन	सम्	+ मति	= सम्मति

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वरों अथवा व्यंजनों के मेल से उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाता है।

निः	+ चय	= निश्चय	निः	+ छल	= निश्छल
निः	+ कपट	= निष्कपट	मनः	+ हर	= मनोहर
नमः	+ कार	= नमस्कार	दुः	+ गंध	= दुर्गंध
सरः	+ ज	= सरोज	मनः	+ योग	= मनोयोग

टिप्पणी विद्यार्थी व्यंजन तथा विसर्ग संधि के बारे में अगली कक्षाओं में विस्तार से पढ़ेंगे।

हमने जाना

- दो निकटवर्ती वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।
- संधि किए गए शब्दों को पुनः अलग करके लिखना संधि-विच्छेद कहलाता है।
- संधि के प्रमुख तीन भेद हैं—स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।
- स्वर संधि दो स्वरों के मध्य होती है। इसके प्रमुख पाँच भेद हैं—दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि और अयादि संधि।
- किसी व्यंजन के स्वर अथवा व्यंजन से मेल होने पर उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।
- विसर्ग संधि में विसर्ग के साथ स्वरों अथवा व्यंजनों के मेल से विकार उत्पन्न होता है।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. दो निकटवर्ती वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को क्या कहते हैं?

   संधि समास वर्ण-मेल

   ख. दो स्वरों के मध्य होनेवाली संधि क्या कहलाती है?

   स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि

   ग. 'विद्यालय' शब्द किस प्रकार की संधि का उदाहरण है?

   यण संधि अयादि संधि दीर्घ संधि

2. स्व + अर्थ = स्वार्थ   गिरि + इंद्र = गिरींद्र

   अ/आ + अ/आ = आ   इ/ई + इ/ई = ई

   संधि करके लिखिए।

   क. धर्म + आत्मा ________   ख. प्रति + ईक्षा ________

   ग. महा + आशय ________   घ. रजनी + ईश ________

   ङ. विद्या + अर्थी ________   च. सती + ईश ________

   छ. पुस्तक + आलय ________   **ज.** मुनि + इंद्र ________

3. **संधि कीजिए।**

   अ/आ + इ/ई = ए   अ/आ + उ/ऊ = ओ

   क. देव + इंद्र ________   ख. चंद्र + उदय ________

   ग. राजा + इंद्र ________   घ. पर + उपकार ________

   ङ. स्व + इच्छा ________   **च.** महा + उत्सव ________

   छ. राका + ईश ________   ज. यथा + उचित ________

4. संधि-विच्छेद कीजिए।

   क. शिष्टाचार — शिष्ट + आचार   ख. रेखांश ________ + ________

   ग. रवींद्र ________ + ________   घ. कवीश्वर ________ + ________

ङ. सूक्ति ________ + ________ च. लघूत्तर ________ + ________

छ. गणेश ________ + ________ ज. सप्तर्षि ________ + ________

झ. एकैक ________ + ________ ञ. इत्यादि ________ + ________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संधि किसे कहते हैं?

ख. स्वर संधि तथा व्यंजन संधि में क्या अंतर है?

ग. यण संधि तथा अयादि संधि में क्या भिन्नता है?

घ. संधि तथा संधि-विच्छेद के अंतर को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए तालिका पूरी कीजिए।

रेखांश मतैक्य इत्यादि रजनीश स्वेच्छा स्वागत स्वल्प

मात्रानंद कपीश पवन जलौघ गायक गणेश नयन

यथोचित एकैक प्रतीक्षा महोत्सव परमौषध पावक

दीर्घ संधि	वृद्धि संधि	गुण संधि	यण संधि	अयादि संधि

जाना-समझा

श्रो + अन की संधि श्रवण होती है। पद में 'र' होने के कारण 'न' का 'ण' हो जाता है।

4 शब्द-विचार

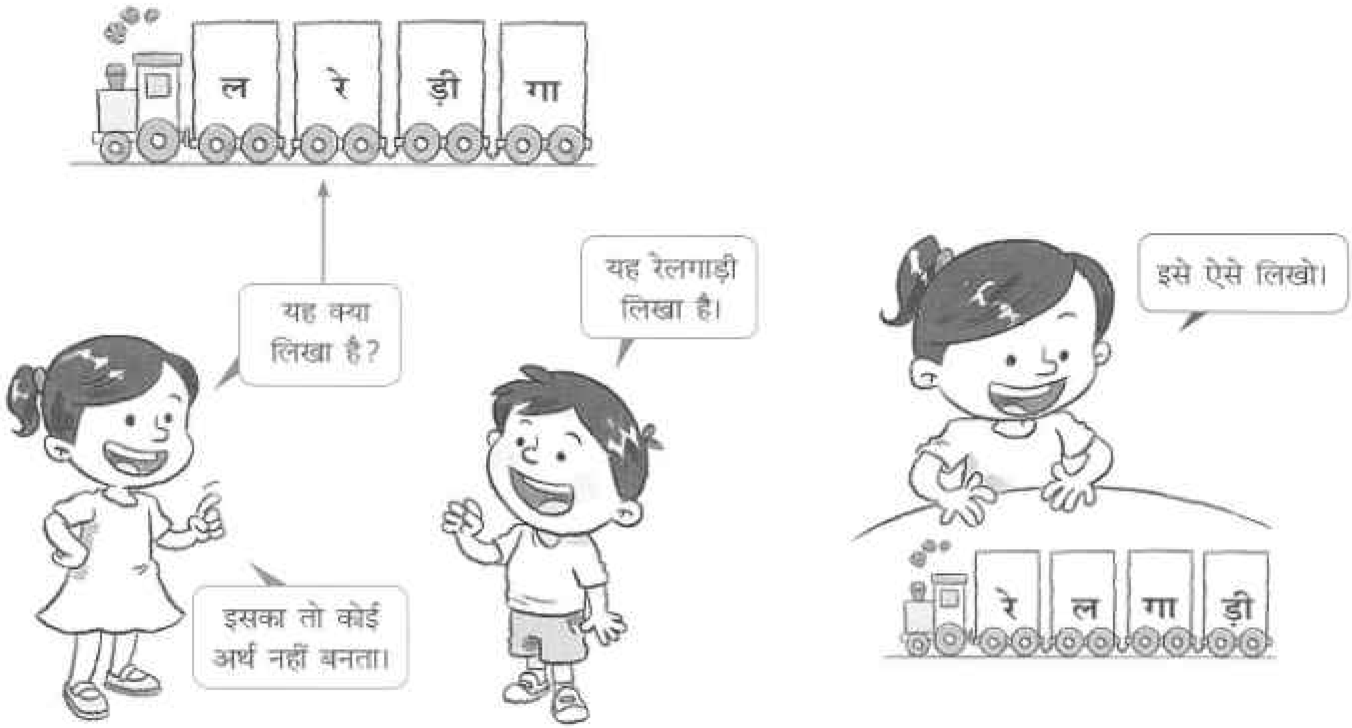

जब वर्ण एक निश्चित क्रम में लिखे जाते हैं और उनका कोई अर्थ निकलता है, तब उन्हें शब्द कहा जाता है। पहले चित्र में रेलगाड़ी के डिब्बों पर लिखे वर्ण न तो एक निश्चित क्रम में हैं और न ही उनका कोई अर्थ है। उन्हें शब्द नहीं कह सकते। दूसरे चित्र में वर्ण एक निश्चित क्रम में हैं तथा उनका एक निश्चित अर्थ है, इसलिए वे शब्द कहे जा सकते हैं।

एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र तथा सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों को चार आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है—

1. अर्थ के आधार पर
2. उत्पत्ति के आधार पर
3. रचना के आधार पर
4. रूपांतर के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं—सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द।

सार्थक शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जिनका कोई अर्थ निकलता है।

निरर्थक शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता। पाठ के आरंभ में दिए पहले चित्र में लिखा शब्द 'लरेड़ीगा' निरर्थक तथा दूसरे चित्र में लिखा शब्द 'रेलगाड़ी' सार्थक शब्द है।

सोचो और बताओ

इनमें से कौन-सा शब्द सार्थक है और कौन-सा निरर्थक?

चाय-वाय ____________ ____________

रोटी-वोटी ____________ ____________

सार्थक शब्दों के भेदों (पर्यायवाची, विलोम शब्द, अनेकार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द और अनेक शब्दों के लिए एक शब्द) के बारे में हम अगले अध्यायों में विस्तार से पढ़ेंगे।

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद

उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं—तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज।

तत्सम शब्द का अर्थ है—तत् (उसके, अर्थात संस्कृत के), सम अर्थात समान। ऐसे शब्द, जो संस्कृत भाषा के शब्द हैं तथा हिंदी में वे अपने मूल रूप में प्रचलित हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द का अर्थ है—तद् (उससे, अर्थात संस्कृत से), भव अर्थात उत्पन्न। ऐसे शब्द, जो संस्कृत भाषा के शब्द हैं, परंतु वे परिवर्तित रूप के साथ हिंदी में प्रचलित हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

कुछ तत्सम शब्द तथा उनके तद्भव रूप इस प्रकार हैं—

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
अग्नि	आग	अष्ट	आठ
दधि	दही	क्षीर	खीर
भ्रमर	भँवरा	जिह्वा	जीभ
शत	सौ	दुग्ध	दूध
गृह	घर	हस्त	हाथ
कार्य	काम	कर्ण	कान
रात्रि	रात	पत्र	पत्ता
नृत्य	नाच	ग्राम	गाँव
मुख	मुँह	वानर	बंदर

देशज शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। ये शब्द बोलचाल तथा

देश की ही लोकभाषाओं से लिए गए हैं। कटोरा, लोटा, डिबिया, खिड़की, तेंदुआ, ठेस, झाड़ू, थैला, लात आदि देशज शब्द हैं।

विदेशज शब्द अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में आए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं; जैसे—

फ़ारसी भाषा के शब्द गुलाब, दुकान, बाग, मोजा, खून, अंगूर, कबूतर, आसमान, आदमी आदि।

अरबी भाषा के शब्द अदालत, इंसाफ़, कानून, जुर्म, किताब, तसवीर, किराया, जुलूस, दौलत आदि।

तुर्की भाषा के शब्द तोप, बंदूक, बारूद, कुरता, कैंची, सौगात आदि।

अंग्रेज़ी भाषा के शब्द कोर्ट, स्कूल, टिकट, केक, चॉकलेट, डॉक्टर, नर्स, ऑपरेशन, पार्टी आदि।

पुर्तगाली भाषा के शब्द कमरा, बालटी, तौलिया, गमला, गोदाम, मेज़, साबुन, अचार, काजू आदि।

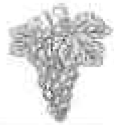

विशेष दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बने शब्द वर्णसंकर शब्द कहलाते हैं; जैसे—

टिकट (अंग्रेज़ी) + घर (हिंदी) = टिकटघर

कंपनी (अंग्रेज़ी) + बाग (फ़ारसी) = कंपनीबाग

चाल (हिंदी) + बाज़ (फ़ारसी) = चालबाज़

रेल (अंग्रेज़ी) + गाड़ी (हिंदी) = रेलगाड़ी

3. रचना के आधार पर शब्द-भेद

रचना के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार हैं—रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

रूढ़ शब्द ऐसे शब्द, जो परंपरा से ही किसी विशेष अर्थ में प्रयोग किए जा रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। रूढ़ शब्दों के यदि खंड किए जाएँ, तो उनका कोई सार्थक खंड नहीं होता;
जैसे—लोटा = लो + टा।

'लो' तथा 'टा' का कोई अर्थ नहीं है। परंतु, दोनों को जोड़कर इसका एक रूढ़ अर्थ मिलता है।

कुछ अन्य उदाहरण हैं—पत्ता, सेब, जूता, फूल।

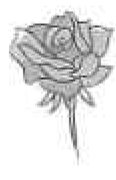

यौगिक शब्द वे शब्द, जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। यौगिक शब्द के खंड करने पर दोनों खंड सार्थक होते हैं, उनका कोई-न-कोई अर्थ निकलता है; जैसे—

विद्यालय = विद्या (शिक्षा) + आलय (घर)

रसोईघर = रसोई + घर

राष्ट्रपति = राष्ट्र + पति

घुड़सवार = घोड़ा + सवार

राजकुमार = राज + कुमार

प्रधानमंत्री = प्रधान + मंत्री

राजमहल = राज + महल

यज्ञशाला = यज्ञ + शाला

योगरूढ़ शब्द यौगिक भी होते हैं और रूढ़ भी। ऐसे शब्द, जो दो शब्दों से मिलकर बनते हैं, परंतु अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर एक विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करते हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं; जैसे—जलज = जल + ज = जल में उत्पन्न होनेवाला, अर्थात कमल।

जलज, अर्थात जल में उत्पन्न होनेवाला। परंतु, जल में उत्पन्न होनेवाली सभी चीज़ें जलज नहीं कहलातीं। व्यवहार में जलज शब्द कमल के लिए रूढ़ हो गया है। इसलिए, यह योगरूढ़ (योग + रूढ़) है। कुछ अन्य उदाहरण पढ़ें और समझें।

दशानन	दश + आनन	= रावण
नीलकंठ	नील + कंठ	= शिव
गजानन	गज + आनन	= गणेश
वीणापाणि	वीणा + पाणि	= सरस्वती

4. **रूपांतर के आधार पर शब्द-भेद**

रूपांतर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—विकारी और अविकारी।

विकारी शब्द ऐसे शब्द, जिनका रूप लिंग, वचन, कारक, काल तथा पुरुष के अनुसार बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया विकारी शब्द हैं।

अविकारी शब्द ऐसे शब्द, जिनका रूप लिंग, वचन, कारक तथा काल के अनुसार परिवर्तित नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

विशेष अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।

टिप्पणी विद्यार्थी विकारी तथा अविकारी शब्दों के बारे में आगे के अध्यायों में विस्तार से पढ़ेंगे।

हमने जाना

- एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र तथा सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।
- अर्थ, उत्पत्ति, रचना तथा रूपांतर के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण किया जाता है।
- अर्थ के आधार पर शब्द सार्थक तथा निरर्थक होते हैं।
- उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज में बाँटा जाता है।
- रचना के आधार पर शब्द रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ होते हैं।
- रूपांतर के आधार पर शब्द विकारी तथा अविकारी होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. अर्थ के आधार पर शब्द का भेद कौन-सा है?

तत्सम शब्द | रूढ़ शब्द | सार्थक शब्द

ख. कौन-सा शब्द अविकारी है?

सर्वनाम | क्रियाविशेषण | विशेषण

2. सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।

क. निरर्थक शब्दों का एक निश्चित अर्थ होता है।

ख. देशज शब्द दूसरी भाषाओं से लिए गए शब्द होते हैं।

ग. 'कैंची' उर्दू भाषा का शब्द है।

घ. रूढ़ शब्दों के सार्थक खंड नहीं होते।

ङ. योगरूढ़ शब्द अपने सामान्य अर्थ को व्यक्त करते हैं।

3. दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
क. दधि	________	ख. मुख	________
ग. गृह	________	घ. क्षीर	________
ङ. रात्रि	________	च. नृत्य	________
छ. पत्र	________	ज. भ्रमर	________

4. रचना के आधार पर रंगीन शब्दों के शब्द-भेद बताइए।

क. उसने गुस्से में मेरा जूता उठाकर छिपा दिया। ________

ख. राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम संदेश दिया। ________

ग. उपवन में जलज खिले हुए थे। ________

घ. माँ रसोईघर में कुछ बना रही हैं। ________

ङ. श्रीकृष्ण को गिरिधर भी कहते हैं। ________

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. शब्द किसे कहते हैं?

ख. विदेशज शब्द कौन-से होते हैं? उदाहरण दीजिए।

ग. योगरूढ़ शब्द किस प्रकार के शब्द होते हैं?

घ. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद बताइए।

ङ. तत्सम तथा तद्भव शब्दों के अंतर को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

च. रूढ़ तथा यौगिक शब्दों में क्या अंतर है?

छ. विकारी शब्द किस प्रकार अविकारी शब्दों से भिन्न होते हैं?

कार्यकलाप

दिए गए संकेतों की सहायता से शब्द-पहेली पूरी कीजिए।

1. विडाल जाति का जीव (देशज शब्द)
2. खाना बनाने के लिए आवश्यक (तद्भव शब्द)
3. पौधा उगाने का पात्र (विदेशज शब्द)
4. पैर का पर्यायवाची शब्द (देशज शब्द)
5. चित्र का पर्यायवाची शब्द (विदेशज शब्द)
6. प्रस्तर का तद्भव रूप (तद्भव शब्द)
7. पौधे का एक भाग (तत्सम शब्द)

जाना-समझा

शब्द जब वाक्य में प्रयोग किए जाते हैं, तब उन्हें पद कहते हैं। पद बनने पर शब्द व्याकरण के नियमों से बँध जाते हैं, अर्थात लिंग, वचन, कारक, वाच्य आदि के कारण शब्दों का रूप बदल जाता है।

5 पर्यायवाची शब्द

बच्चों द्वारा बोले जानेवाले शब्द वृक्ष, पेड़ तथा तरु समान अर्थ को व्यक्त कर रहे हैं।

समान अर्थ को व्यक्त करनेवाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

कुछ पर्यायवाची शब्द इस प्रकार हैं—

1.	अँधेरा	अंधकार, तिमिर, तम
2.	अग्नि	अनल, आग, ज्वाला
3.	अभिमान	अहंकार, गर्व, दर्प
4.	अमृत	सुधा, पीयूष, सोम
5.	अरण्य	जंगल, वन, कानन
6.	अश्व	हय, तुरंग, घोड़ा
7.	आँख	दृग, नेत्र, नयन
8.	आसमान	गगन, नभ, आकाश
9.	आनंद	उल्लास, खुशी, हर्ष
10.	इच्छा	कामना, चाह, अभिलाषा
11.	उपवन	वाटिका, उद्यान, बगीचा
12.	कमल	सरोज, पंकज, जलज
13.	किरण	अंशु, कर, रश्मि

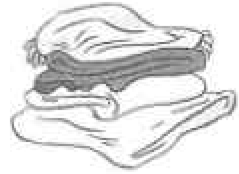

14. किनारा — तट, कूल, तीर
15. गंगा — सुरसरि, देवनदी, भागीरथी
16. गौ — गाय, धेनु, सुरभि
17. घर — गृह, भवन, निकेत
18. चतुर — कुशल, दक्ष, निपुण
19. चंद्र — शशि, राकेश, मयंक
20. जल — वारि, तोय, नीर
21. झंडा — ध्वज, पताका, केतु
22. तलवार — खड्ग, असि, कृपाण
23. तालाब — जलाशय, सरोवर, सर
24. देवता — सुर, अमर, देव
25. दुनिया — विश्व, संसार, जगत
26. धन — वित्त, संपदा, संपत्ति
27. नदी — तरंगिणी, सरिता, तटिनी
28. पक्षी — नभचर, विहग, पंछी
29. पर्वत — भूधर, गिरि, नग
30. पवन — अनिल, समीर, वायु
31. पृथ्वी — धरती, धरा, मही
32. पुत्र — सुत, बेटा, आत्मज
33. पुत्री — सुता, बेटी, आत्मजा
34. पुष्प — फूल, कुसुम, सुमन
35. बादल — जलद, जलधर, मेघ
36. बिजली — तड़ित, दामिनी, चपला
37. मधुकर — मधुप, भँवरा, भ्रमर
38. माता — माँ, जननी, धात्री
39. मित्र — सखा, दोस्त, मीत
40. राजा — नृप, नरेश, भूपति
41. रात — यामिनी, रजनी, विभावरी
42. शत्रु — अरि, रिपु, वैरी
43. समुद्र — जलधि, रत्नाकर, सागर
44. सरस्वती — वीणापाणि, शारदा, गिरा
45. साँप — नाग, सर्प, भुजंग

मछली
मत्स्य

मकर
मीन

नौका
डोंगी
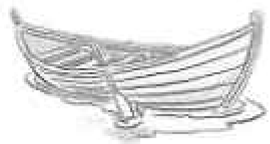
तरणी
नाव

मोर
मयूर

केकी
सारंग

46. सिंह वनराज, केसरी, शेर
47. सोना कंचन, कनक, स्वर्ण
48. हाथ हस्त, कर, पाणि
49. हाथी कुंजर, गज, हस्ती
50. हृदय उर, हिय, वक्ष

हमने जाना

- पर्यायवाची शब्द समान अर्थ को व्यक्त करते हैं।
- पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्द भी कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'मधुकर' का पर्यायवाची शब्द कौन-सा है?

मधुर मधुप मधुबन

ख. 'सुरसरि' किसका पर्यायवाची शब्द है?

नदी गंगा यमुना

2. रंगीन शब्दों के समानार्थक रूप पर गोला लगाइए।

क. बादल	जलद	अनल	भूधर	विहग
ख. रात	तरिणी	तरंगिणी	यामिनी	रमणी
ग. समुद्र	जलधर	नग	रत्नाकर	सुर
घ. बिजली	दामिनी	पताका	केतु	निकेतन
ङ. अरण्य	तिमिर	कानन	तुरंग	तरंग

3. **प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवाची रूप लिखिए।**

क. अभिमान ______ ______ ख. अश्व ______ ______

ग. आनंद ______ ______ घ. किरण ______ ______

ङ. घर ______ ______ च. चतुर ______ ______

छ. धन ______ ______ ज. जल ______ ______

झ. पुष्प ______ ______ ञ. सरस्वती ______ ______

4. दिए गए वाक्यों में आए रंगीन शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची रूप का प्रयोग करते हुए वाक्य दोबारा लिखिए।

क. राजा अश्व पर सवार होकर चल पड़ा। ______

ख. उसने अपने नेत्र बंद किए तथा कुछ सोचने लगा। ______

ग. उसे सामने देख मेरे हर्ष का पारावार न था। ______

घ. नाविक ने किनारे पर नौका को बाँध दिया। ______

ङ. प्रातः होते ही पंछी चहचहाने लगे। ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?

ख. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची रूप लिखिए।

झंडा, राजा, शत्रु, हाथी, हृदय

कार्यकलाप

पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते हुए वर्ग-पहेली पूरी कीजिए।

संकेत

ऊपर से नीचे	बाएँ से दाएँ
1. गौ	2. इच्छा
4. प्रसन्नता	3. तालाब
6. सोना	5. वित्त
8. सोम	7. आकाश
9. माँ	10. नदी

	1	4	5	
3				6
2 8				
	7		9	
10				

जाना-समझा

पर्यायवाची शब्द भाषा को समृद्ध बनाते हैं। इनके अर्थ में समानता होते हुए भी इनका प्रयोग सभी स्थानों पर एक-सा नहीं होता। स्थान तथा स्थिति के अनुसार पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

जैसे—हमें नारी का सम्मान करना चाहिए।

धोबी की स्त्री ने सभी कपड़े धो दिए।

6 विलोम शब्द

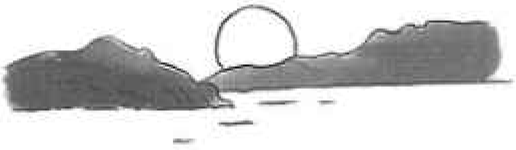

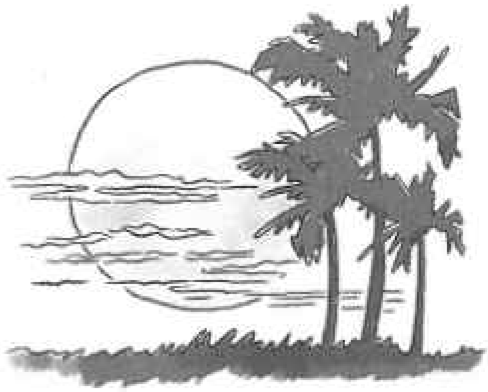

उदय	अस्त
सूर्योदय	सूर्यास्त
उदयाचल	अस्ताचल
प्रातः	संध्या

ये सभी शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ बता रहे हैं। ऐसे शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

किसी शब्द का उलटा अर्थ बतानेवाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

विलोम शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1.	अग्रज	अनुज	13.	आस्तिक	नास्तिक
2.	अर्थ	अनर्थ	14.	आकाश	पाताल
3.	अधिकतम	न्यूनतम	15.	आजादी	गुलामी
4.	अंधकार	प्रकाश	16.	आदान	प्रदान
5.	अनाथ	सनाथ	17.	आय	व्यय
6.	अनुकूल	प्रतिकूल	18.	आयात	निर्यात
7.	अंत	आदि	19.	आवश्यक	अनावश्यक
8.	अपना	पराया	20.	आशा	निराशा
9.	अपमान	सम्मान	21.	आस्था	अनास्था
10.	अल्पायु	दीर्घायु	22.	उचित	अनुचित
11.	अनिवार्य	ऐच्छिक	23.	उत्तीर्ण	अनुतीर्ण
12.	अच्छा	बुरा	24.	उत्थान	पतन

25. उदार	अनुदार	36. दुर्लभ	सुलभ
26. उपयुक्त	अनुपयुक्त	37. धर्म	अधर्म
27. एकता	अनेकता	38. प्रशंसा	निंदा
28. कठिन	सरल	39. यश	अपयश
29. कर्कश	मधुर	40. विष	अमृत
30. क्षमा	दंड	41. सदुपयोग	दुरुपयोग
31. जड़	चेतन	42. सम	विषम
32. जय	पराजय	43. सार्थक	निरर्थक
33. जन्म	मृत्यु	44. हर्ष	विषाद
34. जीवन	मरण	45. हँसना	रोना
35. ज्ञान	अज्ञान	46. हित	अहित

हमने जाना

- विलोम शब्द विपरीत अर्थ देते हैं।
- विलोम शब्द को विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आदान' का विलोम रूप क्या है?

प्रदान   निदान   विदान

ख. 'जय' का विलोम रूप क्या है?

विजय   पराजय   सजय

2. रंगीन शब्दों के विलोम रूप पर गोला लगाइए।

क. अंधकार	प्रकाश	अँधेरा	तम
ख. सदुपयोग	उपयोग	दुरुपयोग	अतिउपयोग
ग. धर्म	सधर्म	अधर्म	विधर्म
घ. सार्थक	कृतार्थ	कृतघ्न	निरर्थक
ङ. कर्कश	कठोर	मधुर	कुटिल

3. 'अ' वर्ण जोड़कर विलोम शब्द बनाइए।

क. स्वस्थ ______ अस्वस्थ ______ ख. ज्ञान ______

ग. धर्म ______ घ. हित ______

ङ. ज्ञात ______ च. पूर्ण ______

छ. हिंसा ______ ज. लौकिक ______

4. रंगीन शब्दों के विलोम रूप द्वारा रिक्त स्थानों को भरिए।

क. बाज़ार में प्रत्येक वस्तु के न्यूनतम मूल्य के स्थान पर ______ मूल्य लिया जाता है।

ख. प्रत्येक वस्तु का ______ करें, दुरुपयोग नहीं।

ग. राजा ने दंड देने के स्थान पर उसे ______ कर दिया।

घ. दोनों भाइयों के विचारों में आकाश- ______ का अंतर है।

ङ. परीक्षा में सभी विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए, कोई ______ नहीं हुआ।

5. **विलोम शब्दों के सही जोड़े पर ✓ तथा गलत जोड़े पर × लगाकर उसे सही करके लिखिए।**

क. आस्तिक	×	नास्तिक	ख. आशा	×	प्रत्याशा
ग. कठिन	×	मुश्किल	घ. उदार	×	अनुदार
ङ. एकता	×	अनेकता	च. विष	×	ज़हर
छ. यश	×	अपयश	ज. सार्थक	×	आर्थक
झ. प्रतिकूल	×	अनुकूल	ञ. सम	×	विषम

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. विलोम शब्द किसे कहते हैं?

ख. विलोम शब्दों को स्पष्ट करते हुए चार उदाहरण दीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए विलोम शब्दों के जोड़े का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

अग्रज अनुज अनाथ सनाथ आय व्यय आस्था अनास्था जड़ चेतन

जाना-समझा

संज्ञा शब्द का विलोम शब्द संज्ञा ही होता है और विशेषण शब्द का विलोम विशेषण ही होता है।

7 अनेकार्थक शब्द

लड़की का पत्र कहने से अभिप्राय चिट्ठी से था। परंतु, पत्र के अन्य अर्थ पत्ता और पंख भी होते हैं। जिस शब्द के अनेक अर्थ हों, उसे अनेकार्थक शब्द कहते हैं। अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग प्रसंग के अनुसार करना चाहिए।

एक से अधिक अर्थ का बोध करानेवाले शब्द अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं।

कुछ अनेकार्थक शब्दों के उदाहरण पढ़िए।

1. अंक — गोद, चिह्न, संख्या
2. अर्थ — धन, अभिप्राय, प्रयोजन
3. अक्षर — वर्ण, शब्द, अविनाशी
4. अंबर — आकाश, वस्त्र, केसर
5. आम — फल, साधारण, मामूली
6. उत्तर — जवाब, एक दिशा विशेष, बदला
7. कर — किरण, हाथ, सूँड़
8. कल — आनेवाला दिन, बीता हुआ दिन, मशीन
9. कनक — सोना, धतूरा, गेहूँ
10. काल — मृत्यु, समय, यमराज
11. कुल — वंश, सब, आवास
12. गुण — स्वभाव, रस्सी, धर्म
13. गुरु — शिक्षक, भार, ग्रह विशेष
14. गति — चाल, हालत, मोक्ष
15. घन — बादल, अधिक, हथौड़ा
16. घट — देह, हृदय, घड़ा
17. फल — नतीजा, पेड़ का फल, संतान
18. मित्र — दोस्त, सूर्य, प्रिय
19. मत — नहीं, वोट, राय
20. मुद्रा — सिक्का, मुहर, अँगूठी
21. योग — युक्ति, उपाय, जोड़ना
22. रस — स्वाद, सार, आनंद
23. लाल — लाल रंग, पुत्र, एक रत्न
24. वर्ण — जाति, अक्षर, रंग

25. वार दिन, प्रहार, दाँव
26. विधि कानून, तरीका, ब्रह्मा
27. सर तालाब, सिर, पराजित
28. सोना स्वर्ण, शयन, नींद
29. हरि विष्णु, सर्प, सिंह
30. हार माला, पराजय, युद्ध

हमने जाना

- अनेकार्थक शब्द एक से अधिक अर्थ का बोध कराते हैं।
- इनका प्रयोग प्रसंग के अनुरूप करना चाहिए।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'दीवार पर मत लिखो' वाक्य में 'मत' शब्द का क्या अर्थ है?

नहीं वोट राय

ख. 'खेतों में कनक लहरा उठी' वाक्य में 'कनक' शब्द का क्या अर्थ है?

धतूरा सोना गेहूँ

2. **दिए गए शब्दों को उनके अर्थ के अनुसार वाक्य में प्रयोग कीजिए।**

क. घन (हथौड़ा) ______________________________

घन (बादल) ______________________________

ख. योग (जोड़ना) ______________________________

योग (उपाय) ______________________________

ग. लाल (रंग) ______________________________

लाल (पुत्र) ______________________________

घ. वार (दिन) ______________________________

वार (प्रहार) ______________________________

ङ. सोना (स्वर्ण) ______________________________

सोना (शयन) ______________________________

3. दिए गए शब्दों के दो-दो अनेकार्थक रूप लिखिए।

क. हरि ________ ________ ख. कुल ________ ________

ग. हार ________ ________ घ. विधि ________ ________

ङ. मुद्रा ________ ________ च. फल ________ ________

4. रंगीन शब्दों के सही अर्थ लिखिए।

क. आपकी बात का अर्थ मुझे समझ नहीं आया। ________________

ख. आम बहुत स्वादिष्ट है। ________________

ग. ईश्वर तो हर घट में विद्यमान हैं। ________________

घ. मुझे नाटक का रस लेने दीजिए। ________________

ङ. शत्रु ने सैनिक की पीठ पर वार किया। ________________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अनेकार्थक शब्द किसे कहते हैं?

ख. दिए गए शब्दों के भिन्न अर्थ बताते हुए दो-दो वाक्य बनाइए।
अंक, अक्षर, उत्तर

कार्यकलाप

'कनक' शब्द के तीन अर्थ प्रदर्शित करते हुए चित्र बनाइए।

जाना-समझा

अनेकार्थक शब्दों के अर्थ वाक्य में प्रसंग के अनुरूप परिवर्तित हो जाते हैं।

8 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

द्वीप

दीप

नीर

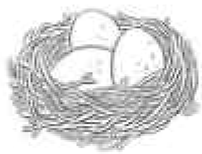

नीड़

उपर्युक्त शब्दों को पढ़िए। ये शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं, परंतु इनके अर्थ भिन्न हैं। ऐसे शब्द श्रुति (सुनने में), सम (समान), भिन्न (अलग), आर्थक (अर्थ देनेवाले), अर्थात श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

> ऐसे शब्द, जो सुनने में समान लगें, परंतु भिन्न अर्थ दें, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

कुछ श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द इस प्रकार हैं–

1. अनु — पीछे
   अणु — कण
2. अंश — भाग, खंड
   अंस — कंधा
3. अन्न — अनाज
   अन्य — दूसरा
4. अपेक्षा — इच्छा
   उपेक्षा — अनादर
5. अनल — आग
   अनिल — हवा
6. अवधि — समय
   अवधी — अवध क्षेत्र की भाषा
7. अवलंब — सहारा
   अविलंब — शीघ्र
8. असमान — जो बराबर न हो
   आसमान — आकाश
9. अपकार — बुरा करना
   उपकार — भला करना
10. आदि — आरंभ
    आदी — अभ्यस्त
11. ओर — तरफ़
    और — तथा
12. क्रम — सिलसिला
    कर्म — कार्य

13.	कलि	कलियुग
	कली	अधखिला फूल
14.	कुल	सब, वंश
	कूल	किनारा
15.	गज	हाथी
	गज़	लंबाई नापने की एक माप
16.	गृह	घर
	ग्रह	नक्षत्र
17.	जरा	वृद्धावस्था
	ज़रा	थोड़ा
18.	तरंग	लहर
	तुरंग	घोड़ा
19.	तरणी	नौका
	तरणि	सूर्य
20.	दशा	अवस्था
	दिशा	तरफ़
21.	दिन	दिवस
	दीन	दरिद्र
22.	निधन	मृत्यु
	निर्धन	गरीब
23.	पवन	हवा
	पावन	पवित्र
24.	पानी	जल
	पाणि	हाथ
25.	प्रसाद	कृपा
	प्रासाद	महल
26.	बदन	शरीर
	वदन	मुख
27.	भवन	महल
	भुवन	संसार
28.	मूल	जड़
	मूल्य	कीमत
29.	मेल	मिलना
	मैल	गंदगी
30.	मांस	गोश्त
	मास	महीना
31.	शास्त्र	ग्रंथ
	शस्त्र	हथियार
32.	शाम	संध्या
	श्याम	कृष्ण/साँवला
33.	शोक	दुख
	शौक	चाव
34.	सुत	बेटा
	सूत	सारथी, धागा
35.	सामान	सामग्री
	समान	बराबर
36.	हंस	एक पक्षी
	हँस	हँसना

हमने जाना

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द सुनने में समान लगते हैं।
- इनमें अर्थगत भिन्नता होती है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'अणु' शब्द का अर्थ क्या होता है?

अन्न　　　　कण　　　　पीछे

ख. 'क्रम' शब्द का क्या अर्थ होता है?

कार्य　　　　कर्म　　　　सिलसिला

2. **रचना की दृष्टि से सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाकर उसे सही करके लिखिए।**

क. गोदाम में अन्न भरा पड़ा है।

ख. सभी वस्तुओं को कर्म से रख दो।

ग. इस वस्तु का मूल्य तीस रुपये है।

घ. मैं दीन भर काम करके थक गया।

ङ. आसमान में पक्षी उड़ रहे हैं।

3. सही विकल्प से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. आज इस कहानी का ____________ होगा। (आदि/आदी)

ख. सुबह से मेरे ____________ में दर्द हो रहा है। (अंस/अंश)

ग. हमें किसी निर्धन की ____________ नहीं करनी चाहिए। (अपेक्षा/उपेक्षा)

घ. अग्निशमन कर्मचारियों ने शीघ्र ही ____________ पर काबू पा लिया। (अनल/अनिल)

ङ. तुम्हारी कमीज़ पर ____________ लगी हुई है। (मेल/मैल)

4. वाक्य बनाकर दिए गए शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

क. कलि ____________________

कली ____________________

ख. अवधि ____________________

अवधी ____________________

ग. मास ____________________

मांस ____________________

घ. हंस ____________________

हँस ____________________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द किसे कहते हैं?

ख. अर्थगत भिन्नता दिखाते हुए शब्दों के पाँच जोड़े अर्थ सहित लिखिए।

कार्यकलाप

चित्र देखकर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए।

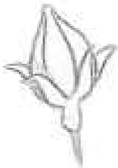

कली

कलि

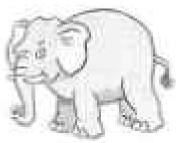

गज

गज़

प्रसाद

प्रासाद

तरणि

तरणी

आसमान

असमान

तरंग

तुरंग

जाना-समझा

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों में मात्रा या वर्ण भिन्न होता है। अर्थ की दृष्टि से इनमें सूक्ष्म अंतर होता है। इन्हें भली-भाँति न समझ पाने के कारण उच्चारण तथा लेखन में अनेक अशुद्धियाँ होती हैं।

9 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जो नृत्य करती है	(वाक्यांश)	जो बाँसुरी बजाता है	(वाक्यांश)
नर्तकी	(शब्द)	बाँसुरीवादक	(शब्द)

जब हम किसी वाक्यांश को संक्षिप्त करके एक शब्द में लिखते हैं, तब उसे 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहते हैं। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है तथा वाक्यांश अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त शब्द अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाता है।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. जो ईश्वर में विश्वास रखता है	आस्तिक
2. जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता है	नास्तिक
3. जो किए गए उपकार को मानता है	कृतज्ञ
4. जो किए गए उपकार को नहीं मानता है	कृतघ्न
5. जो बहुत बोलता है	वाचाल
6. जो कम बोलता है	मितभाषी
7. जो मधुर बोलता है	मधुरभाषी
8. जो कटु बोलता है	कटुभाषी
9. जो आसानी से उपलब्ध हो	सुलभ

10. जो आसानी से उपलब्ध न हो	दुर्लभ
11. जिसके आने की तिथि मालूम न हो	अतिथि
12. जिसके समान द्वितीय नहीं है	अद्वितीय
13. जानने की इच्छा रखनेवाला	जिज्ञासु
14. प्रतिदिन होनेवाला	दैनिक
15. सप्ताह में एक बार होनेवाला	साप्ताहिक
16. मास में एक बार होनेवाला	मासिक
17. वर्ष में एक बार होनेवाला	वार्षिक
18. जिसके हृदय में दया नहीं है	निर्दय
19. जिसकी उपमा न हो	अनुपम
20. जो सबकुछ जानता है	सर्वज्ञ
21. जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
22. जो आँखों से परे हो	परोक्ष
23. जो गाँव का रहनेवाला हो	ग्रामीण
24. जो नगर का रहनेवाला हो	नागरिक/नगरवासी
25. जिसमें बल न हो	निर्बल
26. जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
27. जो पढ़ने योग्य हो	पठनीय
28. हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
29. जहाँ जाना सरल हो	सुगम
30. जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
31. जो कभी न मरे	अमर
32. जो पहले हो चुका हो	भूतपूर्व
33. जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
34. जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
35. जो इतिहास से संबंधित हो	ऐतिहासिक
36. जो अक्षर पढ़ना-लिखना जानता हो	साक्षर
37. जिसका जन्म पहले हुआ हो	अग्रज
38. जिसका जन्म बाद में हुआ हो	अनुज
39. जिसका विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय

40.	मांस का आहार करनेवाला	मांसाहारी
41.	शाक का आहार करनेवाला	शाकाहारी
42.	फल का आहार करनेवाला	फलाहारी
43.	दूर तक देखनेवाला	दूरदर्शी
44.	पथ का प्रदर्शन करनेवाला	पथप्रदर्शक

हमने जाना

- वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त शब्द 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाता है।
- ये भाषा के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं।
- ये वाक्य को प्रभावशाली बनाते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'जो बहुत अधिक बोलता है', उसे क्या कहते हैं?

   मितभाषी   मधुरभाषी   वाचाल

   ख. 'जिसकी उपमा न हो' के लिए एक शब्द कौन-सा है?

   उपमेय   उपमान   अनुपम

2. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के सही जोड़े पर सही (✓) तथा गलत जोड़े पर गलत (×) का निशान लगाकर उसे सही करके लिखिए।**

क. जहाँ जाना सरल हो	दुर्गम
ख. जो कभी बूढ़ा न हो	अमर
ग. प्रतिदिन होनेवाला	दैनिक
घ. जो आँखों से परे हो	परोक्ष
ङ. दूर तक देखनेवाला	दर्शनीय
च. हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित

3. रंगीन शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए।

क. उन पुस्तकों को पढ़ो, जो आसानी से उपलब्ध हों। ________________

ख. जिसमें बल न हो, उसको सताना नहीं चाहिए। ________________

ग. कल हमारी वर्ष में एक बार होनेवाली परीक्षा है। ________________

घ. कल मुझे माँ के हाथ से लिखा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। ________________

ङ. दूर तक देखनेवाला व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है। ________________

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से क्या अभिप्राय है?

ख. भाषा में अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है?

कार्यकलाप

इन वर्णों का प्रयोग कर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बनाइए।

अ	म	ज	र	ति	प	ठ	थि
य	नी	क्ष	द	र्श	सा	रो	ग्र

अमर—जो कभी न मरे

जाना-समझा

अनेक शब्द, एक शब्द का वाक्य द्वारा विग्रह बताते हैं। यह विग्रह एक शब्द के अनुसार होता है। इसमें अपनी ओर से अन्य शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

आओ दोहराएँ 1 (पाठ 1 से 9 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. भाषा का स्थायी रूप कौन-सा है?

लिखित भाषा   मौखिक भाषा   सांकेतिक भाषा

ख. 14 सितंबर, 1949 को किसे भारत की राजभाषा घोषित किया गया था?

हिंदी को   अंग्रेज़ी को   कन्नड को

2. रिक्त स्थानों को भरिए।

क. वर्णों के लिखने की विधि को ____________ कहते हैं।

ख. बोली भाषा का ____________ रूप होती है।

3. सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।

क. अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर हैं।

ख. द्वित्व व्यंजनों में पहला व्यंजन स्वर सहित तथा दूसरा व्यंजन स्वर रहित होता है।

4. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

क. समूह   ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

ख. मौखिक   ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

5. दिए गए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए।

क. दिवार ____________   ख. चिन्ह ____________

ग. सन्यासी ____________   घ. उपरोक्त ____________

6. संधि-विच्छेद कीजिए।

क. सतीश ________ + ________   ख. प्रतीक्षा ________ + ________

ग. गणेश ________ + ________   घ. सदैव ________ + ________

7. उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद लिखिए।

क. अग्नि ____________   ख. पत्ता ____________

ग. थैला ____________   घ. कानून ____________

8. प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवाची रूप लिखिए।

क. अमृत ________ ________   ख. किरण ________ ________

ग. पृथ्वी ________ ________   घ. हाथी ________ ________

9. दिए गए शब्दों के विलोम रूप लिखिए।

क. अधिकतम ____________   ख. आयात ____________

ग. यश ____________   घ. जड़ ____________

10. अर्थ के अनुसार वाक्य बनाइए।

क. उत्तर (जवाब) ________________________

ख. उत्तर (दिशा) ________________________

11. सही विकल्प से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. खिड़की खोल दो। बाहर ठंडी ________ चल रही है। (अनल/अनिल)

ख. इस ________ में बहुत अद्भुत बातें लिखी हैं। (शस्त्र/शास्त्र)

12. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

क. जो मधुर बोलता है ____________

ख. जो सबकुछ जानता है ____________

10 उपसर्ग

वन

उपवन

'वन' मूल शब्द के साथ 'उप' शब्दांश लगाकर नया शब्द बनाया गया है—उपवन। मूल शब्द से पहले लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित करने तथा नया शब्द बनानेवाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं।

उपसर्ग का अर्थ—उपसर्ग शब्द दो शब्दों 'उप' और 'सर्ग' से बना है। 'उप' का अर्थ है 'समीप' तथा 'सर्ग' का अर्थ है 'सृष्टि करना'। उपसर्ग का अर्थ हुआ—समीप रहकर नए अर्थ वाला शब्द बनाना।

वे शब्दांश, जो मूल शब्द से पहले लगकर एक नया शब्द बनाते हैं
तथा मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

उपसर्ग के प्रकार

हिंदी भाषा में चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. उपसर्ग की भाँति प्रयोग होनेवाले संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अति	अधिक, ऊपर	अतिशय, अतिरिक्त, अत्यधिक
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर	अधिकार, अधिकरण, अध्यक्ष

अनु	पीछे, समान	अनुवाद, अनुशासन, अनुकरण
अप	हीनता, बुरा	अपशब्द, अपमान, अपहरण
अभि	अधिकता, समीपता	अभिभावक, अभिमान, अभिप्राय
अव	हीनता, अनादर	अवनति, अवस्था, अवशेष
आ	तक, ओर, समेत	आचरण, आगमन, आजीवन
उत् / उद्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्थान, उन्नति, उद्भव
उप	सदृश, निकट, हीन	उपवन, उपहार, उपयोग
दुर् / दुस्	बुरा, दुष्ट, कठिन	दुर्लभ, दुर्दशा, दुस्साहस
नि	नीचे, भीतर	निमग्न, निदान, निबंध
निर् / निस्	निषेध, बाहर	निर्दोष, निर्भय, निश्चल
परा	उलटा, पीछे	पराभव, पराजय, परामर्श
परि	चारों ओर, अतिशय	परिक्रमा, परिणाम, परिवर्तन
प्र	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रकाश, प्रमाण
प्रति	विरुद्ध, सामने	प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रत्येक
वि	भिन्न, अभाव, विशेष	विकार, विकास, वियोग
सम्	अच्छा, पूर्णता, साथ	संतोष, संहार, संकल्प
सु	अधिक, अच्छा, सहज	सुगम, सुलभ, सुशिक्षित

2. हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अ, अन	निषेध	अलग, अनमोल, अनगिनत
अध	आधा	अधपका, अधखिला, अधमरा
उन	एक कम	उनचास, उनतीस, उनासी
औ (अव)	हीनता, निषेध	औसर, औघट, औगुन
कु / क	बुरा	कपूत, कुपात्र, कुढंग
दु	बुरा, कम	दुबला, दुशासन, दुकाल
नि	निषेध, अभाव	निडर, निहत्था, निकम्मा
बिन	निषेध, अभाव	बिनदेखा, बिनजाना, बिनबोया
भर	पूरा, ठीक	भरपूर, भरपेट, भरसक
सु / स	श्रेष्ठता, साथ	सजग, सुपात्र, सुयोग

3. उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज
कम	थोड़ा, हीन	कमज़ोर, कमउम्र
खुश	अच्छा	खुशकिस्मत, खुशबू, खुशखबरी
गैर	भिन्न, विरुद्ध	गैरकानूनी, गैरहाज़िर, गैरवाजिब
दर	में	दरअसल, दरमियान, दरकिनार
ना	अभाव	नाउम्मीद, नापसंद, नालायक
बद	बुरा	बदसूरत, बदनाम, बदहाल
बर	ऊपर	बरदाश्त, बरखास्त
बिल	साथ	बिलकुल
बे	बिना	बेईमान, बेरहम, बेकसूर
ला	बिना, अभाव	लाचार, लावारिस, लाजवाब
हम	समान, साथ	हमदर्द, हमशक्ल, हमउम्र

4. संस्कृत के अव्यय

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अधस्	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोबुद्धि
अंतर्	भीतर	अंतःकरण, अंतरराष्ट्रीय, अंतरराज्यीय
चिर्	बहुत	चिरंजीवी, चिरकाल, चिरायु
तिरस्	तुच्छ	तिरस्कार, तिरोहित, तिरोभाव
न	अभाव	नास्तिक, नक्षत्र, नग
पुरा	पहले	पुरातत्व, पुरातन
सत्	अच्छा	सत्कर्म, सज्जन, सद्गुरु
स्व	अपना	स्वशासन, स्वतंत्र, स्वराज

हमने जाना

- उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं, जो मूल शब्द से पहले लगते हैं।
- उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं—संस्कृत के उपसर्ग, हिंदी के उपसर्ग, उर्दू के उपसर्ग, उपसर्ग की भाँति प्रयोग होनेवाले संस्कृत के अव्यय।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'दुर्लभ' शब्द में लगा उपसर्ग कौन-सा है?

दु	दुर्	दुस्

ख. 'संहार' शब्द में लगा उपसर्ग कौन-सा है?

सन्	सं	सम्

2. दिए गए उपसर्गों के सही अर्थ पर ✓ लगाइए।

क. अप	बुरा	सदृश	नीचे
ख. सु	अच्छा	पूर्णता	साथ
ग. उन	उनका	एक कम	निषेध
घ. भर	पूरा	भरा	साथ
ङ. अभि	अधिकता	अधिक	अति
च. परि	उलटा	चारों ओर	पीछे

3. दिए गए उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए।

क. नि	________	________	ख. कु	________	________
ग. प्र	________	________	घ. सु	________	________
ङ. प्रति	________	________	च. दु	________	________
छ. वि	________	________	ज. बिन	________	________

4. उपसर्गयुक्त शब्द रेखांकित करके उपसर्ग लिखिए।

क. जज ने निर्दोष को रिहा कर दिया। ________

ख. आज मेरी परीक्षा का परिणाम आनेवाला है। ________

ग. बहुत दिनों बाद भरपेट भोजन किया है। ________

घ. बेवजह किसी को परेशान मत करो। ________

ङ. कौन कक्षा में अनुपस्थित है? __________

च. संगीत के अतिरिक्त आपकी रुचि और किसमें है? __________

5. उपसर्ग तथा मूल शब्द को अलग कीजिए।

	उपसर्ग	मूल शब्द
क. अधिकार		
ख. अवनति		
ग. दुर्दशा		
घ. प्रख्यात		
ङ. प्रतिनिधि		
च. अनगिनत		

6. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. उपसर्ग किसे कहते हैं?

ख. हिंदी भाषा में प्रयोग किए जानेवाले उपसर्गों के पाँच उदाहरण दीजिए।

ग. हिंदी के कोई चार उपसर्ग लेकर उनसे दो-दो शब्द बनाइए।

कार्यकलाप

दिए गए शब्दों में लगे उपसर्गों तथा मूल शब्दों का प्रयोग कर अन्य भिन्न शब्द बनाइए।

उपहार — उप, हार — उपवन, प्रहार

प्रकाश — प्र, काश

अनुशासन

सुगम

अभिमान

जाना-समझा

संस्कृत के उपसर्गों तथा अव्ययों के साथ संस्कृत के, हिंदी के उपसर्गों के साथ हिंदी के तथा उर्दू के उपसर्गों के साथ उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

11 प्रत्यय

बच्चा यह देखकर हैरान हो रहा है कि कैसे कार शब्दांश जोड़कर कई नए शब्द बन गए हैं। जिस प्रकार मूल शब्द से पहले शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, उसी प्रकार मूल शब्द के बाद भी शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाए जा सकते हैं। मूल शब्द के बाद लगे शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय का अर्थ प्रत्यय शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—प्रति+अय। प्रति (बाद में/साथ), अय (चलनेवाला), अर्थात किसी शब्द के बाद लगनेवाला शब्द।

> वे शब्दांश, जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन करते हैं तथा नए शब्दों का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के भेद

हिंदी में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय वे प्रत्यय, जो क्रिया या धातु के अंत में प्रयुक्त होते हैं, कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

> **विशेष** क्रिया शब्दों; जैसे—पढ़ना, लिखना, खेलना आदि के अंत में लगा 'ना' हटाने पर जो अंश बचता है, उसे धातु कहते हैं।

कृत् प्रत्यय लगाने से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों का निर्माण होता है।

खेल + औना = खिलौना

झूल + आ = झूला

चाट + नी = चटनी

प्रत्यय	मूल शब्द		प्रत्यय से निर्मित शब्द	
अक्कड़	भूल	घूम	भुलक्कड़	घुमक्कड़
आ	घेर	झगड़	घेरा	झगड़ा
आई	लड़	पढ़	लड़ाई	पढ़ाई
आऊ	दिख	बिक	दिखाऊ	बिकाऊ
आन	उड़	उठ	उड़ान	उठान
आव	चढ़	बच	चढ़ाव	बचाव
आवा	छल	भूल	छलावा	भुलावा
आवट	लिख	रुक	लिखावट	रुकावट
आहट	चिल्ल	घबरा	चिल्लाहट	घबराहट
इया	बढ़	घट	बढ़िया	घटिया
ई	हँस	बोल	हँसी	बोली
औना	खेल	बिछ	खिलौना	बिछौना
कर	जा	दौड़	जाकर	दौड़कर
त	बच	खप	बचत	खपत
ता	जा	आ	जाता	आता
ती	चढ़	झड़	चढ़ती	झड़ती
ना	बोल	लिख	बोलना	लिखना
वाला	जाने	खाने	जानेवाला	खानेवाला

2. **तद्धित प्रत्यय** वे शब्दांश, जो संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के अंत में लगते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

चित्र + कार = चित्रकार

हलवा + आई = हलवाई

धोबी + इन = धोबिन

प्रत्यय	मूल शब्द		प्रत्यय से निर्मित शब्द	
आ	भूख	प्यास	भूखा	प्यासा
आई	भला	बुरा	भलाई	बुराई
आरी	पूजा	भीख	पुजारी	भिखारी
आस	मीठा	खट्टा	मिठास	खटास
आहट	कड़वा	चिकना	कड़वाहट	चिकनाहट
आनी	जेठ	देवर	जेठानी	देवरानी

आर	सोना	लोहा	सोनार	लोहार
इया	मुख	दुख	मुखिया	दुखिया
ई	माला	खेत	माली	खेती
ईला	रंग	ज़हर	रँगीला	ज़हरीला
ऊ	पेट	बाज़ार	पेटू	बाज़ारू
एरा	साँप	मामा	सँपेरा	ममेरा
ता	मित्र	वीर	मित्रता	वीरता
पन	लड़का	पागल	लड़कपन	पागलपन
पा	बूढ़ा	मोटा	बुढ़ापा	मोटापा
वाला	टोपी	घर	टोपीवाला	घरवाला
वाँ	पाँच	सौ	पाँचवाँ	सौवाँ

हमने जाना

- किसी मूल शब्द के बाद लगकर नया शब्द बनानेवाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।
- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय।
- कृत् प्रत्यय क्रिया या धातु के अंत में लगते हैं।
- तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के अंत में लगते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कृत् प्रत्यय किसके अंत में प्रयुक्त होते हैं?

संज्ञा के   सर्वनाम के   क्रिया के

ख. कृत् प्रत्यय का उदाहरण कौन-सा है?

देवरानी   चिकनाहट   रुकावट

2. दिए गए शब्दों में से प्रत्यय अलग करके लिखिए।

क. पढ़ाई ____________   ख. रुकावट ____________

ग. बचत ____________   घ. लिखना ____________

ङ. बिकाऊ ____________   च. छलावा ____________

3. दिए गए प्रत्ययों से नए शब्द बनाइए।

क. अक्कड़ ____________ ख. आन ____________

ग. आवा ____________ घ. आस ____________

ङ. ईला ____________ च. एरा ____________

छ. पन ____________ ज. आर ____________

4. प्रत्यययुक्त शब्द को रेखांकित कर प्रत्यय लिखिए।

क. उसकी चिल्लाहट सुन सभी भागे आए। ____________

ख. मेरे मन में पक्षी जैसी उड़ान भरने की इच्छा जागी। ____________

ग. तुम जैसा भुलक्कड़ आदमी मैंने कभी नहीं देखा। ____________

घ. पूरे रास्ते धूल उड़ती रही। ____________

ङ. रुकावट के लिए खेद है। ____________

च. मधुर बोली सभी का मन मोह लेती है। ____________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. प्रत्यय किसे कहते हैं?

ख. प्रत्यय के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ग. कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

दिए गए शब्दों में कोई एक प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए।

वीर ____________ भला ____________

सुंदर निडर ____________ अच्छा बुरा ____________

____________ ____________

मधुर सरल ____________ लंबा चिकना ____________

____________ ____________

जाना-समझा

कृत् प्रत्यय से बननेवाले शब्द कृदंत कहलाते हैं।

12 समास

चार राहों का समूह चौराहा
(कुछ शब्दों का समूह) (संक्षिप्त रूप)

कुछ शब्दों के समूह को संक्षिप्त करके जब नया शब्द बनाते हैं, तब उस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

परस्पर संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक पदों के संयोग से नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।

विशेष वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद कहलाते हैं।

समस्तपद

दो या अधिक शब्दों के संयोग से जो नया स्वतंत्र शब्द बनता है, उसे समस्तपद या सामासिक पद कहते हैं।

जैसे—राजा का दरबार राजदरबार (समस्तपद)

समस्तपद में दो पद होते हैं। पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा पद उत्तरपद कहलाता है।

पूर्वपद	← चौ	राहा →	उत्तरपद
	← राज	दरबार →	

समास-विग्रह

समस्तपदों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह
चौराहा	चार राहों का समूह
राजदरबार	राजा का दरबार
रसोईघर	रसोई के लिए घर

सोचो और बताओ

समस्तपद	समास-विग्रह
चौमासा	____________
राजपुत्र	____________

समास के भेद

समास के प्रमुख छह भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

वह समास, जिसमें पूर्वपद प्रधान होता है तथा समस्तपद क्रियाविशेषण अव्यय होता है, अव्ययीभाव समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	निडर	डर के बिना
आजन्म	जन्म तक	अनजाने	बिना जाने हुए
प्रतिदिन	दिन-दिन	व्यर्थ	बिना अर्थ के
भरपेट	पेट भरकर	बातोंबात	बात-ही-बात में

विशेष किसी शब्द का एक साथ दो बार प्रयोग होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है; जैसे—धड़ाधड़, घड़ी-घड़ी, हाथोंहाथ, रातोंरात, पहलेपहल, पल-पल।

सोचो और बताओ

इनका समस्तपद क्या होगा?

रात-ही-रात में ____________	हर घड़ी ____________	हाथ-ही-हाथ में ____________
सबसे पहले ____________	हर पल ____________	धड़-धड़ ____________

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा शब्दों के मध्य आनेवाले कारक-चिह्नों का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त	वनगमन	वन को गमन
मुँहमाँगा	मुँह से माँगा	नीतियुक्त	नीति से युक्त
रसोईघर	रसोई के लिए घर	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी

ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	देशनिकाला	देश से निकाला
राजपुत्र	राजा का पुत्र	रेतघड़ी	रेत की घड़ी
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	आपबीती	आप पर बीती

विशेष तत्पुरुष समास में कर्ता और संबोधन कारकों के अतिरिक्त अन्य सभी कारकों की विभक्तियाँ (कारक-चिह्न) लगती हैं।

3. कर्मधारय समास

जिस समास में विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान का भाव होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे—

विशेष्य-विशेषण संबंध		**उपमेय-उपमान संबंध**	
समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
नीलगाय	नीली है जो गाय	चंद्रमुख	चंद्रमा के समान मुख
पीतांबर	(पीत) पीला है जो अंबर	चरणकमल	कमल के समान चरण
भलामानस	भला है जो मानस	नरसिंह	सिंह के समान नर
परमानंद	परम है जो आनंद	वचनामृत	अमृत के समान वचन

विशेष जिसकी तुलना की जाती है, उसे उपमेय कहा जाता है; जिससे तुलना की जाती है, उसे उपमान कहते हैं।

4. द्विगु समास

जिस समास का प्रथम पद संख्यावाचक होता है, वह द्विगु समास होता है; जैसे—

दोपहर	दो पहरों का समाहार	त्रिफला	तीन फलों का समाहार
चारपाई	चार पायों का समाहार	पंचवटी	पाँच वटों का समाहार
छमाही	छह महीनों का समाहार	सतनाजा	सात अनाजों का समाहार
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार	नवरात्र	नौ रातों का समाहार

विशेष समाहार का अर्थ होता है 'समुदाय' अथवा 'समूह'।

5. द्वंद्व समास

जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों का अपना अस्तित्व होता है, उसे द्वंद्व समास कहते हैं; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
माता-पिता	माता और पिता	मोटा-ताजा	मोटा और ताजा
कंकड़-पत्थर	कंकड़ और पत्थर	चाय-कॉफ़ी	चाय या कॉफ़ी
दाल-भात	दाल और भात	उतार-चढ़ाव	उतार और चढ़ाव
चाल-ढाल	चाल और ढाल	गुण-दोष	गुण अथवा दोष

6. **बहुव्रीहि समास**

वह समास, जिसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि कोई अन्य पद प्रधान होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	अन्य पद
दशानन	दस हैं आनन जिसके	रावण
पीतांबर	पीले हैं अंबर जिसके	विष्णु
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके	सरस्वती
चंद्रमौलि	चंद्र है सिर पर जिसके	शिव
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका	गणेश
गिरिधर	गिरि को धारण किया है जिसने	श्रीकृष्ण
पंकज	पंक में जन्म लिया है जिसने	कमल
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका	शिव
चक्रपाणि	चक्र है पाणि में जिसके	विष्णु

विशेष मौलि का अर्थ है—सिर अथवा मस्तक।

हमने जाना

- परस्पर संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक पदों के संयोग की प्रक्रिया समास कहलाती है।
- दो या अधिक शब्दों के संयोग से जो नया स्वतंत्र शब्द बनता है, उसे समस्तपद कहते हैं।
- समस्तपदों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।
- समास के प्रमुख छह भेद हैं—
  अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. किस समास में पूर्वपद प्रधान होता है?

कर्मधारय समास में   बहुव्रीहि समास में   अव्ययीभाव समास में

ख. किस समास में विशेषण-विशेष्य का भाव होता है?

द्वंद्व समास में   द्विगु समास में   कर्मधारय समास में

2. सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।

क. कर्मधारय समास में उपमेय-उपमान अथवा विशेष्य-विशेषण का भाव होता है।

ख. तत्पुरुष समास में समस्तपद क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

ग. किसी शब्द का एक साथ दो बार प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास होता है।

घ. द्वंद्व समास का प्रथम पद संख्यावाचक होता है।

ङ. द्विगु समास के दोनों पदों के बीच योजक-चिह्न लगा होता है।

3. दिए गए समस्तपदों का विग्रह कीजिए।

क. यथाविधि ____________   **ख.** आजन्म ____________

ग. हाथोंहाथ ____________   **घ.** मुँहमाँगा ____________

ङ. देशनिकाला ____________   **च.** भलामानस ____________

छ. चारपाई ____________   **ज.** माता-पिता ____________

4. समस्तपद बनाकर समास का नाम लिखिए।

समास-विग्रह	समस्तपद	समास
क. वीणा है पाणि में जिसके	____________	____________
ख. मोटा तथा ताजा	____________	____________
ग. तीन फलों का समाहार	____________	____________
घ. कमल के समान चरण	____________	____________

ङ. परम है जो आनंद ______ ______

च. बिना अर्थ के ______ ______

छ. वन को गमन ______ ______

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. समास किसे कहते हैं?

ख. समस्तपद तथा समास-विग्रह से क्या तात्पर्य है?

ग. समास के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

घ. कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में क्या अंतर है?

ङ. उदाहरण द्वारा द्वंद्व तथा द्विगु समास के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए समस्तपद का दो भिन्न तरीकों से समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

जैसे—पीतांबर पीला है जो अंबर कर्मधारय समास

पीले हैं अंबर जिसके (विष्णु) बहुव्रीहि समास

त्रिनेत्र ______

कमलनयन ______

दशानन ______

चतुर्भुज ______

नीलकंठ ______

जाना-समझा

संधि में दो वर्णों का योग होता है, परंतु समास में दो पदों का योग होता है।

13 संज्ञा

चित्र में लिखे नामों को पढ़िए।

किसान, अरुण	व्यक्तियों के नाम	खेत, घर	स्थानों के नाम
गेहूँ, हँसिया	वस्तुओं के नाम	संतुष्टि, खुशी	भावों के नाम

नाम को बतानेवाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

संज्ञा उस शब्द को कहते हैं, जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध हो।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का पता चलता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

आपका, आपके माता-पिता, भाई-बहन, अध्यापिका, मित्र, देश, राज्य आदि का एक विशेष नाम है। यह विशिष्ट नाम ही व्यक्तिवाचक संज्ञा है। राम, भारत, बिहार, इंडिया गेट, यमुना आदि व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा

दिए गए चित्रों को देखें। आप इनके नाम नहीं जानते। आप इन्हें क्या कहेंगे?

स्त्री

पुरुष

जब तक किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान को एक विशेष नाम नहीं दिया जाता, वे जातिवाचक संज्ञा होते हैं, क्योंकि वे किसी विशेष व्यक्ति का नहीं, अपितु पूरी जाति का बोध कराते हैं। स्त्री, पुरुष, बच्चा, पर्वत, नदी, देश आदि जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं।

जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार के व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
आदित्य	लड़का	भारत	देश
उत्तर	दिशा	हिंद महासागर	सागर
गंगा	नदी	हिमालय	पर्वत
रामचरितमानस	ग्रंथ	मई	महीना
होली	त्योहार	सोमवार	दिन
मिट्ठू	तोता	इंडिया गेट	स्मारक

3. भाववाचक संज्ञा

वीरता

मिठास

प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ में एक विशेष गुण होता है, जिसे उससे अलग नहीं किया जा सकता। सिपाही का विशेष गुण है—वीरता। मिठाई का विशेष गुण है—मिठास। इन्हें हम छू नहीं सकते, केवल अनुभव कर सकते हैं।

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुण, भाव, दशा, व्यापार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

गुण	चतुराई	कुशलता	निपुणता	सुंदरता	चंचलता
भाव	प्रेम	घृणा	मित्रता	शत्रुता	वीरता
अवस्था	बुढ़ापा	बचपन	जवानी	नींद	पीड़ा
माप	ऊँचाई	चौड़ाई	लंबाई	गहराई	मोटाई
क्रिया	पढ़ाई	लिखाई	दौड़	बहाव	बोलचाल
गति	चुस्ती	सुस्ती	फुरती	शीघ्रता	देरी
स्वाद	खट्टापन	मिठास	कड़वापन	कसैलापन	तीखापन

संज्ञा के दो अन्य भेद भी माने गए हैं—1. समूहवाचक संज्ञा 2. द्रव्यवाचक संज्ञा।

1. समूहवाचक संज्ञा

वे संज्ञा शब्द, जो किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध न करवाकर उनके पूरे समूह का बोध करवाते हैं, समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

भीड़, गुच्छा, दल, सभा, सेना, झुंड, गिरोह, कुंज आदि समूहवाचक संज्ञा शब्द हैं।

2. द्रव्यवाचक संज्ञा

किसी धातु या द्रव्य का बोध करानेवाली संज्ञा द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाती है।

चाँदी, सोना, ताँबा, लोहा, घी, तेल, दूध आदि द्रव्यवाचक संज्ञाएँ हैं। इनसे नाप-तौल वाली वस्तुओं का बोध होता है।

विशेष द्रव्यवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। जैसे—सोना प्रतिदिन महँगा होता जा रहा है।

भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण

भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय से होता है।

जातिवाचक संज्ञा से

बूढ़ा	बुढ़ापा	लड़का	लड़कपन
मित्र	मित्रता	दास	दासत्व
पंडित	पंडिताई	मनुष्य	मनुष्यता
नारी	नारीत्व	बच्चा	बचपन
नेता	नेतृत्व	शिशु	शैशव
सज्जन	सज्जनता	पशु	पशुत्व

सर्वनाम से

अपना	अपनापन	मम	ममता/ममत्व
निज	निजत्व	अहं	अहंकार

विशेषण से

कठोर	कठोरता	गरम	गरमी
सर्द	सरदी	मीठा	मिठास
चतुर	चतुराई	बड़ा	बड़प्पन
चौड़ा	चौड़ाई	सुंदर	सुंदरता

क्रिया से

खेलना	खेल	दिखाना	दिखावा
घबराना	घबराहट	सजना	सजावट
चढ़ना	चढ़ाई	बचना	बचाव
बूझना	बुझौवल	बहना	बहाव
दौड़ना	दौड़	मारना	मार
मिलना	मिलाप	चलना	चलन

अव्यय से

समीप	सामीप्य	दूर	दूरी
शाबाश	शाबाशी	वाहवाह	वाहवाही

हमने जाना

- संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का बोध कराते हैं।
- संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।
- संज्ञा के दो अन्य भेद भी माने गए हैं—समूहवाचक संज्ञा तथा द्रव्यवाचक संज्ञा।
- भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय से होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. एक ही प्रकार के व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का बोध करवानेवाली संज्ञा कौन-सी होती है?

भाववाचक संज्ञा   जातिवाचक संज्ञा   व्यक्तिवाचक संज्ञा

ख. 'गुच्छा' शब्द किस प्रकार की संज्ञा है?

द्रव्यवाचक संज्ञा   भाववाचक संज्ञा   समूहवाचक संज्ञा

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ________________ जातिवाचक संज्ञा है। (बूढ़ा/बुढ़ापा)

ख. ________________ भाववाचक संज्ञा है। (कठोर/कठोरता)

ग. ________________ द्रव्यवाचक संज्ञा है। (लोहा/झुंड)

घ. ________________ समूहवाचक संज्ञा है। (कुंज/घी)

ङ. ________________ व्यक्तिवाचक संज्ञा है। (नदी/गंगा)

3. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए।

क. मित्र ________________   ख. बच्चा ________________

ग. नारी ________________   घ. अपना ________________

ङ. कठोर ________________   च. चतुर ________________

छ. सुंदर ________________   ज. घबराना ________________

4. दिए गए शब्दों को उचित स्थान पर लिखिए।

चतुराई, गिरोह, सोना, बचपन, झुंड, दूध, रामचरितमानस, रामलाल, बच्चा, देश, हिमालय, माउंट एवरेस्ट, चुस्ती, दल, तेल, सभा, चाँदी, चौड़ाई, स्त्री, पुरुष

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	समूहवाचक संज्ञा	द्रव्यवाचक संज्ञा

5. **व्यक्तिवाचक संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा में परिवर्तित करके पुनः लिखिए।**

क. पहाड़ से गंगा बह रही है। ____________________

ख. मेरा मिट्ठू टें-टें करता है। ____________________

ग. आज गुझिया बनाएँगे। आज होली है। ____________________

घ. सभी पर्यटक इंडिया गेट देखने गए। ____________________

ङ. मुझे अपना भारत बहुत प्रिय है। ____________________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संज्ञा किसे कहते हैं?

ख. संज्ञा के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ग. व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा जातिवाचक संज्ञा में क्या अंतर है?

घ. द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा से किस प्रकार भिन्न है?

कार्यकलाप

कभी-कभी हम व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में भी करते हैं; जैसे–

- अभिमन्यु अर्जुन के पुत्र थे। (अभिमन्यु–व्यक्तिवाचक संज्ञा)
- तुम जैसे अभिमन्यु ही भारत का उद्धार कर सकते हैं।
  (अभिमन्यु–जातिवाचक संज्ञा–वीर, पराक्रमी व्यक्ति का प्रतीक)

कुछ ऐसे व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों का चयन कर उनका प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में कीजिए।

जाना-समझा

'संज्ञा' शब्द का प्रयोग किसी वस्तु के लिए नहीं होता, अपितु उस वस्तु के नाम के लिए होता है।

14 लिंग

दिए गए चित्र में दादाजी अखबार पढ़ रहे हैं। दादीजी योग कर रही हैं। दिव्या खेल रही है। आकाश विद्यालय जा रहा है। माली पौधों को पानी दे रहा है। इसमें दादाजी, आकाश और माली पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं। दादीजी तथा दिव्या स्त्री जाति का बोध करा रही हैं। स्त्री तथा पुरुष जाति का बोध करानेवाले शब्द लिंग कहलाते हैं।

> शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का ज्ञान होता है, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के प्रमुख दो भेद हैं—1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग।

1. स्त्रीलिंग

जिस संज्ञा शब्द से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे—

नानी स्वेटर बुन रही हैं।

लड़की किताब पढ़ रही है।

गुड़िया रस्सी कूद रही है।

2. पुल्लिंग

जिस संज्ञा शब्द से उसके पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं।
जैसे–

लड़का हँस रहा है।

अमन पौधे को पानी दे रहा है।

बच्चा आइसक्रीम खा रहा है।

लिंग-निर्णय

हिंदी में लिंग-निर्णय शब्द के अर्थ से तथा उसके रूप से करते हैं। हिंदी में प्राणिवाचक शब्दों का लिंग अर्थ के अनुसार तथा अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग रूप के अनुसार निर्धारित किया जाता है। अन्य शब्दों में लिंग का ज्ञान उनके प्रयोग से जाना जाता है।

स्त्रीलिंग शब्दों को पहचानने के नियम (अर्थ के अनुसार)

ये शब्द स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

नदियों के नाम	गंगा, यमुना, कावेरी, नर्मदा, ताप्ती
तिथियों के नाम	एकादशी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या
नक्षत्रों के नाम	अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी
मसालों के नाम	हलदी, इलायची, हींग, दालचीनी, जावित्री, चिरौंजी
खाने की वस्तुएँ	कचौड़ी, पूरी, खीर, दाल, पकौड़ी, रोटी, चपाती, तरकारी, खिचड़ी
शरीर के अंगों के नाम	नाक, आँख, जीभ, बाँह, हड्डी, कलाई, कोहनी, ठोड़ी, खाल
भाषाओं के नाम	हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू, कन्नड, मराठी, गुजराती
बोलियों के नाम	खड़ी बोली, हरियाणवी, मगधी, भोजपुरी, मैथिली
लिपियों के नाम	देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, फ़ारसी

रूप के अनुसार

जिन शब्दों के अंत में निम्नलिखित प्रत्यय आएँ, वे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

आई	लड़ाई, पढ़ाई, महँगाई, मलाई, खटाई
आवट	लिखावट, सजावट, बनावट, गिरावट, तरावट, जमावट
आस	प्यास, मिठास, खटास
आहट	चिल्लाहट, घबराहट, मुसकराहट
इन	धोबिन, मालिन, सुनारिन, ग्वालिन
ई	हँसी, खुशी, तरी, भरी
औती/औटी	मनौती, फिरौती, कसौटी
ती/ता	गिनती, शत्रुता, मित्रता, कटुता, प्रसन्नता, लघुता
नी	करनी, भरनी

पुल्लिंग शब्दों को पहचानने के नियम

ये शब्द पुल्लिंग माने जाते हैं।

शरीर के अंगों के ये नाम	कान, मुँह, दाँत, ओठ, पाँव, हाथ, गाल, मस्तिष्क, तालु, बाल, अँगूठा, नाखून
देशों के नाम	भारत, चीन, अमेरिका, इंग्लैंड, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड
धातुओं के नाम	ताँबा, सोना, लोहा, काँसा, पीतल
द्रव्य पदार्थों के नाम	पानी, घी, तेल, शरबत, इत्र, रायता, पेट्रोल
पेड़ों के नाम	शीशम, बरगद, पीपल, चीड़, आम, अशोक
अनाज के नाम	गेहूँ, चावल, बाजरा, चना, मटर
रत्नों के नाम	हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, नीलम, पुखराज
महीनों और दिनों के नाम	मार्च, सोमवार, मंगलवार
पहाड़ों तथा समुद्रों के नाम	हिमालय, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर

जिन शब्दों के अंत में निम्नलिखित प्रत्यय आएँ, वे शब्द पुल्लिंग होते हैं।

आ	घेरा, डेरा, नाला, ताला, कमरा
आक/आका/आकू	तैराक, धमाका, लड़ाकू
आप/आपा	मिलाप, बुढ़ापा, मोटापा
आव/आवा	बहाव, लगाव, छिपाव, घुमाव, छलावा
आर/आरा/आरी	लोहार, सोनार, हत्यारा, भिखारी
एरा	सँपेरा, लुटेरा
पन	बचपन, लड़कपन, अपनापन
वान/वाला	गाड़ीवान, दूधवाला, टोपीवाला

नित्य पुल्लिंग तथा नित्य स्त्रीलिंग शब्द

कुछ शब्द सदा पुल्लिंग तथा कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इन्हें नित्य पुल्लिंग तथा नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं।

नित्य पुल्लिंग शब्द   चीता, खटमल, कौआ, उल्लू, पक्षी, केंचुआ इत्यादि।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द   मक्खी, चील, मैना, कोयल, गिलहरी, बटेर, मछली, तितली इत्यादि।

इनमें स्त्री अथवा पुरुष जाति का भेद करने के लिए इनके आगे नर या मादा लगाया जाता है; जैसे—मादा चीता, नर मक्खी।

समान रूप से प्रयुक्त होनेवाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं, जो स्त्री तथा पुरुष दोनों के लिए समान रूप से प्रयोग किए जाते हैं; जैसे—राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, डॉक्टर, इंजीनियर, राज्यपाल आदि। इनकी पहचान क्रिया शब्द द्वारा होती है।
जैसे— आज प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देंगे।
आज प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देंगी।

भिन्न रूप में प्रयुक्त शब्द

कुछ पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द भिन्न रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे—	माता	पिता	राजा	रानी	वर	वधू
	भाई	बहन	आदमी	औरत	बेटा	बहू
	सास	ससुर	भैया	भाभी	कवि	कवयित्री
	विद्वान	विदुषी	स्त्री	पुरुष	सम्राट	सम्राज्ञी

लिंग परिवर्तन के नियम

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ नियम इस प्रकार हैं—

अंत में 'आ' लगाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुत	सुता
आत्मज	आत्मजा
पूज्य	पूज्या
वृद्ध	वृद्धा
शिष्य	शिष्या

अंतिम 'आ' को 'ई' करके

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की
नाला	नाली
चींटा	चींटी
बेटा	बेटी
नाना	नानी

अंत में 'इन' लगाकर

बाघ	बाघिन
धोबी	धोबिन
तेली	तेलिन
माली	मालिन
पुजारी	पुजारिन

अंत में 'आइन' लगाकर

हलवाई	हलवाइन
लाला	ललाइन
चौधरी	चौधराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बनिया	बनियाइन

अंत में 'नी' लगाकर

ऊँट	ऊँटनी
शेर	शेरनी
मोर	मोरनी
हंस	हंसिनी
भील	भीलनी

अंत में 'आनी' लगाकर

देवर	देवरानी
जेठ	जेठानी
सेठ	सेठानी
नौकर	नौकरानी
इंद्र	इंद्राणी

अंतिम 'आ' को 'इया' करके

बूढ़ा	बुढ़िया
कुत्ता	कुतिया
चूहा	चुहिया
चिड़ा	चिड़िया
गुड्डा	गुड़िया

अंतिम 'अक' को 'इका' करके

बालक	बालिका
पाठक	पाठिका
शिक्षक	शिक्षिका
गायक	गायिका
लेखक	लेखिका

अंतिम 'वान' को 'वती' करके

बलवान	बलवती
भगवान	भगवती
धनवान	धनवती

अंतिम 'मान' को 'मती' करके

बुद्धिमान	बुद्धिमती
आयुष्मान	आयुष्मती
श्रीमान	श्रीमती

हमने जाना

- स्त्री या पुरुष जाति का बोध करानेवाले शब्द लिंग कहलाते हैं।
- लिंग दो प्रकार के होते हैं—स्त्रीलिंग और पुल्लिंग।
- 'स्त्रीलिंग' शब्द स्त्री जाति का तथा 'पुल्लिंग' शब्द पुरुष जाति का बोध करवाते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. कौन-सा शब्द पुल्लिंग है?

   बुढ़ापा गिनती खटास

   ख. कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?

   भिखारी धमाका मनौती

2. स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग के सही जोड़े पर सही (✓) तथा गलत जोड़े पर गलत (×) का निशान लगाइए।

   क. धनवान धनवंत्री ख. गायक गायिका

   ग. सम्राट महारानी घ. आत्मज आत्मजा

   ङ. विद्वान विदुषी च. हलवाई हलवानी

3. रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर रिक्त स्थानों को भरिए।

   क. धोबी कपड़े धो रहा था। ______ कपड़े इस्त्री कर रही थी।

   ख. सेठ को अचानक आया देख ______ हतप्रभ रह गई।

   ग. वृद्ध और ______ धीरे-धीरे घर की ओर चल दिए।

   घ. बाघ आगे बढ़ा और ______ झाड़ियों में छिप गई।

   ङ. माली ने गुलाब के फूलों की डलिया ______ के आगे रख दी।

4. दिए गए शब्दों को पहचानकर सही तालिका में लिखिए।

हींग	दाँत	लोहा	खिचड़ी	रोहिणी	मोती	चावल	गंगा
इत्र	आम	एकादशी	नाक	दाल	चीड़	बाँह	रायता

स्त्रीलिंग

पुल्लिंग

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. लिंग किसे कहते हैं?

ख. स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग शब्दों का अंतर उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

ग. नित्य स्त्रीलिंग तथा नित्य पुल्लिंग शब्द कौन-से होते हैं?

कार्यकलाप

दिए गए शब्दों का लिंग वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

राष्ट्रपति ______________________ स्त्रीलिंग
______________________ पुल्लिंग

प्रधानमंत्री ______________________ स्त्रीलिंग
______________________ पुल्लिंग

इंजीनियर ______________________ स्त्रीलिंग
______________________ पुल्लिंग

मुख्यमंत्री ______________________ स्त्रीलिंग
______________________ पुल्लिंग

जाना-समझा

लिंग परिवर्तित होने से क्रिया का रूप भी परिवर्तित हो जाता है। क्रिया शब्दों से भी लिंग की पहचान की जा सकती है; जैसे—धोबी कपड़े धो रहा है। (पुल्लिंग) धोबिन कपड़े धो रही है। (स्त्रीलिंग)

15 वचन

उपर्युक्त चित्र में एक पुरुष, एक स्त्री, एक कार तथा एक कुत्ता है। इसमें दो लड़के तथा दो पेड़ हैं। किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या एक है या अनेक, इसका ज्ञान करानेवाले शब्द वचन कहलाते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

हिंदी में वचन के दो भेद हैं—1. एकवचन 2. बहुवचन।

1. **एकवचन**

विकारी शब्द का वह रूप, जो किसी एक पदार्थ या व्यक्ति का बोध कराता है, एकवचन कहलाता है; जैसे—चिड़िया उड़ रही है।
लड़की नाच रही है।
गधा रेंक रहा है।

2. बहुवचन

विकारी शब्द का वह रूप, जो एक से अधिक पदार्थों या व्यक्तियों का बोध कराता है, बहुवचन कहलाता है; जैसे—बिल्लियाँ कूद रही हैं। पत्ते झड़ रहे हैं।
कपड़े बिखरे पड़े हैं।

वचन की पहचान

वचन की पहचान एक वाक्य में आए संज्ञा, सर्वनाम अथवा क्रिया शब्दों से की जा सकती है।

संज्ञा शब्द द्वारा

एकवचन	**बहुवचन**
खरबूजा मीठा है।	खरबूजे मीठे हैं।
पंखा चल रहा है।	पंखे चल रहे हैं।
पहिया घूम रहा है।	पहिये घूम रहे हैं।

सर्वनाम शब्द द्वारा

मैं घूमने जा रहा हूँ।	हम घूमने जा रहे हैं।
वह खेल रहा है।	वे खेल रहे हैं।
उसने खाना खाया।	उन्होंने खाया खाया।

क्रिया शब्द द्वारा

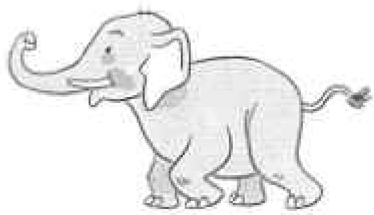

कबूतर उड़ रहा है।	कबूतर उड़ रहे हैं।
बालक लिखता है।	बालक लिखते हैं।
हाथी मस्त चाल चलता है।	हाथी मस्त चाल चलते हैं।

वचन का परिवर्तन

एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के कुछ नियम इस प्रकार हैं—

पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'ए' करके

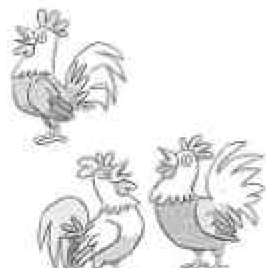

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
कपड़ा	कपड़े	दूधवाला	दूधवाले
पत्ता	पत्ते	खरबूजा	खरबूजे
जूता	जूते	मुरगा	मुरगे

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'अ' को 'एँ' करके

आँख	आँखें	रात	रातें
झील	झीलें	आदत	आदतें
बहन	बहनें	सड़क	सड़कें
पुस्तक	पुस्तकें	तसवीर	तसवीरें

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'एँ' करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	लता	लताएँ
कामना	कामनाएँ	शाखा	शाखाएँ
वार्ता	वार्ताएँ	कथा	कथाएँ
पत्रिका	पत्रिकाएँ	भुजा	भुजाएँ

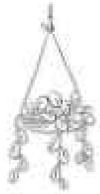

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'इ' या 'ई' को 'इयाँ' करके

निधि	निधियाँ	नारी	नारियाँ
तिथि	तिथियाँ	चींटी	चींटियाँ
राशि	राशियाँ	मिठाई	मिठाइयाँ
जाति	जातियाँ	टोपी	टोपियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में लगे 'या' को 'याँ' करके

चिड़िया	चिड़ियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ	डिबिया	डिबियाँ
चुहिया	चुहियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'उ', 'ऊ' अथवा 'औ' को 'एँ' करके

वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
धेनु	धेनुएँ	धातु	धातुएँ
ऋतु	ऋतुएँ	गौ	गौएँ

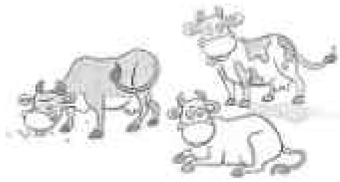

गण, वर्ग, जन, लोग, वृंद लगाकर

अधिकारी	अधिकारीवर्ग	अध्यापक	अध्यापकगण
गुरु	गुरुजन	प्रजा	प्रजाजन
गरीब	गरीबलोग	आप	आपलोग
नारी	नारीवृंद	पक्षी	पक्षीवृंद

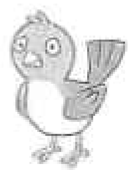

सदा एकवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

द्रव्यवाचक संज्ञा दूध, पानी, सोना, तेल, घी इत्यादि।

दूध	दूध खत्म हो गया।
पानी	पानी बह रहा है।
सोना	सोना दिनोदिन महँगा होता जा रहा है।

भाववाचक संज्ञा सत्य, ईमानदारी, बुढ़ापा इत्यादि।

सत्य	सत्य की सदा जीत होती है।
ईमानदारी	ईमानदारी बहुत बड़ा गुण है।
बुढ़ापा	बुढ़ापा सभी पर आता है।

समूहवाचक संज्ञा भीड़, सभा, गुच्छा, दल, झुंड इत्यादि।

भीड़	सड़क पर भीड़ जमा थी।
सभा	पार्क में सभा हो रही थी।
गुच्छा	पेड़ पर अंगूर का गुच्छा लगा था।

प्रत्येक, हर तथा हर एक

प्रत्येक	प्रत्येक व्यक्ति मेरी बात मानेगा।
हर	हर इनसान मेरी बात को महत्व देता है।
हर एक	हर एक व्यक्ति सच्चा नहीं होता।

सदा बहुवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—हस्ताक्षर, होश, ओठ, आँसू, प्राण, लोग, समाचार, भाग्य, दर्शन, दाम, बाल, अक्षत इत्यादि।

हस्ताक्षर	मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं।
प्राण	शेर को देख मेरे प्राण सूख गए।
आँसू	उसकी हालत देख मेरे आँसू निकल आए।

आदर देने के लिए भी एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग करते हैं; जैसे—

- नानाजी मेरे लिए स्वादिष्ट फल लाए हैं।
- जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

कुछ पुल्लिंग शब्द एकवचन तथा बहुवचन में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं। जब इनका कारक-चिह्नों के साथ प्रयोग किया जाता है, तब इनका रूप बदल जाता है; जैसे—

एकवचन	**बहुवचन**	**कारक-चिह्नों के साथ प्रयोग**
घर	घर	सभी ने अपने घरों में ताले लगा दिए।
आम	आम	आमों को देख बच्चे खुशी से उछल पड़े।
फल	फल	मुझे सभी फलों का स्वाद पसंद है।

हमने जाना

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
- वचन के दो भेद हैं—एकवचन तथा बहुवचन।
- एकवचन किसी एक पदार्थ या वस्तु का बोध कराता है।
- बहुवचन एक से अधिक पदार्थों या वस्तुओं का बोध कराता है।
- आदर देने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'पक्षी' शब्द का बहुवचन कौन-सा है?

पक्षीवृंद　　पक्षीगण　　पक्षीवर्ग

ख. 'वार्ता' शब्द का बहुवचन रूप कौन-सा है?

वार्तालाप　　वार्ताएँ　　वार्ताएं

2. सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।

क. झरनों से पानी बह रहे हैं।

ख. सदा सच बोलना चाहिए।

ग. विद्यार्थियों का दल आगे बढ़ते जा रहे थे।

घ. प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारी इस आदत को जानता है।

ङ. बचपन दोबारा लौटकर नहीं आते।

3. वाक्य-प्रयोग द्वारा इनका वचन स्पष्ट कीजिए।

क. आँसू ________

ख. प्राण ________

ग. गुच्छा ________

घ. समाचार ________

ङ. ईमानदारी ________

4. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए।

क. खरबूजा ________ ख. धातुएँ ________

ग. सड़क ________ घ. अध्यापकगण ________

ङ. पत्रिका ________ च. चिड़ियाँ ________

छ. चींटी ________ ज. मिठाइयाँ ________

झ. गुड़िया ________ ञ. कामनाएँ ________

5. दिए गए शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न लगाकर बहुवचन रूप बनाइए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. साधु ________

ख. घर ________

ग. घोड़ा ________

घ. चोर ________

ङ. नदी ________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. वचन किसे कहते हैं?

ख. एकवचन तथा बहुवचन में क्या अंतर है?

ग. वचन की पहचान किस प्रकार से की जा सकती है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

घ. पाँच ऐसे शब्द लिखिए जो सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

कार्यकलाप

संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों से वचन की पहचान बताते हुए पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

जाना-समझा

संबंधवाचक पुल्लिंग संज्ञा तथा संस्कृत के कुछ पुल्लिंग शब्द जिनके अंत में 'आ' आता है, दोनों रूपों में समान रहते हैं; जैसे—चाचा, दादा, मामा, काका, राजा, योद्धा, देवता, पिता, युवा आदि।

जैसे— मेरा चाचा आया है।
मेरे चाचा आए हैं।

16 कारक

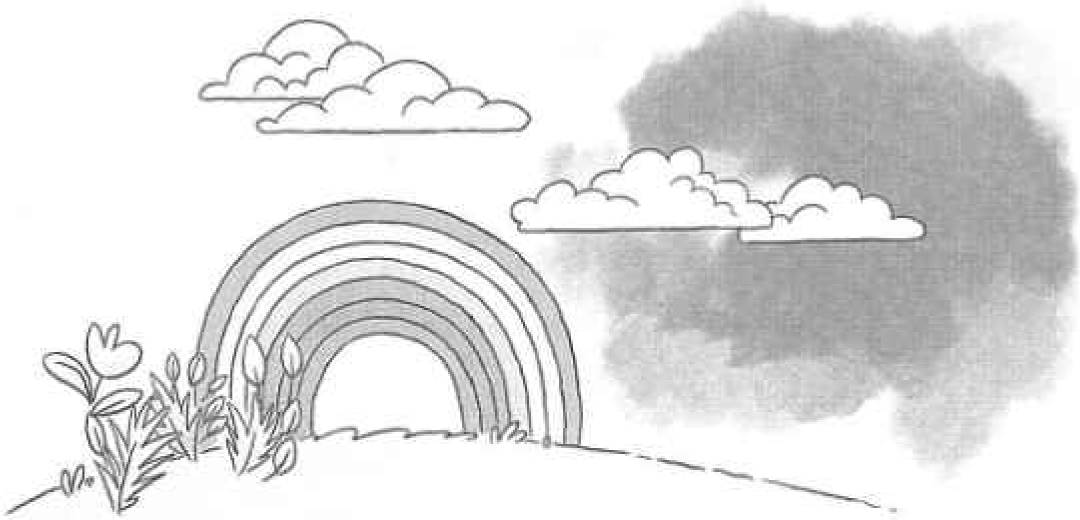

किस चित्रकार ने अपनी तूलिका से आसमान में इतने सुंदर इंद्रधनुष को रचा है!

उपर्युक्त पंक्ति में संज्ञा शब्द हैं—चित्रकार, तूलिका, आसमान और इंद्रधनुष।

संज्ञा शब्दों के साथ लगे चिह्न हैं—ने, से, में और को।

इन चिह्नों को लगाने से संज्ञा का रूप इस प्रकार बना—

चित्रकार ने

तूलिका से

आसमान में

इंद्रधनुष को

संज्ञा शब्दों के साथ चिह्न लगने से संज्ञा का जो रूप बना, वही रूप कारक कहलाता है।

> संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से स्पष्ट हो, उसे कारक कहते हैं।

विभक्तियाँ

संज्ञा के साथ लगे चिह्न विभक्तियाँ कहलाते हैं। इन्हें परसर्ग भी कहा जाता है।

कारक के भेद

हिंदी में कारक के आठ भेद हैं। इनके भेद तथा विभक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कारक	विभक्ति	पहचान
कर्ता	ने	क्रिया को करनेवाला
कर्म	को	क्रिया को प्रभावित करनेवाला
करण	से	क्रिया का साधन
संप्रदान	के लिए, को	जिसके लिए कार्य किया जाए
अपादान	से	जहाँ अलगाव हो
संबंध	का, के, की	जो संबंध दिखाए
अधिकरण	में, पर	जो आधार का काम करे
संबोधन	हे, अरे	जिससे किसी को पुकारा जाए

कर्ता कारक (विभक्ति 'ने')

संज्ञा या सर्वनाम का जो रूप क्रिया को करनेवाले के बारे में बताता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे—'मज़दूर ने घर बनाया' वाक्य में 'बनाया' क्रिया है। घर बनाने का काम मज़दूर ने किया। इसलिए, 'मज़दूर ने' कर्ता कारक है।

अन्य उदाहरण
- अध्यापिका ने श्यामपट पर लिखा।
- बच्चों ने तमाशा देखा।
- राजा ने प्रजा का ध्यान रखा।

कर्ता कारक की पहचान

उपर्युक्त वाक्यों में संज्ञा शब्द के साथ लगी 'ने' विभक्ति से कर्ता कारक की पहचान आसानी से हो रही है। परंतु, 'ने' परसर्ग अकर्मक क्रियाओं, वर्तमान एवं भविष्यतकाल में प्रयुक्त नहीं होता। कर्ता कारक की पहचान के लिए 'कौन' अथवा 'किसने' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर आए, वही कर्ता कारक होता है; जैसे—

- मज़दूर ने घर बनाया।

  किसने घर बनाया? मज़दूर ने
- माली पौधा लगा रहा है।

  कौन पौधा लगा रहा है? माली

कर्म कारक (विभक्ति 'को')

क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे—'धोबी कपड़ों को धोता है'। इस वाक्य में 'धोता है' क्रिया शब्द है। जिसे धोया जा रहा है, वह कर्म है।

कर्म कारक की विभक्ति 'को' है। इस प्रकार कर्म कारक है—कपड़ों को।

अन्य उदाहरण
- रवीना अक्षय को बुलाती है।
- बच्चों ने चोर को पकड़ा।
- बच्चे ने भिखारी को पैसे दिए।

कर्म कारक की पहचान

कर्म कारक की पहचान करने के लिए 'क्या' अथवा 'किसको' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- गुड़िया ने सेब खाया।
  गुड़िया ने क्या खाया? सेब — 'सेब' कर्म कारक है।
- शिकारी ने जाल बिछाया।
  शिकारी ने किसको बिछाया? जाल को — 'जाल' कर्म कारक है।

कभी-कभी एक वाक्य में दो कर्म भी होते हैं; जैसे—

- भाई ने बहन को झूला झुलाया।
  क्या झुलाया? झूला
  किसको झुलाया? बहन को

  इस वाक्य में झूला और बहन को दो कर्म हैं। एक विभक्तिरहित तथा दूसरा विभक्तिसहित।

करण कारक (विभक्ति 'से')

करण का अर्थ है 'साधन'। जिस साधन के द्वारा कर्ता क्रिया करता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—लकड़हारा कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता है। इस वाक्य में 'काटता है' क्रिया है और 'लकड़हारा' कर्ता है। लकड़हारा कुल्हाड़ी के द्वारा काटने की क्रिया करता है। अतः, 'कुल्हाड़ी से' करण कारक है।

अन्य उदाहरण
- बच्चों ने कागज़ से पतंग बनाई।
- जुलाहे ने सूत से कपड़ा बनाया।

करण कारक की पहचान

करण कारक की पहचान के लिए क्रिया के साथ 'किससे' अथवा 'किसके द्वारा' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- बच्ची गुड़िया से खेल रही है।
  किससे खेल रही है? गुड़िया से 'गुड़िया से' करण कारक है।

- मनीषा रेलगाड़ी से आई है।
  किसके द्‌वारा आई है? रेलगाड़ी के द्‌वारा 'रेलगाड़ी से' करण कारक है।

संप्रदान कारक (विभक्ति 'के लिए', 'को')

कर्ता जिसके लिए कुछ करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसका बोध करानेवाले संज्ञा रूप को संप्रदान कारक कहते हैं; जैसे—बच्चे ने भाई के लिए गेंद खरीदी।

गेंद भाई के लिए खरीदी गई है। इसलिए, 'भाई के लिए' संप्रदान कारक है।

अन्य उदाहरण
- मैंने हरियाली के लिए पौधा लगाया।
- सेठ ने मजदूरों के लिए कंबल खरीदे।
- माँ ने बेटी को आशीर्वाद दिया।

संप्रदान कारक की पहचान

संप्रदान कारक की पहचान के लिए 'किसको' अथवा 'किसके लिए' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- मैंने मंचन के लिए कहानी लिखी।
  कहानी किसके लिए लिखी गई? मंचन के लिए संप्रदान कारक
- पुजारी ने माँ को प्रसाद दिया।
  किसको प्रसाद दिया? माँ को संप्रदान कारक

अपादान कारक (विभक्ति 'से')

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने अथवा तुलना करने का भाव पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे—

- पेड़ से पत्ता गिरा।
  पत्ता पेड़ से अलग हुआ है। इसलिए, 'पेड़ से' अपादान कारक है।
- गंगा हिमालय से निकलती है।
  गंगा हिमालय से निकलकर अलग हो रही है। इसलिए, 'हिमालय से' अपादान कारक है।

अन्य उदाहरण
- अतुल विद्‌यालय से बाहर आया।
- विनय ने फ्रिज से पानी निकाला।

अपादान कारक की पहचान

अपादान कारक की पहचान के लिए क्रिया के साथ 'कहाँ से' अथवा 'किससे' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- आशिमा मनहर से अधिक प्रतिभाशाली है।
  किससे अधिक प्रतिभाशाली है? मनहर से (तुलना) अपादान कारक
- माली बाग से फल तोड़ता है।
  कहाँ से फल तोड़ता है? बाग से अपादान कारक

विशेष करण कारक तथा अपादान कारक दोनों की विभक्ति 'से' है। इसलिए, जब साधन रूप में हो, तब करण कारक तथा जब अलगाव रूप में हो, तब अपादान कारक होता है।

संबंध कारक (विभक्ति 'का', 'के', 'की')

जिस संज्ञा या सर्वनाम रूप से वाक्य में आए अन्य शब्दों से संबंध का बोध हो, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे—आदित्य मीता का भाई है।

इसमें 'मीता का' आदित्य से संबंध प्रकट हो रहा है। इसलिए, 'मीता का' संबंध कारक है।

सर्वनाम के साथ संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' के स्थान पर 'रा', 'रे', 'री' अथवा 'ना', 'ने', 'नी' हो जाती है।

अन्य उदाहरण
- हमारे पिताजी प्रतिदिन व्यायाम करते हैं।
- अपनी किताब पर लिखो।
- राजा ने विदूषक की तारीफ़ की।

संबंध कारक की पहचान

संबंध कारक की पहचान के लिए क्रिया शब्दों के साथ 'किसका', 'किसके' अथवा 'किसकी' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- मुझे वरुण के घर जाना है।
  किसके घर जाना है? वरुण के संबंध कारक वरुण के (का, के, की)
- तुम्हारी कमीज़ बहुत सुंदर है।
  किसकी कमीज़ सुंदर है? तुम्हारी संबंध कारक तुम्हारी (रा, रे, री)
- अपना ध्यान रखा करो।
  किसका ध्यान रखा करो? अपना संबंध कारक अपना (ना, ने, नी)

अधिकरण कारक (विभक्ति 'में', 'पर')

जिस संज्ञा रूप से क्रिया के आधार, समय और स्थान का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे—दुकान में कोई सामान नहीं है।

यहाँ 'दुकान में' ऐसा स्थान है, जहाँ सामान नहीं है। इसलिए, 'दुकान में' अधिकरण कारक है।

अन्य उदाहरण
- चूहा बिल में घुस गया। (स्थान)
- दिव्यांश छत पर पतंग उड़ा रहा है। (आधार)
- मुझे दोपहर में सोने की आदत है। (समय)

अधिकरण कारक की पहचान

अधिकरण कारक की पहचान के लिए 'कहाँ', 'किसपर' अथवा 'किसमें' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।
  कहाँ खेल रहे हैं? मैदान में   अधिकरण कारक—मैदान में
- घड़े में पानी ठंडा है।
  किसमें पानी ठंडा है? घड़े में   अधिकरण कारक—घड़े में
- तोता टहनी पर बैठा है।
  किसपर बैठा है? टहनी पर   अधिकरण कारक—टहनी पर

संबोधन कारक (विभक्ति 'हे', 'अरे')

संज्ञा के जिस रूप से किसी को बुलाने या संकेत करने का भाव पता चलता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं; जैसे—हे ईश्वर! मेरी विपदा हरो।

इसमें ईश्वर को पुकारा गया है। इसलिए, 'हे ईश्वर!' संबोधन कारक है।

अन्य उदाहरण
- हे ईश्वर! हमें सद्बुद्धि दो।
- अरे! जल्दी करो।
- हे साथियो! फैसला तुम्हारे हाथ में है।

संबोधन कारक की पहचान

संबोधन कारक की पहचान संबोधक चिह्न (!) से होती है। संबोधन कारक वाक्य में सबसे पहले लगता है तथा इसके बाद (!) चिह्न लगता है; जैसे—अरे! तुम अभी तक नहीं गए।

सबसे पहला शब्द 'अरे!' है, यही संबोधन कारक है।

हमने जाना

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से स्पष्ट हो, उसे कारक कहते हैं।
- संज्ञा के साथ लगे चिह्न विभक्तियाँ कहलाते हैं।
- कारक के आठ भेद हैं—कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक तथा संबोधन कारक।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कौन-सा कारक क्रिया को करनेवाले के बारे में बताता है?

कर्ता कारक　　　कर्म कारक　　　संप्रदान कारक

ख. 'चोर जेल से भाग गया।' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

करण कारक　　　अपादान कारक　　　संप्रदान कारक

2. रिक्त स्थानों को भरिए।

क. संज्ञा के साथ लगे चिह्न ____________ कहलाते हैं।

ख. जिस साधन के द्वारा कर्ता क्रिया करता है, उसे ____________ कारक कहते हैं।

ग. किसी वस्तु से अलग होने का भाव ____________ कारक में होता है।

घ. ____________ कारक से क्रिया के आधार का बोध होता है।

ङ. ____________ कारक वाक्य के आरंभ में लगता है।

3. वाक्यों में प्रयुक्त कारकों को पहचानकर उनके नाम लिखिए।

क. हे भगवान! इसे कब समझ में आएगी। ____________

ख. वर्तिका के भाई की शादी का उत्सव है। ____________

ग. विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता होगी। ____________

घ. मैंने मेहमान के लिए चाय बनाई। ____________

ङ. हमने केक खाया। ____________________

च. शिकारी जाल को बिछाता है। ____________________

4. निम्नलिखित गद्यांश को उचित परसर्ग लगाकर पूरा कीजिए।

जंगल ______ एक शिकारी ______ हिरणी ______ एक बच्चे ______ देखा। हिरणी बच्चे ______ खाना लेने गई थी। शिकारी बच्चे ______ उठाकर चल पड़ा। जब हिरणी ______ बच्चे ______ शिकारी ______ साथ देखा, तब वह शिकारी ______ रास्ता रोककर खड़ी हो गई। उसने आँखों ______ आँसू भरकर शिकारी ______ प्रार्थना की। ______ शिकारी! कृपया मेरे बच्चे ______ छोड़ दो। शिकारी ______ हिरणी ______ दया आ गई। उसने तुरंत उसके बच्चे ______ छोड़ दिया।

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कारक किसे कहते हैं?

ख. कारक के प्रमुख भेदों तथा उनकी विभक्तियों के नाम लिखिए।

ग. अपादान कारक और करण कारक में क्या अंतर है?

घ. कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

ङ. अधिकरण कारक किसे कहते हैं?

कार्यकलाप

कई मुहावरे ऐसे हैं, जिनमें कारकों की विभक्तियों का प्रयोग हुआ है; जैसे—

अंगारों पर लोटना	अंधे की लकड़ी
आस्तीन का साँप	ईंट का जवाब पत्थर से देना

इसी प्रकार के कुछ मुहावरों का संकलन कर अभ्यासपुस्तिका में लिखिए तथा प्रश्नवाचक शब्दों की सहायता से उनमें प्रयुक्त कारकों की पहचान कीजिए।

जैसे—अंधे की लकड़ी—किसकी लकड़ी? अंधे की—संबंध कारक।

जाना-समझा

विभक्तियाँ संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य में आए अन्य शब्दों से केवल संबंध दिखाती हैं। इसलिए, इनका कोई अर्थ नहीं होता।

17 सर्वनाम

राधिका संज्ञा शब्द है और 'तुम' शब्द राधिका के स्थान पर आया है। इसी प्रकार आशिमा संज्ञा शब्द है और 'आप' शब्द आशिमा के लिए आया है। संज्ञा के स्थान पर आनेवाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं।

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होनेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के प्रमुख छह भेद हैं—पुरुषवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम।

पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर आते हैं। अर्थात, वे सर्वनाम जो बोलनेवाला अपने लिए, सुननेवाले के लिए अथवा अन्य व्यक्तियों के लिए प्रयोग करता है, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—मैं, तुम, वह।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं—उत्तम पुरुषवाचक, मध्यम पुरुषवाचक तथा अन्य पुरुषवाचक।

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसमें केवल वक्ता होता है; जैसे—मैं, हम।

- मैं जा रहा हूँ।
- मैंने सारे फल-सब्जियाँ धो लिए हैं।
- मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता, श्रोता के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसमें वक्ता और श्रोता दोनों होते हैं; जैसे—तू, तुम, आप।

- मैंने तुमसे कहा था कि जल्दी आना।
- तुम हमेशा मुझसे कुछ छिपाते हो।
- मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगा।

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता जब श्रोता से किसी अन्य व्यक्ति के बारे में बात करता है, तब वहाँ अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम होता है; जैसे—वह, वे, यह, ये।

- मैंने तुम्हें बताया था कि वह किसी की नहीं सुनता।
- मैं, तुम और वे खेलने चलेंगे।
- मेरे, तुम्हारे और उनके सिवा किसी को नहीं पता।

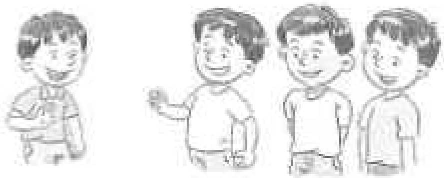

निजवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम, जो कर्ता अपने लिए प्रयोग करता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—आप।

- मैं औरों का नहीं अपना सोचता हूँ।
- अपने से बड़ों का सम्मान करो।
- मैं आप ही चला जाऊँगा।
- मैं सारे काम आप ही करता हूँ।

विशेष पुरुषवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम दोनों में 'आप' शब्द का प्रयोग होता है। पुरुषवाचक सर्वनाम में 'आप' आदर देने के लिए बहुवचन में प्रयुक्त होता है। परंतु, निजवाचक सर्वनाम कर्ता का बोधक है; जैसे—

आप खड़े क्यों हैं? कृपया बैठिए। (पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष)

मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा। (निजवाचक सर्वनाम)

निश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम, जो किसी पास या दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित रूप से बोध करवाते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- सेब मत खाना, वह खराब है।
- खिलौना उठा लो, यह तुम्हारा ही है।
- इसने ही डूबते बच्चे को बचाया था।
- उसने मेरा पर्स ढूँढ़कर दिया था।

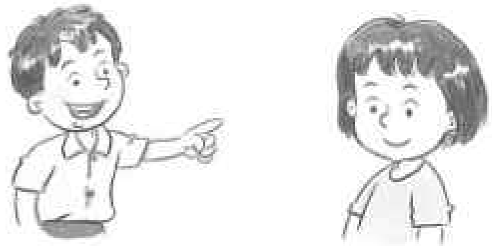

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम, जो किसी वस्तु या व्यक्ति का निश्चित रूप से बोध नहीं करवाते, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—कोई, कुछ।

- दूध में कुछ गिर गया है।
- जल्दी करो, कोई आ न जाए।
- मैंने सुबह से कुछ नहीं खाया।
- ऐसा लगता है वहाँ कोई खड़ा है।

सोचो और बताओ

कोई आया है, वह ही होगा।

निश्चयवाचक सर्वनाम ______ अनिश्चयवाचक सर्वनाम ______

संबंधवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम, जो वाक्य में आए दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित करते हैं, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—जो, सो।

- जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
- जो मिल जाए, वह तुम्हारा।
- इतना खाओ, जितना पचा सको।
- जहाँ तुम जाओगे, वहाँ मैं भी जाऊँगा।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम, जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—कौन, क्या।

- तुम क्या कह रहे थे?
- कौन है जो तुम्हें डरा रहा है?
- मेरा बस्ता कौन उठाएगा?
- आज खाने में क्या बनाया है?

हमने जाना

- संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होनेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
- सर्वनाम के प्रमुख छह भेद हैं—पुरुषवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. वक्ता, श्रोता के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

ख. वे सर्वनाम क्या कहलाते हैं, जिनका प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है?

निजवाचक सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम

2. **सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।**

क. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है।

ख. अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसी वस्तु का निश्चित रूप से बोध कराते हैं।

ग. प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

घ. 'आप' शब्द का प्रयोग केवल निजवाचक सर्वनाम में होता है।

ङ. संबंधवाचक सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम का भेद है।

3. बोलनेवाला → सुननेवाला → अन्य व्यक्ति = पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम को रेखांकित कर उसके भेद का नाम लिखिए।

क. मुझे पिताजी से बहुत सारे पैसे मिले हैं। ____________________

ख. आप शायद रास्ता भूलकर इधर आए हैं। ____________________

ग. हम तो छुट्टियाँ खत्म होते ही घर लौट जाएँगे। ____________________

घ. तुम सुंदर हो। परंतु, तुम्हारी बहन तुमसे अधिक सुंदर है। ____________________

ङ. उनकी चिंता मत करो। वे आ जाएँगे। ____________________

4. **रंगीन शब्द के सही भेद पर ✓ लगाइए।**

क. मुझे उनकी बहुत चिंता हो रही थी।	निजवाचक	अन्य पुरुषवाचक
ख. वह अपनी गाड़ी से घर चला गया।	निश्चयवाचक	अन्य पुरुषवाचक
ग. तुम मेरे बचपन के सखा हो।	मध्यम पुरुषवाचक	संबंधवाचक
घ. आपसे इतनी बड़ी भूल कैसे हो गई।	मध्यम पुरुषवाचक	निजवाचक
ङ. निराला द्वारा लिखी कविता यह ही है।	निश्चयवाचक	अनिश्चयवाचक

5. सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियों को दूर कर वाक्य पुन: लिखिए।

क. मुझको तुमसे एक बात करनी है। ______

ख. तुम कौन के बारे में पूछ रहे हो? ______

ग. तू तो कल दिल्ली जा रहे थे। ______

घ. उन्हीं मुझसे गृहकार्य करवाया है। ______

ङ. जो बोओगे, वही काटोगे। ______

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. सर्वनाम किसे कहते हैं?

ख. सर्वनाम के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ग. निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

घ. 'आप' सर्वनाम का पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम में प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाइए।

कार्यकलाप

इन सर्वनाम रूपों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

मैं	मुझे मेरा मुझसे मुझको
हम	हमारा हमें
तुम	तुम्हें तुम्हारा तुमसे
वह	उसे उसको उससे उनको उन्होंने
यह	इसने इसे इससे इन्होंने इन्हें इनको

जाना-समझा

सर्वनाम विकारी शब्द है। इसमें वचन तथा कारक के कारण तो परिवर्तन होता है, परंतु लिंग के कारण परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

मैं पढ़ रहा हूँ।	हम पढ़ रहे हैं।	(वचन)
मैंने यह काम नहीं किया।	मुझसे यह काम नहीं होगा।	(कारक)
वह खेलने गया है।	वह खेल रही है।	(लिंग)

18 विशेषण

बच्चों द्वारा बोले गए शब्द जन्मदिन, पार्टी, केक तथा उपहार संज्ञा शब्द हैं। इनसे पहले लगे शब्द ग्यारहवाँ, जबर्दस्त, स्वादिष्ट तथा ढेर क्रमशः इन संज्ञा शब्दों के बारे में कुछ विशेष बातें बता रहे हैं। इन्हें विशेषण कहते हैं।

वे शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

विशेष्य

विशेषण शब्द जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं; जैसे—

मधुर मेरा परम मित्र है।	मित्र	संज्ञा	(विशेष्य)	परम	विशेषता	(विशेषण)
पेड़ पर मीठे आम लगे हैं।	आम	संज्ञा	(विशेष्य)	मीठे	विशेषता	(विशेषण)

विशेषण के भेद

विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण तथा सार्वनामिक विशेषण।

गुणवाचक विशेषण

वे विशेषण शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष, दशा, रंग, आकार, स्थान, काल, स्वाद, स्पर्श आदि का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

गुण-दोष	दशा	रंग	आकार	स्थान	काल	स्वाद	स्पर्श
सच्चा	स्वस्थ	सुनहरा	सुडौल	दायाँ	अगला	खट्टा	कोमल
झूठा	वृद्धावस्था	धुँधला	नुकीला	बायाँ	पिछला	मीठा	कठोर
उचित	गीला	फीका	लंबा	उजाड़	प्राचीन	कड़वा	खुरदरा
अनुचित	सूखा	काला	गोल	ऊपरी	नवीन	कसैला	मुलायम
भला	अमीर	मटमैला	चौकोर	बाहरी	भूत	तीखा	चिकना
बुरा	गरीब	दूधिया	तिरछा	स्थानीय	वर्तमान	नमकीन	नरम
दुष्ट	गाढ़ा	चमकीला	तिकोना	देशीय	नया	बेस्वाद	ठंडा

- वृद्धावस्था में चलना कठिन होता है।
- मैं किसी भी अनुचित बात में साथ नहीं देता।
- उसका धुँधला-सा चित्र मेरी आँखों के आगे आ गया।
- वर्तमान युग में कंप्यूटर का प्रयोग अधिक हो रहा है।

संख्यावाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की संख्या-संबंधी विशेषता का बोध करवानेवाले विशेषण शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। संख्यावाचक विशेषण गणना, क्रम, आवृत्ति, समुदाय अथवा प्रत्येक का बोध करवाते हैं; जैसे—

गणनावाचक	क्रमवाचक	आवृत्तिवाचक	समुदायवाचक	प्रत्येक बोधक
एक	पहला	दुगुना	दोनों	प्रतिदिन
दो	पाँचवाँ	तिगुना	चारों	प्रतिवर्ष
पचास	पचासवाँ	चौगुना	दर्जनों	हरसाल
सौ	सौवाँ	सौगुना	छक्का	हर-एक

- मुझे सौ रुपये का नोट मिला।
- प्रतियोगिता में मैं पहले स्थान पर था।
- इस साल मुझे दुगुना लाभ मिला।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—निश्चित संख्यावाचक विशेषण और अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण

किसी वस्तु की निश्चित संख्या का बोध करवानेवाले विशेषण निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

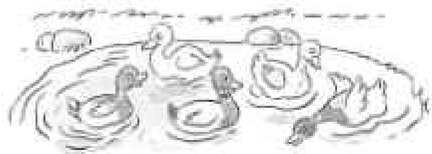

- तालाब में पाँच बतख तैर रही हैं।
- तुमने मुझे पचास रुपये कम दिए हैं।
- मार्च के महीने में इकतीस दिन होते हैं।

इन वाक्यों में 'बतख', 'रुपये' तथा 'दिन' की निश्चित संख्या बताई गई है। इसलिए पाँच, पचास और इकतीस निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

ऐसे विशेषण, जिनमें किसी वस्तु की संख्या अनिश्चित रहती है, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- टोकरी में कुछ फल रखे हैं।
- सब लोग मेरी बात ध्यान से सुनो।
- सड़क पर बहुत भीड़ लगी थी।

'कुछ', 'सब' तथा 'बहुत' शब्द से निश्चित संख्या का बोध नहीं हो रहा है। ये अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण

किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध करवानेवाले विशेषण परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- मैंने एक किलोग्राम दूध मँगवाया है।
- थोड़ा पानी पौधों में भी डाल दो।

यहाँ 'एक किलोग्राम' और 'थोड़ा' शब्द से क्रमशः दूध तथा पानी का परिमाण पता चलता है। इसलिए, ये परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के प्रमुख दो भेद हैं—निश्चित परिमाणवाचक विशेषण तथा अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

वे परिमाणवाचक विशेषण, जो संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित नाप-तौल संबंधी विशेषता को बताते हैं, निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- तुम्हारी कुरती दो मीटर कपड़े से बन जाएगी।

- तुम केवल दस मिलीलीटर दवाई लेना।
- मेरा हार चार तोले सोने का है।
- दस किलोग्राम आटे की यह थैली ले जाओ।

'दो मीटर', 'दस मिलीलीटर', 'चार तोले', 'दस किलोग्राम' ऐसे विशेषण हैं, जो निश्चित परिमाण बताते हैं। ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

वे विशेषण शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम का निश्चित परिमाण नहीं बताते, अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- बच्चों ने गमले में थोड़ी मिट्टी डाली।
- मेरे बाद सारी संपत्ति तुम्हारी ही है।
- चाय में बहुत चीनी है।

'थोड़ी', 'सारी' तथा 'बहुत' विशेषण नाप-तौल की अनिश्चित मात्रा को बता रहे हैं। ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

सार्वनामिक विशेषण

वे सर्वनाम, जो संज्ञा से पहले लगकर विशेषण का कार्य करते हैं, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- यह गुल्लक किसकी है?
- ये पत्थर कुछ ज्यादा चमकदार हैं।
- इस घड़ी में अभी भी चार बज रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह', 'ये' और 'इस' सर्वनाम हैं। ये क्रमशः गुल्लक, पत्थर तथा घड़ी संज्ञा शब्दों से पहले लगकर उनकी विशेषता बता रहे हैं। ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

> **विशेष** सर्वनाम, संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होनेवाले शब्द होते हैं। सर्वनाम जब संज्ञा से पहले लगकर विशेषण का कार्य करते हैं, तब सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं।

विशेषणों की तुलना तथा अवस्थाएँ

तुलना की दृष्टि से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ हैं—मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।

मूलावस्था इस अवस्था में किसी विशेषण के गुण-दोष की कोई तुलना नहीं होती; जैसे—
मैं सुंदर हूँ। मेरा गाँव संपन्न है।

उत्तरावस्था इसमें विशेषण द्‌वारा एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है। इस अवस्था में तुलना किन्हीं दो वस्तुओं के बीच में होती है तथा दोनों में से किसी एक को अधिक या कम बताया जाता है; जैसे—

- मेरी माँ मुझसे अधिक सुंदर है।
- मेरा गाँव पड़ोसी गाँव से कम संपन्न है।

उत्तमावस्था इस अवस्था में दो या दो से अधिक वस्तुओं की तुलना की जाती है। विशेषण द्‌वारा किसी एक वस्तु को सबसे अधिक या सबसे कम बताया जाता है; जैसे—

- मधु, रश्मि तथा उर्वशी में से उर्वशी के अंक सबसे अधिक आए हैं।
- सभी विद्‌यार्थियों में सौरभ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी है।

अवस्थाओं का निर्माण

विशेषण की विभिन्न अवस्थाओं का निर्माण 'तर' और 'तम' प्रत्यय लगाकर होता है।

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
महान	महानतर	महानतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
लघु	लघुत्तर	लघुत्तम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
कठिन	कठिनतर	कठिनतम

'अधिक', 'सबसे अधिक', 'कम' तथा 'सबसे कम' शब्दों को लगाकर भी विशेषणों की उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था बनाई जाती हैं; जैसे—

ऊँचा	अधिक ऊँचा	सबसे अधिक ऊँचा
लंबा	अधिक लंबा	सबसे अधिक लंबा
बुरा	कम बुरा	सबसे कम बुरा
चालाक	कम चालाक	सबसे कम चालाक

विशेषण शब्दों की रचना

कुछ विशेषण शब्द अपने मूल रूप में ही विशेषण होते हैं; जैसे—सुंदर, कोमल, अच्छा, बुरा, मोटा, ऊँचा, लंबा, कठोर, पतला आदि। परंतु, कुछ विशेषण शब्दों का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर किया जाता है।

संज्ञा शब्द से विशेषण की रचना

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
धर्म	धार्मिक	अर्थ	आर्थिक
दान	दानी	रोग	रोगी
शिक्षा	शिक्षित	भारत	भारतीय
चमक	चमकीला	मास	मासिक
ग्राम	ग्रामीण	नगर	नागरिक
गुण	गुणवान	लोभ	लोभी
गति	गतिमान	घर	घरेलू
कृपा	कृपालु	वर्ष	वार्षिक
धन	धनवान	प्रकृति	प्राकृतिक
मुख	मौखिक	नमक	नमकीन

सर्वनाम शब्द से विशेषण की रचना

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
कौन	कैसा	आप	आप-सा
वह	वैसा	यह	ऐसा
मैं	मेरा	तुम	तुम्हारा
जो	जैसा	हम	हमारा

क्रिया शब्द से विशेषण की रचना

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
बेचना	बिकाऊ	खेलना	खिलाड़ी
सजाना	सजावटी	बनाना	बनावटी
पढ़ना	पढ़ाकू	झगड़ना	झगड़ालू
भूलना	भुलक्कड़	मिलना	मिलनसार
ऊबना	उबाऊ	अड़ना	अड़ियल

अव्यय शब्द से विशेषण की रचना

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
आगे	अगला	नीचे	निचला
पीछे	पिछला	ऊपर	ऊपरी
सामने	सामनेवाला	अंदर	अंदरूनी
बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी

हमने जाना

- संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
- जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, विशेष्य कहलाते हैं।
- विशेषण के प्रमुख भेद चार हैं—गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण तथा सार्वनामिक विशेषण।
- विशेषणों की तीन प्रमुख अवस्थाएँ होती हैं—मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्दों की रचना की जाती है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. गुणवाचक विशेषण कौन-सा है?

मटमैला　　दुगुना　　बहुत

ख. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कौन-सा है?

थोड़ा घी　　सब लोग　　पचास बच्चे

2. सही जोड़े पर सही (✓) तथा गलत जोड़े पर गलत (×) का निशान लगाइए।

क. फीका रंग	गुणवाचक विशेषण	ख. धुँधला चित्र	सार्वनामिक विशेषण
ग. दर्जनों पक्षी	संख्यावाचक विशेषण	घ. सौ रुपये	परिमाणवाचक विशेषण
ङ. एक लीटर तेल	परिमाणवाचक विशेषण	च. ये बस्ते	सार्वनामिक विशेषण

3. विशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेदों के नाम लिखिए।

क. चलते-चलते नुकीला पत्थर पैर में लग गया। ____________

ख. नरम बिस्तर पर लेटते ही मुझे नींद आ गई। ____________

ग. मुझे विद्यालय में आए अभी दस दिन ही हुए हैं। ____________

घ. माँ ने बाज़ार से आधा किलोग्राम मिठाई मँगवाई। ____________

ङ. यह लड़की कल भी आई थी। ____________

4. **दिए गए शब्दों से विशेषणों का निर्माण कीजिए।**

क. क्रोध ____________ ख. अर्थ ____________

ग. बाहर ____________ घ. राष्ट्र ____________

ङ. पीछे ____________ च. खेलना ____________

छ. संसार ____________ ज. दया ____________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. विशेषण किसे कहते हैं? विशेष्य विशेषण से किस प्रकार भिन्न है?

ख. विशेषण के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ग. संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में क्या अंतर है?

घ. सर्वनाम कब सार्वनामिक विशेषण बन जाता है?

कार्यकलाप

विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए दिए गए चित्र का वर्णन कीजिए।

जाना-समझा

जो शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।

जैसे—बाग में बहुत सुंदर फूल लगा है।

फूल संज्ञा (विशेष्य)

सुंदर विशेषण

बहुत प्रविशेषण

आओ दोहराएँ 2 (पाठ 10 से 18 तक)

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**
   क. 'संतोष' शब्द में उपसर्ग कौन-सा है?
   सम्   सं   स
   ख. 'खिलौना' शब्द में मूल शब्द कौन-सा है?
   खिल   खिलौ   खेल

2. समास को पहचानकर समास का नाम लिखिए।
   क. यथाविधि ____________   ख. धीरे-धीरे ____________
   ग. स्वर्गप्राप्त ____________   घ. नीलगाय ____________

3. समास-विग्रह करके लिखिए।
   क. राजपुत्र ____________   ख. वनगमन ____________
   ग. सतनाजा ____________   घ. दाल-भात ____________

4. **दिए गए शब्दों में से संज्ञा शब्दों को छाँटकर सही स्थान पर लिखिए।**
   बुढ़ापा   किसान   नदी
   सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
   चौड़ाई   प्रेमचंद
   क. व्यक्तिवाचक संज्ञा ____________ ____________
   ख. जातिवाचक संज्ञा ____________ ____________
   ग. भाववाचक संज्ञा ____________ ____________

5. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए।
   क. नारी ____________   ख. अपना ____________
   ग. चतुर ____________   घ. बूझना ____________

6. दिए गए पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग रूप में परिवर्तित कीजिए।
   क. बाघ ____________   ख. पुजारी ____________
   ग. नौकर ____________   घ. बुद्धिमान ____________

7. दिए गए वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित कीजिए।
   क. मैं घूमने जा रहा हूँ। ____________________________
   ख. पत्ता झड़ गया है। ____________________________

8. **रंगीन शब्दों के बहुवचन रूप से रिक्त स्थानों को भरिए।**
   क. राधा के घर नई बहू आई है। गाँव की सभी ____________ उसे देखने आईं।
   ख. मैंने अपने हिस्से की मिठाई के साथ सभी के हिस्से की ____________ खाईं।

9. **दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**
   क. होश ____________________________
   ख. दल ____________________________

10. कारकों को पहचानकर लिखिए।
    क. दरजी ने सुई से तुरपाई की। ____________
    ख. विद्यार्थी विद्यालय से घर चले गए। ____________

11. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।
    क. मैं सारे काम आप ही करता हूँ। (पुरुषवाचक सर्वनाम/निजवाचक सर्वनाम)
    ख. लगता है कोई बाहर खड़ा है। (निश्चयवाचक सर्वनाम/अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

12. विशेषण शब्द बनाइए।
    क. शिक्षा ____________   ख. मास ____________
    ग. अर्थ ____________   घ. अंदर ____________

19 क्रिया

ऊपर दिए गए चित्र में कुछ काम अपने-आप हो रहे हैं; जैसे—

दिन निकल आया है। सूर्य चमक रहा है।

कुछ काम किए जा रहे हैं; जैसे—

बच्चे प्रार्थना कर रहे हैं। शिक्षिका बच्चों को देख रही हैं।

काम का करना या होना बतानेवाले शब्द ही क्रिया कहलाते हैं।

जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

एक वाक्य में कर्ता, कर्म और क्रिया का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

कर्ता जो क्रिया को करता है

कर्म जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है

क्रिया जो काम किया जा रहा है

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं—अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया।

अकर्मक क्रिया

अ + कर्मक, अर्थात बिना कर्म के। ऐसी क्रिया जिसमें न तो कर्म होता है और न ही कर्म की संभावना होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे—पक्षी उड़ रहे हैं।
↓ कर्ता ↓ क्रिया

इसमें कोई कर्म नहीं है। यह अकर्मक क्रिया है।

अन्य उदाहरण
- लड़कियाँ नाच रही हैं।
- बच्चा दौड़ रहा है।
- दादी माँ सो रही हैं।
- चोर भाग रहा है।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ

जीना	जागना	चमकना	रोना	बरसना	डरना
मरना	बैठना	दौड़ना	हँसना	नाचना	रखना
उछलना	तैरना	भागना	निकलना	उठना	खेलना
कूदना	ठहरना	अकड़ना	बढ़ना	सोना	उड़ना

सकर्मक क्रिया

स + कर्मक, अर्थात जो क्रिया कर्म के साथ होती है, वह सकर्मक क्रिया होती है। जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म की संभावना हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे—बच्चे झूला झूल रहे हैं।
↓ कर्ता ↓ कर्म ↓ क्रिया

इसमें 'झूला' शब्द कर्म है। क्रिया का फल बच्चे पर न पड़कर झूले पर पड़ रहा है, इसलिए यह सकर्मक क्रिया है।

अन्य उदाहरण
- किसान खेत जोतता है।
- दादी स्वेटर बुनती हैं।
- मधुरिमा घंटी बजाती है।
- पारुल पायल पहनती है।

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

यदि क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर कोई उत्तर मिलता है, तो क्रिया सकर्मक होगी अन्यथा अकर्मक।

जैसे— • तोता अमरूद खाता है।
क्या खाता है? अमरूद (कर्म) सकर्मक क्रिया
बच्चा खेलता है।
क्या खेलता है?...? कोई उत्तर नहीं अकर्मक क्रिया

• रिधिमा ने रजाई को उठाया।
किसे उठाया? रजाई को (कर्म) सकर्मक क्रिया

• गुब्बारे बच्चे को दो।
किसको दो? बच्चे को (कर्म) सकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है—एककर्मक क्रिया तथा द्विकर्मक क्रिया।

एककर्मक क्रिया

जिस क्रिया के साथ एक कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

• राम ने घड़ी पहनी।
(राम ने → कर्ता, घड़ी → कर्म, पहनी → क्रिया)

• मोहित गुड़िया लाया।
• मानस ने गुब्बारा खरीदा।
• कक्षाध्यापक ने पाठ सुना।

द्विकर्मक क्रिया

जिस क्रिया के साथ दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

• दादी ने बच्चों को कथा सुनाई।
(दादी ने → कर्ता, बच्चों को → कर्म, कथा → कर्म, सुनाई → क्रिया)

द्विकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया के साथ 'क्या' तथा 'किसे' दोनों शब्द लगाकर प्रश्न करें।

क्या सुनाई? कथा (मुख्य कर्म)
किसे सुनाई? बच्चों को (गौण कर्म)

एककर्मक क्रिया के अन्य उदाहरण

• कुम्हार घड़े बनाता है।
• बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।
• छत से पानी बह रहा है।
• माली ने पौधा लगाया।
• भविष्य पुस्तक पढ़ता है।
• सिपाही बंदूक उठाता है।

द्विकर्मक क्रिया के अन्य उदाहरण

- माँ ने बच्चे को केला दिया।
- राजा ने प्रजा को उपदेश दिया।
- सेठ ने भिखारी को कंबल दिया।
- डॉक्टर ने रोगी को इंजेक्शन दिया।
- रानी ने कारीगर को इनाम दिया।
- पुजारी ने भक्तजनों को प्रसाद बाँटा।

क्रिया का रूप परिवर्तन

क्रिया का रूप परिवर्तन लिंग, वचन तथा पुरुष के आधार पर होता है।

लिंग	राधिका जाती है।	राम जाता है।
वचन	वह दौड़ता है।	वे दौड़ते हैं।
पुरुष	मैं खेलता हूँ।	तुम खेलते हो।

हमने जाना

- जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।
- क्रिया के दो भेद हैं—अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।
- अकर्मक क्रिया में कोई कर्म नहीं होता। सकर्मक क्रिया कर्म के साथ होती है।
- सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं—एककर्मक क्रिया और द्विकर्मक क्रिया।
- एककर्मक क्रिया में एक कर्म तथा द्विकर्मक क्रिया में दो कर्म होते हैं।
- क्रिया का रूप परिवर्तन लिंग, वचन तथा पुरुष के आधार पर होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. क्रिया को करनेवाला क्या कहलाता है?

कर्म   कर्ता   कारक

ख. द्विकर्मक क्रिया में कितने कर्म होते हैं?

एक   दो   इनमें से कोई नहीं

2. सही कथन के आगे सही (✓) तथा गलत कथन के आगे गलत (×) का निशान लगाइए।

क. क्रिया से काम के करने या होने का पता चलता है।

ख. अकर्मक क्रिया में कर्म की संभावना होती है।

ग. एककर्मक क्रिया में एक कर्म होता है।

घ. क्रिया का रूप परिवर्तन नहीं होता।

ङ. क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है।

3. 'क्या' अथवा 'किसे' प्रश्न शब्द लगाकर क्रिया को पहचानकर बताएँ कि क्रिया अकर्मक है या सकर्मक।

क. पेड़ से आम गिरा।

प्रश्न ______ उत्तर ______ क्रिया ______

ख. अमन ने बस्ते को खोला।

प्रश्न ______ उत्तर ______ क्रिया ______

ग. माली देख रहा था।

प्रश्न ______ उत्तर ______ क्रिया ______

घ. फ़र्श पर कूड़ा बिखरा है।

प्रश्न ______ उत्तर ______ क्रिया ______

ङ. आसमान में उड़ती है।

प्रश्न ______ उत्तर ______ क्रिया ______

4. अकर्मक क्रिया को सकर्मक क्रिया में बदलिए।

क. बच्चा देख रहा है। ______

ख. दादी ने पुकारा। ______

ग. समीर ने तोड़ दिया। ______

घ. आदित्य डरता है। ______

ङ. रात में जलता है। ______

5. **एककर्मक क्रियाओं को बदलकर द्विकर्मक क्रियाएँ बनाइए।**

क. शिक्षक ने पुस्तक दी। ____________________

ख. भाई ने संदेश भेजा। ____________________

ग. सब्जीवाला सब्जी बेच रहा है। ____________________

घ. आदित्य ने नाच दिखाया। ____________________

ङ. धोबी इस्त्री कर रहा है। ____________________

6. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. क्रिया किसे कहते हैं? कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं?

ख. सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में क्या अंतर है?

ग. एककर्मक, द्विकर्मक क्रिया से किस प्रकार भिन्न है?

कार्यकलाप

कुछ क्रियाएँ सकर्मक तथा अकर्मक दोनों होती हैं। क्रिया सकर्मक है या अकर्मक, इसका निर्णय उनके प्रयोग पर निर्भर करता है;

जैसे—

बूँद-बूँद से कलश भरता है। अकर्मक क्रिया

राजीव कलश भरता है। सकर्मक क्रिया

मन ललचा रहा है। अकर्मक क्रिया

मिठाई देखकर मन ललचा रहा है। सकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाओं को पहचानकर उनसे सकर्मक तथा अकर्मक क्रियायुक्त वाक्य बनाइए।

जाना-समझा

कुछ क्रियाओं का कर्म नहीं होता, परंतु उनमें कर्म की संभावना होती है। ऐसी क्रियाएँ सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे—

मधुर पीता है।

संभावना है कि मधुर पानी, जूस, दूध अथवा शरबत पीता है। इसलिए, यह सकर्मक क्रिया है।

20 काल

उपर्युक्त चित्र में शशांक के जीवन की तीन अवस्थाएँ दिखाई गई हैं।

आज	कल (बीता हुआ)	कल (आनेवाला)
आज वे युवा खिलाड़ी हैं।	कल वे छोटे बच्चे थे।	वे कल वृद्‌ध हो जाएँगे।
उन्हें फुटबॉल खेलना पसंद है।	उन्हें कहानियाँ पढ़ना पसंद था।	उन्हें घूमना पसंद होगा।
उनके बहुत सारे मित्र हैं।	वे सिर्फ़ शुभम से बात करते थे।	वे सबसे मिलकर रहेंगे।

इन तीनों अवस्थाओं से तीन भिन्न समय अंतराल में होनेवाले कार्यों के बारे में पता चलता है। यह समय ही काल है।

क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद

काल के प्रमुख तीन भेद हैं—वर्तमानकाल, भूतकाल एवं भविष्यतकाल।

वर्तमानकाल

वर्तमानकाल, अर्थात आज। क्रिया के जिस रूप से हमें पता चले कि कार्य अभी हो रहा है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं। रहा है, रही है, रहे हैं आदि क्रिया शब्द वर्तमानकाल के सूचक हैं।

क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का पता चले, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे—

- आसमान से पानी बरस रहा है।
- आदित्य निबंध लिख रहा है।
- बादल छाए हुए हैं।
- मालिन पौधों को पानी दे रही है।
- मज़दूर घर बना रहे हैं।
- गौरव साँप को देखकर भाग रहा है।

विशेष कुछ घटनाएँ, जो सदा नियमपूर्वक होती रहती हैं तथा जो सदा सत्य होती हैं, उन्हें सदा वर्तमानकाल में प्रयोग करते हैं; जैसे—

» सूर्य पूर्व में उदय होता है।
» सूर्य पश्चिम में अस्त होता है।
» पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है।
» आत्मा अजर-अमर है।
» बच्चे मन के सच्चे होते हैं।
» चिंता चिता के समान है।

भूतकाल

भूतकाल, अर्थात बीता हुआ कल। क्रिया के जिस रूप से हमें पता चले कि कार्य बीते हुए समय में हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं। था, थी, थे आदि क्रिया शब्द भूतकाल के बारे में बताते हैं।

क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

जैसे—

- रविवार को विद्यालय में छुट्टी थी।
- हम शहर से बाहर पिकनिक मनाने गए थे।
- इस पेड़ पर एक पका आम लगा था।
- मेरे जन्मदिन पर अर्नब उपहार लाया था।
- हमने स्वतंत्रता दिवस बहुत उत्साह से मनाया था।
- मालविका ने सुंदर चित्र बनाया था।

भविष्यतकाल

भविष्यतकाल, अर्थात आनेवाला समय। क्रिया के जिस रूप से हमें पता चले कि कार्य आनेवाले समय में होगा, उसे भविष्यतकाल कहते हैं। गा, गी, गे आदि क्रिया शब्द भविष्यतकाल के सूचक हैं।

क्रिया के जिस रूप से कार्य के आनेवाले समय में होने का बोध हो, उसे भविष्यतकाल कहते हैं।

जैसे—

- मैं शीघ्र ही तुमसे मिलने आऊँगा।
- कुछ दिनों में विमान सेवा शुरू हो जाएगी।
- वर्षा के बाद आकाश में इंद्रधनुष दिखाई देगा।
- सरदियों में मैं अपने लिए नए स्वेटर खरीदूँगी।
- मिलने पर तुम्हें एक मज़ेदार किस्सा सुनाएँगे।

हमने जाना

- क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।
- काल के प्रमुख तीन भेद हैं—वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यतकाल।
- क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का पता चले, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से उसके आनेवाले समय में होने का पता चले, उसे भविष्यतकाल कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. वर्तमानकाल का वाक्य कौन-सा है?

मैं पढ़ रहा हूँ।   मैं पढ़ रहा था।   मैं पढ़ूँगा।

ख. 'कल वर्षा होगी' में कौन-सा काल है?

वर्तमानकाल   भूतकाल   भविष्यतकाल

2. काल को पहचानकर लिखिए।

क. मेरा घर पाँचवीं मंज़िल पर है। ____________________

ख. माँ बच्चे को पढ़ा रही हैं। ____________________

ग. परीक्षा के दिनों में नींद बहुत आती है। ____________________

घ. मैं अपने मित्र से मिलने उसके घर जाऊँगा। ______________________

ङ. यह कमीज़ तुमने कहाँ से खरीदी? ______________________

3. दिए गए वाक्यों को भूतकाल में बदलकर लिखिए।

क. आकाश में बादल छाए हैं। ______________________

ख. कोने में पुस्तकों का ढेर लगा है। ______________________

ग. वर्षा होने पर गली में पानी भर जाएगा। ______________________

घ. राधिका स्कूल नहीं जा पाएगी। ______________________

ङ. मीशा ने मुझे घर बुलाया है। ______________________

4. दिए गए वाक्यों को भविष्यतकाल में बदलकर लिखिए।

क. मेरे पास एक कार थी। ______________________

ख. मेरे दो मित्र हैं। ______________________

ग. कल विद्‌यालय बंद था। ______________________

घ. आमिर ने नई गाड़ी खरीदी है। ______________________

ङ. सभी चाय पी रहे हैं। ______________________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. काल किसे कहते हैं? काल के कितने भेद हैं?

ख. वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यतकाल को उदाहरणों द्‌वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए चित्र का वर्णन वर्तमानकाल में कीजिए।

____

____

____

____

जाना-समझा

संकेतवाचक वाक्यों में वर्तमानकाल का प्रयोग होता है; जैसे—जब गीदड़ की मौत आती है, तब वह शहर की ओर भागता है।

21 अविकारी शब्द—क्रियाविशेषण

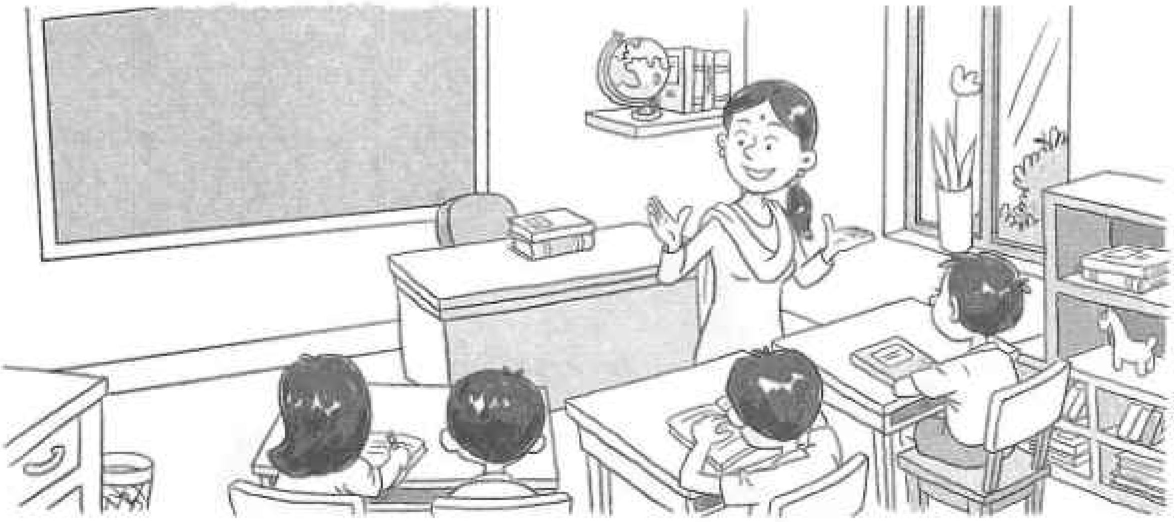

विद्यार्थी ध्यान दें।

• शिक्षिका धीरे-धीरे पढ़ा रही हैं।	लिंग	स्त्रीलिंग
• लड़के धीरे-धीरे पढ़ रहे हैं।	लिंग	पुल्लिंग
• लड़का धीरे-धीरे लिख रहा है।	वचन	एकवचन
• लड़के धीरे-धीरे लिख रहे हैं।	वचन	बहुवचन
• शिक्षिका ने धीरे-धीरे बात समझाई।	कारक	कर्ता कारक
• बच्चों को धीरे-धीरे बात समझ आई।	कारक	कर्म कारक
• मैं धीरे-धीरे बोलूँगा।	पुरुष	उत्तमपुरुष
• तुम धीरे-धीरे लिखना।	पुरुष	मध्यमपुरुष

कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक तथा पुरुष के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं आता। उपर्युक्त वाक्यों में 'धीरे-धीरे' ऐसा ही शब्द है। ऐसे शब्दों को अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं।

> जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक तथा पुरुष के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

अविकारी शब्दों के भेद

अविकारी शब्दों के प्रमुख चार भेद हैं—क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक।

क्रियाविशेषण

वे अविकारी शब्द, जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

क्रियाविशेषण क्रिया के घटित होने की रीति, काल, स्थान तथा परिमाण को बताते हैं; जैसे—

- ओले अचानक गिरने लगे। रीति
- हम प्रतिदिन विद्यालय जाते हैं। काल
- बच्चा हाथ छुड़ाकर पीछे भागा। स्थान
- तुम्हें समझाया था, कम बोला करो। परिमाण

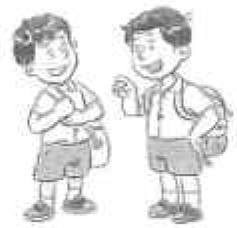

'अचानक', 'प्रतिदिन', 'पीछे' तथा 'कम' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। ये क्रियाविशेषण हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—रीतिवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक तथा परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

प्रमुख रीतिवाचक क्रियाविशेषण

ऐसे, वैसे, मानो, अचानक, अनायास, ध्यानपूर्वक, अकस्मात, इसलिए, अवश्य, धीरे, तेज़, शायद, एकाएक, निस्संदेह, क्यों, साहस, चुपचाप आदि।

उदाहरण

- कल उससे अकस्मात मुलाकात हो गई।
- शुतुरमुर्ग तेज़ दौड़ रहा था।
- ध्यानपूर्वक काम किया करो।
- वर्षा की बूँदें एकाएक गिरने लगीं।
- वह चुपचाप मेरी बात सुनती रही।

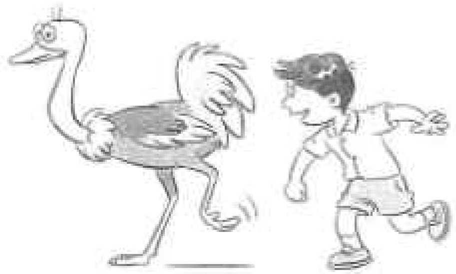

पहचान का तरीका

रीतिवाचक क्रियाविशेषण की पहचान के लिए क्रिया के साथ 'कैसे' शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर प्राप्त होता है, वही रीतिवाचक क्रियाविशेषण होता है।

जैसे—अनायास ही मेरी नींद खुल गई।

प्रश्न—नींद कैसे खुल गई? उत्तर—अनायास

'अनायास' रीतिवाचक क्रियाविशेषण है।

कालवाचक क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

प्रमुख कालवाचक क्रियाविशेषण

आज, कल, परसों, अब, जब, तब, कब, अभी, आजकल, नित्य, सदा, निरंतर, लगातार, दिनभर, बार-बार, बहुधा, प्रतिदिन, कई बार, हर बार, पहले आदि।

उदाहरण
- अब तुम परसों आना।
- मुझे तुम्हारा पत्र अभी मिला है।
- मैं **प्रतिदिन** टहलता हूँ।
- वह हर बार प्रथम आता है।
- वह बहुधा प्रश्न करता है।

पहचान का तरीका

क्रिया के साथ 'कब' लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर प्राप्त हो, वह कालवाचक क्रियाविशेषण होता है।
जैसे—वह नित्य तुम्हें याद करता है।

प्रश्न—कब याद करता है? उत्तर—नित्य

'नित्य' कालवाचक क्रियाविशेषण है।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने के स्थान के बारे में बताते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

प्रमुख स्थानवाचक क्रियाविशेषण

बाहर, भीतर, साथ, यहाँ, वहाँ, दाहिने, बाएँ, इधर-उधर, किधर, कहाँ, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, चारों ओर, आरपार, सर्वत्र आदि।

उदाहरण
- वह अपने मित्र से मिलने भीतर गया है।
- उसने खड़े होकर चारों ओर नज़र दौड़ाई।
- बाहर बारिश हो रही है।
- सर्वत्र अंधकार छाया हुआ है।

पहचान का तरीका

क्रिया के साथ 'कहाँ' लगाकर प्रश्न करें।
जैसे—बच्चा इधर भागा आ रहा है।

प्रश्न—कहाँ भागा आ रहा है? उत्तर—इधर

'इधर' स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

वे क्रियाविशेषण, जो क्रिया के परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

प्रमुख परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

सर्वथा, भारी, बहुत, बड़ा, अत्यंत, पूर्णतया, ज़रा, कुछ, थोड़ा, कम, अधिक, बस, ठीक, इतना, कितना, उतना, थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी, तिल-तिल, लगभग आदि।

उदाहरण
- वह संदूक बहुत भारी है।
- अब तुम थोड़ा आराम करो।
- गरमी में अधिक पानी पियो।
- घड़ा लगभग खाली हो गया।
- इस प्रश्न का उत्तर पूर्णतया गलत है।

पहचान का तरीका

क्रिया के साथ 'कितना' लगाकर प्रश्न करें।

जैसे—इस प्रकार का व्यवहार सर्वथा अनुचित है।

प्रश्न—कितना अनुचित है? उत्तर—सर्वथा।

'सर्वथा' परिमाणवाचक क्रियाविशेषण है।

हमने जाना

- अविकारी शब्द वे शब्द होते हैं, जिनमें लिंग, वचन, कारक तथा पुरुष के आधार पर कोई विकार नहीं आता।
- क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।
- क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं।
- क्रियाविशेषण के चार भेद हैं—रीतिवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक तथा परिमाणवाचक।
- रीतिवाचक क्रियाविशेषण क्रिया के होने की रीति का बोध कराते हैं।
- कालवाचक क्रियाविशेषण क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं।
- स्थानवाचक क्रियाविशेषण क्रिया के होने के स्थान के बारे में बताते हैं।
- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण क्रिया के परिमाण का बोध कराते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. 'वह अपनी बात से एकाएक मुकर गया।' रंगीन शब्द कौन-सा क्रियाविशेषण है?

   कालवाचक रीतिवाचक परिमाणवाचक

   ख. 'काँच के आरपार दिखाई दे रहा है।' रंगीन शब्द कौन-सा क्रियाविशेषण है?

   परिमाणवाचक रीतिवाचक स्थानवाचक

2. **क्रियाविशेषणों को रेखांकित कर उनके भेदों के नाम लिखिए।**

   क. वह मेरे साथ चुपचाप चलता रहा। ____________

   ख. मैं दिनभर तुम्हारा इंतज़ार करता रहा। ____________

   ग. तुम्हारे दाहिने एक विशाल घर है। ____________

   घ. यह उत्तर पूर्णतया सही है। ____________

   ङ. इतना सामान तुम अभी उठा लो। ____________

   च. मैं प्रतिदिन पार्क जाता हूँ। ____________

3. **दिए गए क्रियाविशेषणों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।**

   क. अनायास ____________

   ख. निस्संदेह ____________

   ग. बहुधा ____________

   घ. आजकल ____________

   ङ. आगे ____________

   च. सर्वथा ____________

4. **उचित क्रियाविशेषणों से रिक्त स्थानों को भरिए।**

   क. मैंने सुराही ____________ रख दी है।

   ख. उसने मुझे देखा और ____________ चला गया।

ग. तुम मेरे पत्र का उत्तर ____________ देना।

घ. वह कुरसी पर ____________ बैठ गया।

ङ. मेरी बात सुनकर वह ____________ हँसा।

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अविकारी शब्द किसे कहते हैं?

ख. क्रियाविशेषण किसे कहते हैं?

ग. रीतिवाचक और कालवाचक क्रियाविशेषण में क्या अंतर है?

घ. स्थानवाचक तथा परिमाणवाचक क्रियाविशेषण में उदाहरण द्वारा अंतर स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

नीचे दी गई तालिका पूरी कीजिए।

	प्रमुख भेद	पहचान के शब्द	कुछ उदाहरण
क्रियाविशेषण			

जाना-समझा

विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, परंतु क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं; जैसे—

अनुराग सुंदर लड़का है। (विशेषण)

अनुराग सुंदर लिखता है। (क्रियाविशेषण)

22 संबंधबोधक

रंगीन शब्द संज्ञा शब्दों—'मैदान', 'ऋचा' तथा 'बस'—का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ रहे हैं। ये संबंधबोधक शब्द कहलाते हैं।

> वे अविकारी शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं।

जैसे—

- घर के अंदर घना अँधेरा था।
- चोर पेड़ के **पीछे** छिप गया।
- पैसे के बिना कोई नहीं पूछता।
- गरमी के मारे बुरा हाल है।

'अंदर', 'पीछे', 'बिना' तथा 'मारे' शब्द संज्ञा का संबंध अन्य शब्दों से बता रहे हैं। ये संबंधबोधक शब्द हैं। संज्ञा के पश्चात विभक्ति का प्रयोग भी होता है। संज्ञा के बाद अधिकतर 'के' विभक्ति आती है, परंतु कहीं-कहीं 'से' तथा 'की' विभक्ति का प्रयोग भी होता है।

प्रमुख संबंधबोधक शब्द

कालवाचक	पूर्व पश्चात आगे पीछे पहले बाद
स्थानवाचक	ऊपर नीचे अंदर बाहर भीतर निकट
दिशावाचक	आरपार आसपास ओर तरफ़ पार
साधनवाचक	द्वारा सहारे माध्यम जरिए

हेतुवाचक	लिए हेतु वास्ते खातिर कारण मारे
विरोधवाचक	विपरीत विरुद्ध उलटे खिलाफ़
तुलनावाचक	अपेक्षा आगे सामने
संगवाचक	साथ संग सहचर समेत सहित
समानवाचक	समान तरह अनुसार योग्य लायक
विषयवाचक	बाबत विषय नाम भरोसे

कुछ अन्य उदाहरण

- मेरे घर के पीछे एक बगीचा है।
- बच्चे पेड़ के ऊपर चढ़े हुए थे।
- नदी के पास कछुआ बैठा था।
- वृद्ध छड़ी के सहारे चल रहा था।
- घर बनाने के वास्ते ऋण चाहिए।
- अक्षय के खिलाफ़ कुछ मत कहना।
- अपनी बहन की अपेक्षा तुम होशियार हो।
- आप परिवार के साथ विवाह समारोह में आना।
- आदित्य के लायक कोई नौकरी बताना।
- मैं सेठजी के भरोसे बैठा हूँ।
- बदबू के मारे खड़ा नहीं हुआ जाता।

हमने जाना

- संबंधबोधक संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं।
- संज्ञा के बाद अधिकतर 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'विद्यालय के निकट मेरा घर है।' इसमें संबंधबोधक कौन-सा है?

विद्यालय निकट मेरा

ख. 'नदी के पार नई फैक्टरी खुली है।' इसमें संबंधबोधक कौन-सा है?

पार नई फैक्टरी

2. रिक्त स्थानों में सही संबंधबोधक शब्द भरिए।

क. पहाड़ के ____________ बर्फ़ जमी हुई थी।

ख. उसने सीढ़ी के ____________ दीवार पार कर ली।

ग. मैंने ऋचा के ____________ नई घड़ी खरीदी है।

घ. मुझे नई योजना के ____________ कुछ पूछना है।

ङ. हवा के ____________ जीवन संभव नहीं।

3. दिए गए संबंधबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए।

क. पश्चात ____

ख. तरफ़ ____

ग. माध्यम ____

घ. विरुद्ध ____

ङ. भरोसे ____

च. आरपार ____

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संबंधबोधक अव्यय किसे कहते हैं?

ख. संबंधबोधक शब्दों को वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

'की' तथा 'से' विभक्ति के साथ संबंधबोधक का प्रयोग करके वाक्य लिखिए; जैसे—

- नित्या की अपेक्षा तुम ज्यादा समझदार हो।
- वर्तिका से पहले तुम्हें आना चाहिए।

जाना-समझा

कुछ संबंधबोधक शब्द क्रियाविशेषण भी होते हैं। जब ये संज्ञा के साथ प्रयुक्त होते हैं, तब ये संबंधबोधक होते हैं तथा जब ये क्रिया की विशेषता बताते हैं, तब ये क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे—

- अंदर आओ। (क्रियाविशेषण)
- घर के अंदर आओ। (संबंधबोधक)

23 समुच्चयबोधक

उपर्युक्त संवादों में आए रंगीन शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। ऐसे शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़नेवाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

जैसे—

- राम और श्याम सगे भाई हैं। (शब्दों)
- चार और चार आठ होते हैं।
- आकाश में बादल छाए और वर्षा होने लगी। (वाक्यों)
- मेहनत से पढ़ लो नहीं तो फेल हो जाओगे। (वाक्यांश)

इन वाक्यों में 'और', 'तो' द्वारा शब्दों और वाक्यों को जोड़ा गया है। ये समुच्चयबोधक हैं।

समुच्चयबोधक के कार्य

समुच्चयबोधक निम्नलिखित कार्य करता है—

1. दो वाक्यों को जोड़ता है; जैसे—
   - बच्चों ने मोर का नाच देखा और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाईं।
   - श्याम ने पुस्तक उठाई और पाठ पढ़ने लगा।

2. दो वाक्यों या शब्दों में विकल्प बताता है; जैसे—
   - आप चाय लेंगे या कॉफ़ी?
   - तुम मुझे रुपये आज दोगे अथवा कल?

3. दो वाक्यों में विरोध दिखाता है; जैसे—
- तुम ईमानदार हो, परंतु वह नहीं।
- मैं छाता लेकर आया था, लेकिन बारिश नहीं हुई।

4. दो वाक्यों में परिणाम बताता है; जैसे—
- तुम नहीं आए, क्योंकि तुम मुझसे नाराज़ थे।
- वह बीमार थी, इसलिए विद्यालय नहीं आई।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं—समानाधिकरण समुच्चयबोधक और व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक

मुख्य वाक्यों को जोड़नेवाले समुच्चयबोधक समानाधिकरण समुच्चयबोधक होते हैं; जैसे—
- रानी की वाव की कलात्मकता एवं भव्यता देख मैं चकित रह गया।
- तुम्हारे पापा से मिलना चाहता था, परंतु मिल नहीं पाऊँगा।

कुछ प्रमुख समानाधिकरण समुच्चयबोधक

और	एवं	तथा	अथवा	परंतु	किंतु
लेकिन	मगर	बल्कि	इसलिए	अतः	या
कि	चाहे	पर	वरन	सो	अतएव

व्यधिकरण समुच्चयबोधक

व्यधिकरण समुच्चयबोधक वे समुच्चयबोधक होते हैं, जो मुख्य वाक्य के साथ एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं; जैसे—
- यदि तुम चाहो, तो मैं पढ़ने में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।
- मैं ये प्रश्न हल नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि ये बहुत कठिन हैं।

कुछ प्रमुख व्यधिकरण समुच्चयबोधक

क्योंकि	जोकि	इसलिए कि	कि	चाहे-परंतु	ताकि
जो-तो	यदि-तो	यद्यपि-तथापि	अर्थात	याने	मानो

हमने जाना

- दो शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़नेवाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
- समुच्चयबोधक वाक्यों को जोड़ने, विकल्प, विरोध अथवा परिणाम दिखाने का कार्य करते हैं।
- समुच्चयबोधक के दो भेद हैं—समानाधिकरण समुच्चयबोधक और व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. मुख्य वाक्यों को जोड़नेवाले समुच्चयबोधक कौन-से होते हैं?

   समानाधिकरण   व्यधिकरण   इनमें से कोई नहीं

   ख. समानाधिकरण समुच्चयबोधक कौन-सा है?

   अर्थात   ताकि   तथा

2. समुच्चयबोधक शब्दों का प्रयोग कर रिक्त स्थानों को भरिए।

   क. मैं तुम्हें बताना चाहता था, ____________ बता नहीं पाया।

   ख. आकाश में बादल छाए हुए थे, ____________ मैंने छाता ले लिया था।

   ग. यदि कल भी बारिश आई, ____________ मैं नहीं आऊँगा।

   घ. परिश्रम करो, ____________ सफलता मिल सके।

   ङ. मैंने उसे बहुत समझाया, ____________ वह नहीं माना।

   च. मैं, तृप्ति ____________ आकाश साथ-साथ जाएँगे।

3. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   क. समुच्चयबोधक किसे कहते हैं?

   ख. समुच्चयबोधक के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

कार्यकलाप

विद्‌यार्थी किसी समाचार-पत्र अथवा पत्रिका से एक गद्‌यांश काटकर अपनी अभ्यासपुस्तिका में चिपकाएँगे। उस गद्‌यांश में आनेवाले सभी समुच्चयबोधक शब्दों को रेखांकित करेंगे तथा उनसे एक-एक वाक्य बनाएँगे।

जाना-समझा

इसलिए समुच्चयबोधक वहाँ प्रयोग होता है, जहाँ परिणाम दिखाया जाता है। इसलिए कि समुच्चयबोधक वहाँ प्रयोग होता है, जहाँ कारण दिखाया जाता है।

- आज वर्षा होगी, इसलिए मैं बाहर नहीं जाऊँगा।
- मैं उसका समर्थन करता हूँ, इसलिए कि वह सदा सच बोलती है।

24 विस्मयादिबोधक

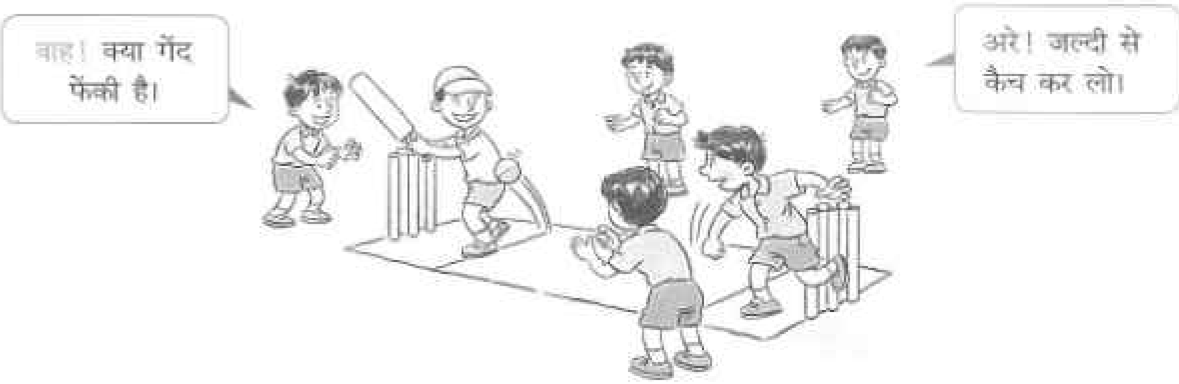

रंगीन शब्द वाह! तथा अरे! वक्ता द्वारा व्यक्त भावों को सूचित कर रहे हैं। इन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। ये केवल भावों की तीव्रता की अभिव्यक्ति करते हैं। वाक्य से इनका कोई संबंध नहीं होता। इनके प्रयोग के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।

> ऐसे अविकारी शब्द जो हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को व्यक्त करते हैं, परंतु वाक्य से उनका कोई संबंध नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

कुछ प्रमुख विस्मयादिबोधक

हर्षबोधक	वाह! अहा! शाबाश! धन्य!
शोकबोधक	आह! हाय! हा-हा! त्राहि-त्राहि!
आश्चर्यबोधक	वाह! हैं! क्या! अरे! ओहो!
प्रशंसाबोधक	वाह! अच्छा! शाबाश! ठीक! हाँ-हाँ!
घृणाबोधक	अरे! दुर्! धिक्! हट! छिः!
स्वीकारबोधक	जी! हाँ जी! अच्छा! हाँ! ठीक!
चेतावनीबोधक	सावधान! खबरदार! रुको!
संबोधनबोधक	अरे! अजी! सुनो! हे!

उदाहरण

- वाह! तुमने मैच जीत लिया।
- हाय! सुनकर हृदय फटा जाता है।
- क्या! सुमित कक्षा में प्रथम आया है?
- शाबाश! इसी प्रकार अच्छे कार्य करना।
- छिः! कितनी बदबू है।
- जी! मैं समय पर पहुँच जाऊँगा!
- सावधान! आगे रास्ता बंद है।
- अजी! सुनती हो, मधुर आया है।

हमने जाना

- विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द होते हैं।
- ये हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को व्यक्त करते हैं।
- इनके बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'अहा! मैं कक्षा में प्रथम आया हूँ।' इसमें विस्मयादिबोधक शब्द कौन-सा है?

अहा　　　　कक्षा　　　　प्रथम

ख. 'छिः! कितनी गंदगी फैला रखी है।' इसमें विस्मयादिबोधक शब्द कौन-सा है?

गंदगी　　　　कितनी　　　　छिः

2. विस्मयादिबोधक शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ________ लगता है कहीं चूहा मरा है।

ख. ________ आप बिलकुल ठीक कहते हैं।

ग. ________ सड़क पर ट्रैफिक बहुत है।

घ. ________ मुझे कुछ रुपये चाहिए।

ङ. ______________ आज तुमने माता-पिता का नाम रोशन कर दिया।

च. ______________ मैं लुट गया। चोर मेरा सारा धन ले गए।

छ. ______________ तुमने नई कार ली है।

3. दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. धन्य! ______________

ख. ओहो! ______________

ग. रुको! ______________

घ. दुर्! ______________

ङ. अच्छा! ______________

च. वाह! ______________

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. विस्मयादिबोधक किसे कहते हैं?

ख. विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

ग. किन्हीं पाँच विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

कार्यकलाप

विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मित्र के साथ हुए संवाद को लिखिए।

जाना-समझा

ऐसे अव्यय, जो किसी शब्द पर विशेष बल देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, निपात कहलाते हैं। ये जिस शब्द के साथ लगते हैं, उसे बल प्रदान करते हैं।

तक, भर, ही, भी, तो, मात्र आदि निपात हैं।

जैसे–

मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।

मैं जीवन भर आपका आभारी रहूँगा।

25 वाक्य

बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।
कर्ता कर्म क्रिया

- इसमें कर्ता, कर्म और क्रिया का एक निश्चित क्रम है।
- यह सार्थक है, इससे हमें एक अर्थ समझ में आता है।

जब हम वर्णों को एक व्यवस्थित क्रम में लिखते हैं, तब शब्द बनते हैं। इसी प्रकार जब हम शब्दों को एक व्यवस्थित क्रम में लिखते हैं तथा उनसे एक निश्चित अर्थ निकलता है, उसे हम वाक्य कहते हैं। वाक्य में एक कर्ता तथा एक क्रिया होती है।

शब्दों का ऐसा समूह जो व्यवस्थित तथा सार्थक हो, वाक्य कहलाता है।

अन्य उदाहरण पढ़ें।

- अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहे हैं।
- लड़कियाँ गाना गा रही हैं।
- पेड़ फलों से लदे हुए हैं।
- घड़ा पानी से भरा है।

वाक्य के अंग

वाक्य के प्रमुख दो अंग हैं—उद्‌देश्य और विधेय।

उद्देश्य

वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। इस प्रकार वाक्य में जो कर्ता होता है, वही उद्देश्य होता है।

जैसे—कुम्हार घड़े बना रहा है।
कर्ता कर्म क्रिया

- अक्षिता कहानी पढ़ रही है।
- ग्वाला दूध बेच रहा है।
- पूजा गृहकार्य कर रही है।
- पक्षी चहचहा रहे हैं।

विधेय

वाक्य में कर्ता के बारे में जो कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। वाक्य की क्रिया ही वाक्य का विधेय होती है।

जैसे—दादाजी घूम रहे हैं।
उद्देश्य विधेय

- बच्चे खेल रहे हैं।
- अंकिता लिख रही है।
- पक्षी उड़ते हैं।

उद्देश्य का विस्तार

उद्देश्य के पहले लगे शब्द, जो उद्देश्य की विशेषता बताते हैं, उद्देश्य का विस्तार कहलाते हैं। यह विस्तार विशेषण, संबंध कारक अथवा वाक्यांश के रूप में होता है।

जैसे—बच्चा खेल रहा है।
कर्ता

विशेषण नटखट बच्चा खेल रहा है।

संबंध कारक पड़ोसी का बच्चा खेल रहा है।

वाक्यांश सबका मन मोहनेवाला बच्चा खेल रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बच्चा' (कर्ता) उद्देश्य के पहले लगे सभी शब्द उद्देश्य का विस्तार हैं।

विधेय का विस्तार

विधेय की विशेषता बतानेवाले शब्द विधेय का विस्तार कहलाते हैं, अर्थात विधेय के पहले लगे सभी शब्द विधेय का विस्तार होते हैं।

जैसे—बच्चा खेल रहा है।
विधेय

क्रियाविशेषण बच्चा अपने-आप खेल रहा है।

कारक बच्चा गेंद से खेल रहा है।

कर्म बच्चा फुटबॉल खेल रहा है।

इस प्रकार, उद्देश्य के पहले लगनेवाले सभी शब्द उद्देश्य का विस्तार तथा विधेय के पहले लगनेवाले सभी शब्द विधेय का विस्तार होते हैं। उद्देश्य का विस्तार उद्देश्य में तथा विधेय का विस्तार विधेय में आता है।

जैसे—

उद्देश्य **विधेय**

- एक छोटा बच्चा जादू के खेल दिखा रहा है।
- प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति सत्य का साथ देता है।
- मेरा परम मित्र कल आ रहा है।
- कई दिनों का भूखा व्यक्ति खाने पर टूट पड़ा।
- यह प्रसिद्ध पुस्तक सभी को पढ़नी चाहिए।

इसे तालिका द्वारा इस प्रकार समझ सकते हैं—

उद्देश्य	उद्देश्य का विस्तार	विधेय	विधेय का विस्तार
बच्चा	एक छोटा	दिखा रहा है	जादू के खेल
व्यक्ति	प्रत्येक ईमानदार	देता है	सत्य का साथ
मित्र	मेरा परम	आ रहा है	कल
व्यक्ति	कई दिनों का भूखा	टूट पड़ा	खाने पर
पुस्तक	यह प्रसिद्ध	पढ़नी चाहिए	सभी को

हमने जाना

- शब्दों का व्यवस्थित और सार्थक समूह वाक्य कहलाता है।
- वाक्य के प्रमुख दो अंग हैं—उद्देश्य तथा विधेय।
- उद्देश्य की विशेषता बतानेवाले शब्द उद्देश्य का विस्तार तथा विधेय की विशेषता बतानेवाले शब्द विधेय का विस्तार कहलाते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. एक वाक्य का उद्देश्य कौन-सा होता है?

कर्ता　　　　कर्म　　　　क्रिया

ख. 'मेरा भाई घूमने गया है।' इस वाक्य में उद्देश्य कौन-सा है?

मेरा भाई　　　　भाई　　　　घूमने

2. **दिए गए वाक्यों में से उद्देश्य अलग करके लिखिए।**

क. मानस छठी कक्षा का छात्र है। ______________________

ख. रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़ रही हैं। ______________________

ग. बस का ड्राइवर कहीं चला गया है। ______________________

घ. पेड़ों से पत्ते झड़ रहे हैं। ______________________

3. **दिए गए वाक्यों में से विधेय छाँटकर लिखिए।**

क. मेरी कक्षा में पढ़नेवाला छात्र आज नहीं आया। ______________________

ख. सीमा की रक्षा करनेवाले सिपाही वीर होते हैं। ______________________

ग. बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। ______________________

घ. मीता का घर सुंदर है। ______________________

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. वाक्य किसे कहते हैं?

ख. वाक्य के कितने अंग हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ का एक अनुच्छेद अपनी अभ्यासपुस्तिका में लिखेंगे। उस अनुच्छेद में आए सभी वाक्यों में से उद्देश्य तथा विधेय अलग करके लिखेंगे।

जाना-समझा

एक से अधिक पद परस्पर मिलकर जब अर्थ को व्यक्त करें, परंतु पूरा अर्थ व्यक्त न करें, तब उसे वाक्यांश कहते हैं; जैसे—मेरी कक्षा में पढ़नेवाला छात्र।

26 वाक्य रचना की अशुद्धियाँ

वाक्यों को बोलते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान नहीं रखने से वाक्य में क्रम, लिंग, वचन, कारक, काल, क्रिया आदि से संबंधित अनेक प्रकार की गलतियाँ होती हैं। इसलिए, भाषा का मौखिक अथवा लिखित प्रयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- वाक्य रचना का उचित क्रम—कर्ता + कर्म + क्रिया
- लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का संबंध बताया जाना चाहिए।

कुछ सामान्य होनेवाली अशुद्धियाँ तथा उनके शुद्ध रूप इस प्रकार हैं—

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. आज मेरे मामे घर आएँगे।	1. आज मेरे मामा घर आएँगे।
2. यमुना भारत में प्रसिद्ध नदी है।	2. यमुना भारत की प्रसिद्ध नदी है।
3. पेड़ में चढ़कर आम तोड़ो।	3. पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ो।
4. राधिका और विजय आया है।	4. राधिका और विजय आए हैं।
5. इन बच्चों से नाक में दम हो गया है।	5. इन बच्चों ने नाक में दम कर दिया है।
6. स्टेडियम दर्शकों से लबालब भरा था।	6. स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा था।
7. सड़क पर भारी भीड़ जमा थी।	7. सड़क पर भीड़ जमा थी।

8. मुझे दुख है कि मैं आपसे मिल नहीं सका।	8. मुझे खेद है कि मैं आपसे मिल नहीं सका।
9. कल शायद वह अवश्य मिलेगा।	9. कल वह अवश्य मिलेगा।
10. मुझे लगा, कोई ने मुझे पुकारा है।	10. मुझे लगा, किसी ने मुझे पुकारा है।
11. मेरी हालत देख उसका आँसू निकल गया।	11. मेरी हालत देख उसके आँसू निकल गए।
12. मैंने रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर कर दिया है।	12. मैंने रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।
13. कुछ आदमी के लिए भोजन बनाओ।	13. कुछ आदमियों के लिए भोजन बनाओ।
14. वह महिला विद्वान है।	14. वह महिला विदुषी है।
15. मुझे एक फूल का हार चाहिए।	15. मुझे फूलों का एक हार चाहिए।
16. दोषियों को मृत्युदंड की सज़ा मिली।	16. दोषियों को मृत्युदंड मिला।
17. वह ईमानदार व्यक्ति हैं।	17. वे ईमानदार हैं।
18. मुझे शुद्ध गाय का घी चाहिए।	18. मुझे गाय का शुद्ध घी चाहिए।
19. तुम, मैं और वह खेलेंगे।	19. तुम, वह और मैं खेलेंगे।
20. आपका दर्शन कर मैं धन्य हो गया।	20. आपके दर्शन कर मैं धन्य हो गया।
21. कृपया करके अंदर आ जाइए।	21. कृपया अंदर आ जाइए।
22. दीवार पर नहीं लिखो।	22. दीवार पर मत लिखो।
23. शनिवार के दिन विद्यालय बंद रहेगा।	23. शनिवार को विद्यालय बंद रहेगा।
24. तुम सारे दिनभर खेलते हो।	24. तुम दिनभर खेलते हो।
25. मेरे पास केवल मात्र 500 रुपये हैं।	25. मेरे पास मात्र 500 रुपये हैं।
26. रश्मि को काटकर सेब दो।	26. रश्मि को सेब काटकर दो।
27. स्टेशन में गाड़ी आ गई है।	27. स्टेशन पर गाड़ी आ गई है।
28. मैंने आज कुछ नहीं खाना।	28. मुझे आज कुछ नहीं खाना।
29. मुझे एक गरम प्याला दूध चाहिए।	29. मुझे एक प्याला गरम दूध चाहिए।
30. तुम्हारे कान पर जूँ नहीं चलती।	30. तुम्हारे कान पर जूँ नहीं रेंगती।
31. तुम मेरी आँखों में मिट्टी झोंक रहे हो।	31. तुम मेरी आँखों में धूल झोंक रहे हो।
32. फूलों पर भँवरा गुनगुना रहा है।	32. फूलों पर भँवरें गुनगुना रहे हैं।

हमने जाना

- वाक्य रचना में उचित क्रम का पालन न करने पर अशुद्धियाँ होती हैं।
- वाक्य बनाते समय लिंग, वचन, काल, कारक, क्रिया आदि पर ध्यान देना चाहिए।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. हिंदी वाक्य रचना का उचित क्रम कौन-सा है?

   कर्ता, क्रिया, कर्म   कर्ता, कर्म, क्रिया   क्रिया, कर्म, कर्ता

   ख. भाषा की अशुद्धियों को दूर करने के लिए किसकी जानकारी आवश्यक है?

   भाषा के स्वरूप की   लिंग, वचन की   व्याकरण के नियमों की

2. **अशुद्धियों को शुद्ध करके लिखिए।**

   क. पेड़ में एक बंदर बैठा है। ____________________

   ख. मेज़ पर कई प्रकार की भिन्न पत्रिकाएँ पड़ी हैं। ____________________

   ग. मैं और मेरा भाई प्रातः भ्रमण के लिए निकला। ____________________

   घ. प्रत्येक ने भोजन कर लिया है। ____________________

   ङ. रविवार के दिन बादल छाए रहेंगे। ____________________

   च. मुझे केवल मात्र तुमसे बात करनी है। ____________________

   छ. अपने पैर पर कुदाल मारना अच्छा नहीं होता। ____________________

   ज. मैं, तुम तथा वह साथ-साथ चलेंगे। ____________________

कार्यकलाप

लिंग, वचन तथा कारक से संबंधित अशुद्धियों के पाँच-पाँच वाक्य लिखकर उनका शुद्ध लेखन कीजिए।

जाना-समझा

शुद्ध लेखन के लिए शुद्ध उच्चारण अनिवार्य है, क्योंकि हिंदी भाषा जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी जाती है।

27 विरामचिह्न

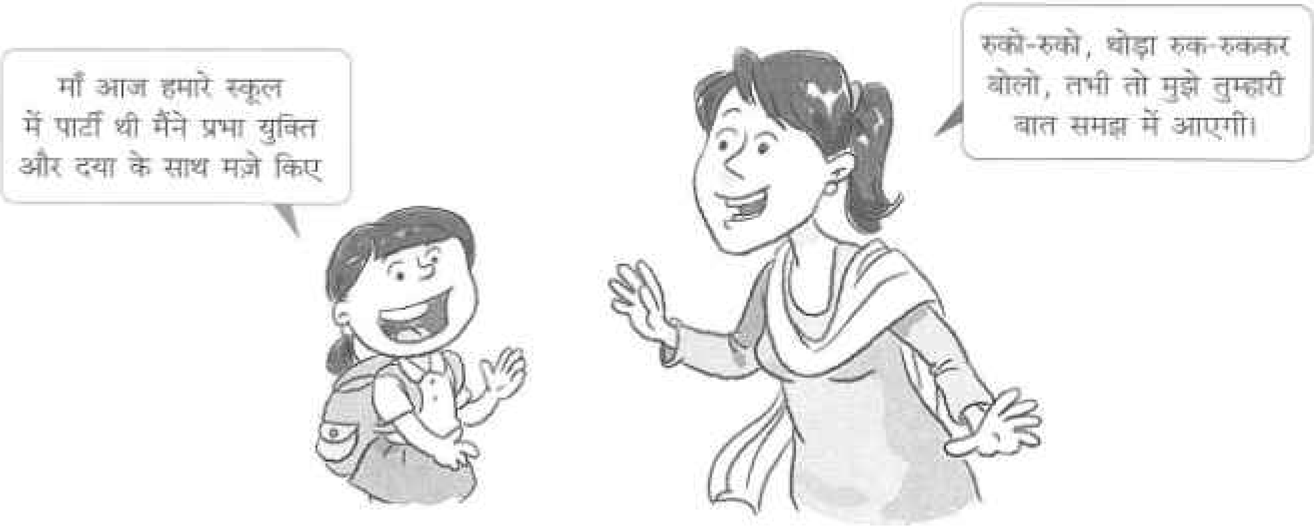

विराम का अर्थ है रुकना। जब हम कोई बात करते हैं, तब अपनी बात को पूरी तरह से स्पष्ट करने के लिए हम बीच-बीच में विराम लेते हैं अर्थात, रुकते हैं। लिखते समय इस विराम को स्पष्ट करने के लिए हम कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें हम विरामचिह्न कहते हैं।

लिखित भाषा में विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत देनेवाले चिह्न विरामचिह्न कहलाते हैं।

विरामचिह्न भावों तथा विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायक होते हैं। ये भाव-बोध को सरल तथा सुबोध बनाते हैं।

प्रमुख विरामचिह्न

हिंदी भाषा में प्रयोग होनेवाले प्रमुख विरामचिह्न निम्नलिखित हैं—

पूर्णविराम	।
अल्पविराम	,
अर्धविराम	;
प्रश्नवाचक चिह्न	?
विस्मयादिबोधक चिह्न	!

उद्धरणचिह्न	इकहरा	‘ ’
	दोहरा	“ ”
योजक चिह्न		-
निर्देशक चिह्न		—
लाघव चिह्न		०

पूर्णविराम

पूर्णविराम का अर्थ है—पूरी तरह रुकना। एक वाक्य बोलने के बाद हम पूरी तरह रुकते हैं, इसलिए एक वाक्य की समाप्ति पर हम पूर्णविराम का चिह्न लगाते हैं। यह चिह्न प्रश्नवाचक वाक्यों को छोड़कर सभी प्रकार के वाक्यों में लगाया जाता है।

उदाहरण

- बच्चों ने मिलकर पतंग उड़ाई।
- राहगीर थककर पेड़ के नीचे बैठ गया।
- मक्खियाँ गंदगी पर भिनभिना रहीं थीं।
- मैं कल रेलगाड़ी से कोलकाता जाऊँगा।

अल्पविराम

अल्पविराम का अर्थ है—थोड़ा रुकना। वाक्य में थोड़ी देर रुकने के लिए हम अल्पविराम का चिह्न लगाते हैं। अल्पविराम का प्रयोग हम निम्न स्थितियों में करते हैं—

दो या अधिक समान पदों में

- कृतिका, राधिका, मयूरी और नव्या आई हैं।
- राधा के पास तोता, कुत्ता, बिल्ली और बकरी है।

हाँ, नहीं तथा संबोधन के पश्चात

- हाँ, मैं पहुँच जाऊँगा।
- नहीं, यह मुझसे नहीं होगा।
- माँ, मैं थोड़ी देर में आता हूँ।

किसी के कहे कथन को लिखने से पहले

- सुभाषचंद्र बोस ने कहा,"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"
- दादाजी बोले,"कल सभी समय पर उठ जाना।"

वाक्यों को जोड़ने के लिए

- चाचाजी ने चाय पी, कुछ सैंडविच खाए और चले गए।
- प्रकृति के सभी नज़ारे, उगता सूर्य, खिलते फूल, चहचहाते पक्षी अद्‌भुत हैं।

अर्धविराम

पूर्णविराम में पूरा रुका जाता है और अल्पविराम में थोड़ा। अर्धविराम इन दोनों के बीच की स्थिति है। अल्पविराम से अधिक तथा पूर्णविराम से कम रुकने की स्थिति में अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- चुपचाप चलते जाओ; पीछे मुड़कर मत देखना; मैं पहुँच जाऊँगा।

प्रश्नवाचक चिह्न

जिन वाक्यों से प्रश्न करने या पूछे जाने का बोध हो, उन वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण

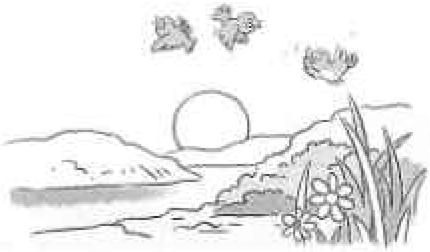

- यह पत्र किसने लिखा है?
- कौन इतने मधुर स्वर में गा रहा है?
- दादाजी कब आएँगे?
- सुनी-सुनाई बात पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए?
- आप सुबह-सुबह कहाँ जा रहे हैं?

विस्मयादिबोधक चिह्न

विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, भय आदि भावों को व्यक्त करने तथा संबोधन के लिए किया जाता है।

उदाहरण

- हाय! उसकी दशा तो बहुत खराब है।
- छिः! कितना गंदा पानी है।
- अरे! तुम अभी भी यहीं बैठे हो।
- वाह! कितनी अच्छी सुगंध।

उद्धरणचिह्न

उद्धरणचिह्न का प्रयोग दो रूपों में होता है—इकहरा उद्धरणचिह्न (' ') और दोहरा उद्धरणचिह्न (" ")।

जब किसी महत्वपूर्ण कथन अथवा किसी के द्वारा कहे गए वाक्य को ज्यों-का-त्यों लिखा जाता है, तब दोहरा उद्धरणचिह्न लगाया जाता है।

- बाल गंगाधर तिलक ने कहा था,"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"

किसी के उपनाम, पुस्तक के नाम, रचना के नाम आदि के साथ इकहरा उद्धरणचिह्न लगाते हैं।

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के महान कवियों में से एक हैं।
- प्रेमचंद ने 'पूस की रात' कहानी लिखी थी।
- 'नवभारत टाइम्स' प्रसिद्ध हिंदी समाचार-पत्र है।

योजक चिह्न

योजक चिह्न सामान्यतः दो शब्दों को जोड़ते हैं। योजक चिह्न का प्रयोग इन स्थानों पर होता है—

सामासिक पदों में

- बच्चा दाल-भात खाता है।
- घर-द्वार दीपों से सजा दो।

विलोम शब्दों में

- अपने भाई-बहन का ध्यान रखना।
- मैं सुबह-शाम आपके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करता हूँ।

सार्थक-निरर्थक शब्दों के जोड़े में

- पानी-वानी, चाय-वाय, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

पुनरुक्त शब्दों में

- धीरे-धीरे नीचे उतरना।
- अभी-अभी मुझे तुम्हारे आने की सूचना मिली थी।

निर्देशक चिह्न

निर्देशक चिह्न निम्न स्थितियों में प्रयोग किए जाते हैं—

किसी बात का निर्देश देने के लिए

- इस विषय पर विचार-विमर्श करें—विज्ञान वरदान है या अभिशाप।

किसी कथन को स्पष्ट करने के लिए

- विद्यालय का अर्थ है—विद्या के लिए आलय।

संवादों में

- मानवी—शीघ्र आना, नहीं तो देर हो जाएगी।
- मानस—चिंता न करो, तुरंत लौट आऊँगा।

लाघव चिह्न

लाघव चिह्न का प्रयोग किसी शब्द को छोटा करके लिखने के लिए होता है।

उदाहरण

- डॉ॰ अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था।
- पं॰ जवाहरलाल नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री थे।
- कृ॰ पृ॰ प॰ (कृपया पृष्ठ पलटिए)

हमने जाना

- विरामचिह्न रुकने का संकेत देते हैं।
- विरामचिह्न भावों और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायक होते हैं।
- प्रमुख विरामचिह्न हैं—पूर्णविराम, अल्पविराम, अर्धविराम, प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादिबोधक चिह्न, उद्धरणचिह्न, योजक चिह्न, निर्देशक चिह्न और लाघव चिह्न।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. सरल वाक्य की समाप्ति पर किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

   प्रश्नवाचक का   पूर्णविराम का   विस्मयादिबोधक का

   ख. ऐसा कौन-सा चिह्न है, जो दो रूपों में प्रयोग किया जाता है?

   योजक चिह्न   लाघव चिह्न   उद्धरणचिह्न

2. दिए गए वाक्यों में सही विरामचिह्न का प्रयोग कीजिए।

   क. चलते चलते रास्ते में ही रात हो गई

   ख. सुनो मेरी बात का बुरा मत मानना

   ग. वाह कितनी बढ़िया गेंदबाजी की है

   घ. राधिका गीता तथा रितिका के पिता डॉ हैं

   ङ. तुम्हारे पिताजी कार्यालय क्यों नहीं गए

3. उचित स्थान पर विरामचिह्न लगाइए।

   कल हम पिकनिक पर गए आगे आगे तान्या चल रही थी थोड़ी दूर जाने पर वह रुक गई कक्षाध्यापिका ने कहा रुको मत चलते चलो तान्या अनुप्रिया और मैं तेज़ गति से चल पड़े जल्दी ही हम उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ झूले लगे थे झूले झूलते हुए हमें बहुत मज़ा आ रहा था

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   क. विरामचिह्न किसे कहते हैं? विरामचिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

   ख. प्रमुख विरामचिह्न कौन-कौन से हैं?

कार्यकलाप

कक्षा में दो-दो विद्यार्थियों के समूह बनाएँ। एक विद्यार्थी अपनी ही पाठ्यपुस्तक का एक अनुच्छेद विरामचिह्न के बिना दूसरे विद्यार्थी को लिखकर देगा। दूसरा विद्यार्थी उस अनुच्छेद में विरामचिह्न लगाएगा। यही प्रक्रिया दूसरा विद्यार्थी दोहराएगा।

जाना-समझा

उपसर्गयुक्त शब्दों में योजक चिह्न लगाकर उन्हें पृथक नहीं किया जाना चाहिए।

जैसे—उप-सभापति ×   उपसभापति ✓

आओ दोहराएँ 3 (पाठ 19 से 27 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। यह वाक्य किस काल का उदाहरण है?

भूतकाल　　　　वर्तमानकाल　　　　भविष्यतकाल

ख. जिस क्रिया में कोई कर्म नहीं होता, उसे कौन-सी क्रिया कहते हैं?

सकर्मक क्रिया　　　　अकर्मक क्रिया　　　　एककर्मक क्रिया

2. दिए गए वाक्यों में कौन-सी क्रिया सकर्मक है और कौन-सी अकर्मक?

क. आशिमा सैंडविच खा रही है। ____________________

ख. बिजली चमकती है। ____________________

3. दिए गए वाक्यों को वर्तमानकाल में बदलिए।

क. हम गली में क्रिकेट खेल रहे थे। ____________________

ख. मेरी सारी पुस्तकें शाम तक पहुँच जाएँगी। ____________________

4. रंगीन शब्द कौन-सा क्रियाविशेषण है? लिखिए।

क. कल उससे अचानक मुलाकात हो गई। ____________________

ख. मैं कल आऊँगा। ____________________

5. संबंधबोधक रेखांकित कीजिए।

क. पक्षियों ने पेड़ के ऊपर घोंसला बनाया।

ख. वह दादाजी के वास्ते छड़ी लाया।

6. दिए गए समुच्चयबोधकों से वाक्य बनाइए।

क. और ____________________

ख. लेकिन ____________________

7. विस्मयादिबोधक शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ____________ लोग पता नहीं, सफ़ाई क्यों नहीं करते।

ख. ____________ मुझे विश्वास था, मैं प्रथम आऊँगा।

8. दिए गए वाक्यों में उद्देश्य रेखांकित कीजिए।

क. लक्ष्य सुबह-सुबह पार्क गया था।

ख. बच्चों की शरारतें सबको अच्छी लगती हैं।

9. विधेय शब्दों को छाँटकर लिखिए।

क. नानी कहानी सुना रही है। ____________________

ख. बच्चा जल्दी-जल्दी आइसक्रीम खा रहा है। ____________________

10. वाक्य शुद्ध करके लिखिए।

क. मुझे खेद है कि तुम्हारे चोट लगी। ____________________

ख. कृपया करके उन्हें बुला लाएँ। ____________________

11. विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पुनः लिखिए।

क. बच्चा छोटे छोटे कदम रखता हुआ आ रहा था ____________________

ख. मीना टीना और रीना दिन रात खेलती रहती हैं ____________________

12. अकर्मक क्रिया को सकर्मक क्रिया में बदलकर लिखिए।

क. लड़के उड़ा रहे हैं। ____________________

ख. आकाश में चमक रहे हैं। ____________________

28 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना

आग में घी डालना

मुहावरे

कुछ वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं; जैसे—अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना का विशेष अर्थ है—अपनी हानि स्वयं करना। इसी प्रकार आग में घी डालना का विशेष अर्थ है—किसी के क्रोध को बढ़ाना।

> वे वाक्यांश, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विलक्षण अर्थ व्यक्त करते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

- मुहावरे भाषा को सरस तथा सरल बनाते हैं।
- मुहावरे वाक्यांश होते हैं, इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता।
- मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है।

कुछ प्रचलित मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग

1. अंधे की लाठी (एकमात्र सहारा)
   अभिनव अपने वृद्ध पिता की अंधे की लाठी है।
2. अँगूठा दिखाना (साफ़ इनकार करना)
   मैंने जब भी उससे सहायता माँगी, उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
3. अक्ल पर पत्थर पड़ना (बुद्धि भ्रष्ट होना)
   तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़े हैं, जो तुमने अपनी संपत्ति को बेचने का निर्णय लिया।

4. अगर-मगर करना (टाल-मटोल करना)
अगर-मगर करने से काम नहीं चलेगा। सच्चाई तो तुम्हें बतानी ही होगी।

5. अपना उल्लू सीधा करना (अपना मतलब निकालना)
उसपर विश्वास मत करना, वह केवल अपना उल्लू सीधा करने के लिए मित्रता करता है।

6. आँखों का तारा (बहुत प्यारा होना)
प्रत्येक बच्चा अपने माता-पिता की आँखों का तारा होता है।

7. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)
ठग मेरी आँखों में धूल झोंककर मेरे पैसों का बैग लेकर चला गया।

8. आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर करना)
जब से बच्चों की छुट्टियाँ हुई हैं, इन्होंने आसमान सिर पर उठा रखा है।

9. आकाश-पाताल एक करना (कठिन परिश्रम करना)
मैंने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।

10. ईंट का जवाब पत्थर से देना (किसी की दुष्टता का करारा जवाब देना)
भारतीय सेना दुश्मनों को ईंट का जवाब पत्थर से देना जानती है।

11. ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)
परीक्षाएँ क्या आईं, तुम तो ईद का चाँद हो गए।

12. एक और एक ग्यारह होना (संगठन में शक्ति होना)
एक और एक ग्यारह होकर सभी कठिनाइयों पर विजय पा सकते हैं।

13. कमर कसना (तैयार होना)
परीक्षाएँ आ गई हैं। पढ़ने के लिए कमर कस लो।

14. कान पर जूँ न रेंगना (कोई प्रभाव न होना)
तुम्हें कितनी बार कहा है कि पढ़ लो, लेकिन तुम्हारे कानों पर जूँ नहीं रेंगती।

15. कान भरना (पीठ पीछे शिकायत करना)
राधा ने आपके कान भरे और आप मुझे डाँटने लग गए। आपको मुझसे पूछना तो चाहिए था।

16. खून-पसीना एक करना (कठिन परिश्रम करना)
मेरे माता-पिता ने खून-पसीना एक करके मुझे इस काबिल बनाया है।

17. घी के दीये जलाना (खुशियाँ मनाना)
पूरे विद्यालय में मेरे प्रथम आने पर माँ ने घी के दीये जलाए।

18. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना (डर जाना)
पिताजी से झूठ बोलकर घूमने गया था। वहाँ पिताजी को देखकर मेरे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

19. जले पर नमक छिड़कना (दुखी व्यक्ति को और दुखी करना)
मैं परीक्षा में अनुत्तीर्ण क्या हुआ, सबने अपनी उपलब्धियाँ गिनाकर जले पर नमक छिड़कना शुरू कर दिया।

20. टाँग अड़ाना (अड़चन डालना)
अपनी आदतें सुधारो। प्रत्येक काम में टाँग मत अड़ाया करो।

21. दिन दूना, रात चौगुना (खूब उन्नति करना)
ईश्वर करे, तुम दिन दूना, रात चौगुना उन्नति करो।

22. दाँतों तले उँगली दबाना (हैरान होना)
नन्हे से बच्चे के मुख से सत्य और स्पष्ट बातें सुनकर सभी ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

23. नाक में दम करना (परेशान करना)
बच्चों ने सुबह से शोर मचाकर मेरी नाक में दम कर रखा है।

24. नाकों चने चबवाना (बहुत परेशान करना)
हमारे वीर सिपाहियों ने शत्रुओं को नाकों चने चबवा दिए।

25. नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना)
मेरा गुस्सा भड़क जाए, अच्छा होगा उससे पहले यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाओ।

26. पहाड़ टूट पड़ना (घोर विपत्ति आना)
उसके पिता की अचानक मृत्यु से उसपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

27. पीठ ठोकना (प्रोत्साहन देना)
क्रिकेट टीम में मेरा चुनाव होने पर पिताजी ने मेरी पीठ ठोकी।

28. प्राण सूख जाना (घबरा जाना)
रंगे हाथों चोरी करते पकड़े जाने पर उसके प्राण सूख गए।

29. पेट में चूहे कूदना (बहुत भूख लगना)
माँ, कुछ खाने को दे दो, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

30. फूला न समाना (बहुत प्रसन्न होना)
नई कार लेकर तो अभय फूला नहीं समा रहा है।

31. बाल-बाल बचना (साफ़ बच जाना)
जिस नाव पर मैं सवार था, वह पानी में उलट गई, परंतु मैं बाल-बाल बच गया।

32. बाल बाँका न करना (हानि न पहुँचा पाना)
मेरे रहते तुम मेरे परिवार का बाल बाँका नहीं कर सकते।

33. भीगी बिल्ली बनना (डर से दुबकना)
अमन सारा दिन तो घर में धमा-चौकड़ी मचाता है, परंतु पिताजी के आते ही भीगी बिल्ली बन जाता है।

34. मुँह में पानी भर आना (लालच आना)
अपने मनपसंद रसगुल्ले देखकर मेरे मुँह में पानी भर आया।

35. मुँह फुलाना (गुस्सा करना)
यदि तुम छोटी-छोटी बातों पर मुँह फुलाओगे, तो कोई तुमसे बात नहीं करेगा।

36. मुँहतोड़ जवाब देना (करारा उत्तर देना)
मुझे कमज़ोर मत समझना, मैं तुम जैसों को मुँहतोड़ जवाब देना जानता हूँ।

37. लाल-पीला होना (क्रोधित होना)
उसने जो कहा है, वह सच ही कहा है। तुम क्यों लाल-पीले हो रहे हो?

38. लोहा लेना (डटकर मुकाबला करना)
हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेज़ों से डटकर लोहा लिया था।

39. श्रीगणेश करना (शुभारंभ करना)
कल मेरी दुकान का श्रीगणेश है, अवश्य आना।

40. हाथ मलना (पछताना)
समय रहते संभल जाओ तो अच्छा है, वरना हाथ मलते रह जाओगे।

41. **हवा से बातें करना** (बहुत तेज़ गति से चलना)
राणा प्रताप का घोड़ा तो हवा से बातें करता था।

42. हवाई किले बनाना (काल्पनिक योजनाएँ बनाना)
जीवन में अगर सफल होना है, तो हवाई किले बनाना छोड़ दो, अथक प्रयास करो।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति अर्थात, लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्ति एक स्वतंत्र वाक्य होती है। इसका प्रयोग अधिकतर उपदेश देने या अपने कथन के समर्थन में किया जाता है।

कुछ लोकोक्तियाँ, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग इस प्रकार हैं–

1. अधजल गगरी छलकत जाए (थोड़ा ज्ञान रखनेवाले ही अधिक घमंड करते हैं)
आता-जाता इसे कुछ नहीं, लेकिन दिखावा ऐसे करती है, जैसे सबकुछ जानती है। अधजल गगरी छलकत जाए।

2. **अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत** (अवसर निकल जाने के बाद पछताने से कोई लाभ नहीं)
पहले तो पढ़ने के नाम पर बहाने बनाते रहे, अब फेल होने पर रो रहे हो। अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

3. अंत भले का भला (अच्छे काम का परिणाम अच्छा होता है)
चाहे हमने इस काम को करने में कितनी कठिनाइयाँ उठाई हों परंतु, अंत भले का भला।

4. अंधों में काना राजा (मूर्खों के बीच थोड़ा पढ़ा-लिखा व्यक्ति)
अरविंद को पत्र लिखना क्या आ गया, वह तो गाँव के निरक्षर लोगों के मध्य अंधों में काना राजा बन बैठा है।

5. आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ)
समाचार-पत्र पढ़कर दुनिया भर की जानकारी प्राप्त कर लो और फिर इसे रद्दी में बेचकर पैसे कमा लो। इसे कहते हैं—आम के आम गुठलियों के दाम।

6. आ बैल मुझे मार (स्वयं मुसीबत बुलाना)
मुझे मालूम था कि वह मेरी बात का गलत अर्थ लेगा। फिर भी, न जाने क्यों उसे समझाने चला गया। मुझपर तो वही उक्ति चरितार्थ होती है, 'आ बैल मुझे मार'।

7. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे (दोषी व्यक्ति द्वारा निर्दोष पर दोष लगाना)
एक तो तुमने मेरी पुस्तक चुराई, उसपर तुम मुझे आँखें दिखा रहे हो। उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

8. **ऊँची दुकान फीका पकवान** (केवल ऊपरी दिखावा करना)
इस भोजनालय का बहुत नाम सुनकर आए थे, परंतु भोजन बिलकुल बेस्वाद था। ऊँची दुकान, फीका पकवान।

9. एक अनार सौ बीमार (वस्तु एक और माँगनेवाले कई)
लाइब्रेरी में नए उपन्यास की एक ही कॉपी है, और सभी उसे पढ़ना चाहते हैं। एक अनार सौ बीमार।

10. एक पंथ दो काज (एक साथ दो काम)
बाज़ार जा रहा था, सोचा तुमसे भी मिलता जाऊँ। एक पंथ दो काज।

11. काला अक्षर भैंस बराबर (निरा अनपढ़)
ये पुस्तकें इसके किस काम की। इसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

12. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (अत्यधिक प्रयत्न, तुच्छ फल)
दिनभर जी तोड़ मेहनत की, मज़दूरी में मिले सौ रुपये। खोदा पहाड़, निकली चुहिया।

13. चिराग तले अँधेरा (अपनी बुराई नहीं दिखती)
दूसरों को गुणों की सीख देते हो, अपने बेटे के अवगुणों का पता नहीं। इसे कहते हैं, चिराग तले अँधेरा।

14. चोर की दाढ़ी में तिनका (अपराधी के हाव-भाव से अपराध का पता चल जाता है)
तुम्हें देखते ही मैं समझ गया था कि चोरी तुमने ही की है। कहते हैं न, चोर की दाढ़ी में तिनका।

15. जल में रहकर मगर से वैर (किसी के अधीन रहकर उससे शत्रुता करना)
जल में रहकर मगर से वैर करोगे, तो अधिक दिन तक इस नौकरी में नहीं टिक पाओगे।

16. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिशाली की ही जीत होती है)
उसके पास बहुत पैसा है, सब उसकी बात मानते हैं। कहते हैं न, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

17. जैसी करनी, वैसी भरनी (जैसा कार्य करोगे, वैसा फल पाओगे)
बुरा काम करके तुम भलाई की उम्मीद न करो। जैसी करनी, वैसी भरनी।

18. डूबते को तिनके का सहारा (असहाय व्यक्ति को थोड़ी-सी सहायता भी बहुत होती है)
पैसे-पैसे को मोहताज हूँ। सेठजी, आप कुछ भी दे दीजिए। डूबते को तो तिनके का सहारा ही बहुत है।

19. दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है (एक बार का धोखा खाया व्यक्ति हमेशा सतर्क रहता है)

मैं तुम्हारी बातों में नहीं आनेवाला। दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है।

20. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी (झगड़े के कारण को नष्ट कर देना)
आज तुम्हारा कंप्यूटर ही हटा देता हूँ, गेम कैसे खेल पाओगे। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

21. साँप मरे, न लाठी टूटे (नुकसान के बिना काम हो जाना)
मैं धरना समाप्त करना चाहता हूँ, परंतु उनकी माँगें मानना नहीं चाहता। कोई ऐसा उपाय करो कि साँप मरे, न लाठी टूटे।

22. हाथ कंगन को आरसी क्या (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती)
हाथ कंगन को आरसी क्या। आप स्वयं देख लीजिए, वह मेरी कॉपी से ही गृहकार्य कर रहा है।

23. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और (कथनी और करनी में अंतर होना)
मेरे सामने तो वह मेरी बहुत प्रशंसा करती है, परंतु पीठ पीछे मेरी बुराई शुरू कर देती है। हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।

हमने जाना

- वे वाक्यांश, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विलक्षण अर्थ देते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।
- लोक में प्रचलित उक्तियाँ लोकोक्तियाँ कहलाती हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'एक पंथ दो काज' का सही अर्थ कौन-सा है?

एक काम के बदले दूसरा काम　　एक साथ दो काम　　एक रास्ता तथा दो काज

ख. 'अँगूठा दिखाना' का सही अर्थ कौन-सा है?

जोश दिखाना　　संकेत करना　　साफ़ इनकार करना

2. मुहावरे लिखकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. आपस में मिलजुलकर रहना, जानते हो न ____________________।

ख. मैं परीक्षा में प्रथम आने के लिए ____________________।

ग. मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम ____________________ जानती हो।

घ. मेरे काम में ________________ नहीं तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

ङ. तुम सुनी-सुनाई बात पर आसानी से विश्वास कर लेती हो, इसलिए हर कोई तुम्हारे ________________।

3. लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए।

क. आम के आम गुठलियों के दाम	प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं
ख. आ बैल मुझे मार	निरा अनपढ़
ग. काला अक्षर भैंस बराबर	दोहरा लाभ
घ. जिसकी लाठी उसकी भैंस	स्वयं मुसीबत मोल लेना
ङ. हाथ कंगन को आरसी क्या	किसी के अधीन रहकर उससे शत्रुता करना
च. जल में रहकर मगर से वैर	शक्तिशाली की ही जीत होती है

4. दिए गए मुहावरों तथा लोकोक्तियों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. हवाई किले बनाना ________________

ख. भीगी बिल्ली बनना ________________

ग. एक अनार सौ बीमार ________________

घ. ईद का चाँद होना ________________

ङ. अंधों में काना राजा ________________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. मुहावरा किसे कहते हैं? मुहावरों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

ख. लोकोक्तियों और मुहावरों में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

शरीर के विभिन्न भागों पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं। आँख, नाक, कान, मुँह आदि पर आधारित पाँच-पाँच मुहावरे अर्थ सहित लिखिए तथा उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

जाना-समझा

मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची रूपों का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे—

कमर कसना ✓ कटि कसना ×

29 अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश का अर्थ है, ऐसा गद्यांश जो पहले पढ़ा हुआ न हो। अपठित गद्यांश विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक से संबंधित नहीं होता। ऐसे गद्यांशों से विद्यार्थियों को मूलभाव समझने में सहायता मिलती है तथा इनसे विद्यार्थियों के बौद्धिक कौशल का विकास होता है।

अपठित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ही देने होते हैं। इसलिए, विद्यार्थियों को गद्यांश का धैर्यपूर्वक दो-तीन बार अध्ययन करना और उसके मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करना चाहिए।

कुछ अपठित गद्यांशों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

गद्यांश 1

जैसे दूसरों के दुख को देखकर दुख होता है, वैसे ही दूसरों के सुख या भलाई को देखकर भी एक प्रकार का दुख होता है, जिसे ईर्ष्या कहते हैं। ईर्ष्या की उत्पत्ति आलस्य, अभिमान तथा निराशा के संयोग से होती है। यह बात ध्यान देने की है कि ईर्ष्या व्यक्ति विशेष से होती है। ऐसा नहीं होता कि जिस किसी को ऐश्वर्य, गुण या आन से संपन्न देखा, उसी से ईर्ष्या हो गई। ईर्ष्या उनसे होती है, जिनके विषय में यह धारणा होती है कि लोगों की दृष्टि हमारे साथ-साथ उनपर भी अवश्य पड़ेगी या पड़ती होगी। प्रायः संबंधियों, बाल-सखाओं, सहपाठियों और पड़ोसियों के बीच ईर्ष्या का विकास अधिक देखा जाता है।

प्र.1 ईर्ष्या किसे कहते हैं?

उ. दूसरों के सुख या भलाई को देखकर होनेवाले दुख का भाव ईर्ष्या कहलाता है।

प्र.2 ईर्ष्या की उत्पत्ति के क्या कारण हैं?

उ. ईर्ष्या की उत्पत्ति के कारण आलस्य, अभिमान तथा निराशा हैं।

प्र.3 ईर्ष्या के संबंध में विशेष बात क्या है?

उ. ईर्ष्या के बारे में विशेष बात यह है कि यह सभी से न होकर व्यक्ति विशेष से होती है।

प्र.4 किस प्रकार की धारणा ईर्ष्या में सहायक होती है?

उ. लोगों की दृष्टि का हमारे साथ अन्य लोगों पर भी पड़ने की धारणा ईर्ष्या में सहायक होती है।

प्र.5 ईर्ष्या का विकास कहाँ अधिक देखा जाता है?

उ. ईर्ष्या का विकास प्रायः संबंधियों, बाल-सखाओं, सहपाठियों और पड़ोसियों के बीच अधिक देखा जाता है।

गद्यांश 2

राजा हरदौल सिंह के न्याय तथा प्रजा-वात्सल्य ने प्रजा का मन हर लिया था। वह अजातशत्रु था, अर्थात उसका कोई शत्रु न था। राजा के सभी मित्र ही थे। वह ऐसा हँसमुख तथा मधुरभाषी था कि उससे जो बात कर लेता, वही जीवनभर उसका भक्त बना रहता। रात-दिन उसके दरबार का फाटक सबके लिए खुला रहता था। वह उदार था, न्यायप्रिय था, विधा और गुण का ग्राहक था, पर सबसे बड़ा गुण जो उसमें था, वह उसकी वीरता थी। हरदौल अपने गुणों से अपनी प्रजा के मन का भी राजा हो गया, जो मुल्क और माल पर राज करने से भी कठिन है।

प्र.1 राजा हरदौल सिंह के किन गुणों ने प्रजा का मन हर लिया था?

न्यायप्रियता प्रजा-वात्सल्य इनमें से दोनों ने ✓

प्र.2 राजा हरदौल सिंह का सबसे बड़ा गुण क्या था?

उदारता वीरता ✓ मधुरभाषिता

प्र.3 मुल्क और माल पर राज करने से भी कठिन क्या है?

प्रजा का मन मोह लेना ✓ गुणी होना रात-दिन कार्य करना

प्र.4 राजा हरदौल सिंह के स्वभाव की कौन-सी ऐसी विशेषता थी, जो प्रजा को उसका भक्त बना देती थी?

वीरता उदारता मधुर वाणी ✓

प्र.5 'जिसका कोई शत्रु न हो', उसे क्या कहते हैं?

शत्रुघ्न अजातशत्रु ✓ शत्रुप्रिय

गद्यांश 3

ईश्वर ने हमें जिन बहुत सारी शक्तियों का वरदान दिया है, उनमें वाक्शक्ति एक है। यदि मनुष्य में वाक्शक्ति न होती, तो पूरी सृष्टि गूँगी होती और हम अपने विचारों को व्यक्त न कर पाते। जहाँ आदमी को अपनी ज़िंदगी मज़ेदार बनाने के लिए खाने-पीने तथा चलने-फिरने की आवश्यकता है, वहाँ बातचीत की भी हमको बहुत आवश्यकता है। बातचीत के माध्यम से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। चित्त हलका तथा स्वच्छ होकर परम आनंद में मग्न हो जाता है।

प्र.1 लेखक की दृष्टि से वाक्शक्ति क्या है?

उ. लेखक की दृष्टि से वाक्शक्ति ईश्वर का दिया एक वरदान है।

प्र.2 यदि मनुष्य में वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता?

उ. यदि मनुष्य में वाक्शक्ति न होती, तो पूरी सृष्टि गूँगी होती और हम अपने विचारों को व्यक्त न कर पाते।

प्र.3 बातचीत की क्या उपयोगिता है?

उ. बातचीत से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हमारा चित्त हलका तथा स्वच्छ हो जाता है।

प्र.4 गद्यांश में से ढूँढ़कर इनके समानार्थी रूप लिखिए—मूक, जीवन।

उ. मूक—गूँगी, जीवन—ज़िंदगी।

प्र.5 'परम + आनंद' की संधि कीजिए।

उ. परमानंद

हमने जाना

- अपठित गद्यांश पाठ्यपुस्तक के नहीं होते।
- ये हमारे बौद्धिक कौशल का विकास करते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए अपठित गद्यांशों को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पुडुचेरी भारत का बहुत सुंदर केंद्रशासित प्रदेश है। फ्रांस का प्रभाव यहाँ के समूचे जन-जीवन तथा स्थापत्यकला पर दिखाई देता है। एक-दूसरे को समांतर काटती सड़कों पर वाहन तीव्र गति से दौड़ते हैं। पूरा शहर सुव्यवस्थित तथा साफ़-सुथरा होने का अहसास देता है। इसके भवन फ्रांसीसी स्थापत्यकला के उदाहरण हैं। भवनों की दीवारें ऊँची, दरवाज़े चौड़े तथा अंदर एक खुला आँगन है। यहाँ फ्रांसीसी शहीदों के स्मृति स्थल भी हैं। अरबिंदो आश्रम शांति तथा अध्यात्म के लिए पुडुचेरी का विशेष आकर्षण है।

प्र.1 पुडुचेरी क्या है?

केंद्रशासित प्रदेश   राज्य   ग्राम

प्र.2 पुडुचेरी किस देश में स्थित है?

श्रीलंका   नेपाल   भारत

प्र.3 पुडुचेरी की स्थापत्यकला पर किसका प्रभाव दिखाई देता है?

जर्मनी का   फ्रांस का   इंग्लैंड का

प्र.4 पुडुचेरी के भवनों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

ऊँची दीवारें　　खुले आँगन　　इनमें से दोनों

प्र.5 पुडुचेरी में शांति तथा अध्यात्म के लिए विशेष आकर्षण कौन-सा है?

शांतिनिकेतन　　अरबिंदो आश्रम　　दोनों में से कोई नहीं

2. धरती पर शुद्ध जल की कमी है। अनेक पर्यावरणविद् तथा समाजसेवी संगठन विश्व का ध्यान इस ओर खींचते रहे हैं। परंतु, कोई विशिष्ट प्रयास न किए जाने के कारण जल-संकट की समस्या गंभीर होती जा रही है। जल प्रदूषण जल-संकट का प्रमुख कारण है। इस संकट से उबरने के लिए केंद्र तथा राज्य स्तर पर अनेक परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रत्येक व्यक्ति जल को शुद्ध रखना अपना कर्तव्य माने। जल के महत्व को जानते हुए उसका संरक्षण करे।

प्र.1 पर्यावरणविद् विश्व का ध्यान किस ओर आकृष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं?

प्र.2 जल-संकट का प्रमुख कारण कौन-सा है?

प्र.3 जल-संकट से उबरने के लिए केंद्र तथा राज्य स्तर पर क्या कार्य किए जा रहे हैं?

प्र.4 सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं की सफलता किस बात पर निर्भर है?

प्र.5 जल का संरक्षण क्यों किया जाना चाहिए?

3. कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के महान संत हुए हैं। कबीरदास ने अनेक सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया था। वे सभी मनुष्यों को समान मानते थे। उनके मध्य प्रेम तथा भाईचारे की स्थापना के समर्थक थे। विभिन्न धर्मों में जो कुरीतियाँ और अंधविश्वास विद्यमान थे, उन्होंने उनका विरोध किया। वे मूर्तिपूजा के विरोधी थे।

प्र.1 कबीरदास किस काल के महान संत थे?

आधुनिककाल के　　भक्तिकाल के　　रीतिकाल के

प्र.2 कबीरदास किसके विरोधी थे?

धर्म के　　समानता के　　मूर्तिपूजा के

प्र.3 कबीरदास मनुष्यों के मध्य किस प्रकार की भावना के समर्थक थे?

भाईचारे की　　दुश्मनी की　　ऊँच-नीच की

प्र.4 गद्यांश में से ढूँढ़कर इनके विलोम रूप लिखिए।

समर्थन, सगुण

प्र.5 उपसर्ग छाँटकर अलग कीजिए।

निर्गुण, कुरीतियाँ

30 अपठित पद्यांश

अपठित पद्यांश ऐसा पद्यांश होता है, जो पाठ्यक्रम की पुस्तक में निहित नहीं होता। इसे अन्य पत्र-पत्रिकाओं अथवा पुस्तकों से लिया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की काव्य-संबंधी विषयवस्तु तथा समझ का मूल्यांकन करना होता है। इसमें विद्यार्थियों को कविता का एक अंश दिया जाता है, जिसपर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। उन प्रश्नों का उत्तर कविता के अंश में ही निहित होता है।

अपठित पद्यांशों के कुछ उदाहरण

पद्यांश 1

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो नींद-चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।।

प्र.1 गोताखोर खाली हाथ लौटने पर क्या करता है?

उ. गोताखोर खाली हाथ लौटने पर पुनः दूने उत्साह से प्रयास करता है।

प्र.2 कोशिश करनेवालों की हार क्यों नहीं होती?

उ. कोशिश करनेवालों की हार इसलिए नहीं होती, क्योंकि कोशिश करने पर सफलता अवश्य मिलती है।

प्र.3 कवि ने असफलता को चुनौती क्यों कहा है?

उ. कवि ने असफलता को चुनौती इसलिए कहा है, क्योंकि असफल होने पर सफलता-प्राप्ति के लिए पुनः प्रयास करते हैं।

प्र.4 असफल होने पर व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

उ. असफल होने पर व्यक्ति को अपनी कमियाँ देखनी तथा सुधारनी चाहिए।

प्र.5 क्या असफल होने पर व्यक्ति को कार्य छोड़ देना चाहिए?

उ. असफल होने पर व्यक्ति को कार्य छोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि सफलता के लिए पुनः कठिन प्रयास करना चाहिए।

पद्यांश 2

यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे,
मैं भी उसपर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसेवाली,
किसी तरह नीची हो जाती, यह कदंब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता, पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मज़े-से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्मा, अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

प्र.1 बालक कदंब के पेड़ पर बैठकर क्या करना चाहता है?

यमुना-जल देखना | बाँसुरी बजाना | झूला झूलना

प्र.2 बालक कदंब के पेड़ की किसके किनारे होने की इच्छा करता है?

गंगा के | यमुना के | सरस्वती के

प्र.3 बालक माँ से क्या चाहता है?

दो पैसे | कदंब का पेड़ | बाँसुरी

प्र.4 बालक कदंब की डाली के नीचे होने की कल्पना क्यों करता है?

ऊपर चढ़ने के लिए | फूल तोड़ने के लिए | छिपने के लिए

प्र.5 बालक बाँसुरी बजाकर किसे बुलाना चाहता है?

पिता को | मित्र को | माँ को

उत्तर 1. बाँसुरी बजाना 2. यमुना के 3. बाँसुरी 4. ऊपर चढ़ने के लिए 5. माँ को

पद्यांश 3

फूल तुम हो सुहावने सरस,
नहीं प्यारे लगते हो किसे।
लुभा लेते हो किसको नहीं,
हो न किसकी आँखों में बसे।।

तुम्हारी चाह नहीं है कहाँ,
चढ़े हो किसके सिर पर नहीं।
न भोले-भाले तुमसे मिले,
न तुमसे सुंदर पाए कहीं।।

भला करते ही देखे गए,
जब मिले तब हँसते ही मिले।
रंग लाते पत्तों में रहे,
दिखे काँटों में भी खिले।।

प्र.1 कवि किसके बारे में बात कर रहा है?

भोले मनुष्य के   फूल के ✓   काँटों के

प्र.2 फूल सदा किस प्रकार मिलते हैं?

हँसते हुए ✓   खिले हुए   इठलाते हुए

प्र.3 'दिखे काँटों में भी खिले' में 'भी' शब्द क्या है?

निपात ✓   क्रियाविशेषण   संबंधबोधक

प्र.4 'नहीं प्यारे लगते हो किसे' से कवि का क्या अभिप्राय है?
उ. इससे कवि का अभिप्राय है कि फूल सभी को प्रिय लगते हैं।

प्र.5 किन पंक्तियों से पता चलता है कि फूल सबसे अधिक भोले तथा सुंदर होते हैं?
उ. न भोले-भाले तुमसे मिले,
न तुमसे सुंदर पाए कहीं।।

प्र.6 पद्यांश में से ढूँढ़कर विपरीतार्थक रूप लिखिए—काँटा, नीरस।
उ. काँटा—फूल, नीरस—सरस।

प्र.7 पर्यायवाची रूप लिखिए—फूल, सुंदर।
उ. फूल—पुष्प, सुंदर—मनोहर।

हमने जाना

- अपठित पद्यांश पाठ्यपुस्तक से नहीं लिए जाते।
- ये भाषा के प्रति हमारी समझ का मूल्यांकन करते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए अपठित पद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव,
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान,
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान।।
जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष,
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

प्र.1 कविता में किसकी विशेषताएँ बताई गई हैं?

प्र.2 भारतवर्ष में अतिथियों को किस रूप में देखा जाता था?

प्र.3 कवि किसके लिए जीने की बात कर रहा है?

प्र.4 कवि ने दिव्य आर्य-संतान किसे कहा है?

प्र.5 कवि भारतवर्ष पर क्या निछावर करने की बात कर रहा है?

2. चमक रहा उत्तुंग हिमालय, यह नगराज हमारा ही है।
जोड़ नहीं धरती पर जिसका, वह नगराज हमारा ही है।
नदी हमारी ही है गंगा, प्लावित करती मधुरस धारा,
बहती है क्या कहीं और भी, ऐसी पावन कल-कल धारा?

सम्मानित जो सकल विश्व में, महिमा जिनकी बहुत रही है।
अमर ग्रंथ वे सभी हमारे, उपनिषदों का देश यही है।
गाएँगे यश हम सब इसका, यह है स्वर्णिम देश हमारा,
आगे कौन जगत में हमसे, यह है भारत देश हमारा।

प्र.1 कवि ने नगराज किसे कहा है?

माउंट एवरेस्ट को   हिमालय को   अरावली पर्वत को

प्र.2 गंगा से किस प्रकार की धारा बहती है?

जल की   दूध की   अमृत की

प्र.3 संपूर्ण विश्व में किन्होंने सम्मान प्राप्त किया है?

हमारे अमर ग्रंथों ने   हमारी कहानियों ने   हमारे संस्कारों ने

प्र.4 कवि किसका यश गाना चाहता है?

महान ग्रंथों का   ऋषि-मुनियों का   भारत का

प्र.5 हिमालय का संधि-विच्छेद क्या होगा?

हिम + आलय   हिम + लय   हि + मालय

31 संवाद-लेखन

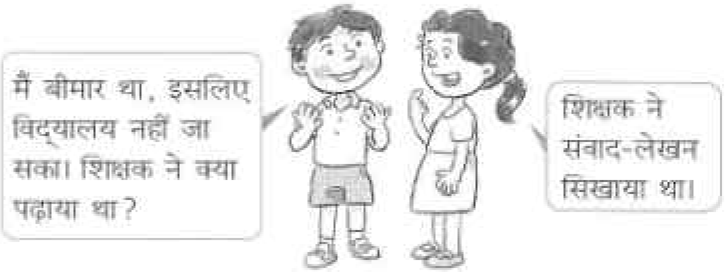

1. दो स्त्रियाँ अचानक मिलने पर बातचीत करती हुई

कल्पना	अरे सरला बहन! कैसी हैं? घर में सब कुशल तो है?
सरला	हाँ, मैं ठीक हूँ। आदित्य को थोड़ा बुखार था।
कल्पना	किसी डॉक्टर को दिखाया क्या?
सरला	हाँ, डॉक्टर से दवाई ली थी, उससे काफ़ी आराम है।
कल्पना	मौसम बदल रहा है, थोड़ा ध्यान रखिए।
सरला	आप सही कह रही हैं।
कल्पना	इसीलिए, शायद आदित्य आज विद्यालय नहीं गया था।
सरला	हाँ, डॉक्टर साहब ने उसे एक दिन आराम करने के लिए कहा था।
कल्पना	अब कहाँ जा रही हैं आप?
सरला	आदित्य की दवाई लेने ही जा रही थी।
कल्पना	जल्दी जाइए, कहीं क्लीनिक बंद न हो जाए।
सरला	अच्छा, चलती हूँ। फिर मिलती हूँ।

2. एक बच्चा अपनी माँ से बात करते हुए

बच्चा	मम्मी, ये सोमवार कब आएगा?
माँ	क्यों, क्या हुआ?
बच्चा	दो दिन की छुट्टी में तो मैं बोर हो जाता हूँ।
माँ	बोर क्यों होते हो, अपनी पुस्तकें क्यों नहीं पढ़ते?
बच्चा	मैं अपना सारा काम समय सारणी बनाकर करता हूँ। इसलिए, मेरा विद्यालय का काम बिलकुल पूरा है।
माँ	तो फिर इन दो दिनों में कुछ ऐसा काम करो, जो तुम अन्य दिनों में समयाभाव के कारण नहीं कर पाते।
बच्चा	मुझे पियानो सीखना है।
माँ	तुम पियानो की कक्षा में जाया करो।
बच्चा	यह बहुत अच्छा आइडिया है। इससे मैं बहुत सारी नई चीज़ें सीख सकता हूँ।

3. **दो सखियों के मध्य बातचीत**

आराधना	क्या शाम को मेरे साथ बैडमिंटन खेलने चलोगी?
कृतिका	नहीं आराधना, मैं कुछ दिन खेलने नहीं जा पाऊँगी।
आराधना	क्यों?
कृतिका	परीक्षाएँ आनेवाली हैं और मेरी परीक्षाओं की कोई तैयारी नहीं है।
आराधना	तैयारी क्यों नहीं है?
कृतिका	तुम्हें तो मालूम है, मौसी के विवाह के कारण मैं कई दिन विद्यालय से अनुपस्थित रही थी।
आराधना	हाँ, यह मुझे अच्छी तरह से याद है, पर मैंने तुम्हारा कक्षा-कार्य पूरा कर दिया था।
कृतिका	लेकिन, मैंने उसे न तो पढ़ा था और न ही याद किया था।
आराधना	तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।
कृतिका	मुझे भी लगता है, मैंने भूल की। परंतु, अब मैं अपनी भूल सुधार लूँगी।
आराधना	वह कैसे?
कृतिका	मैं दिन-रात परिश्रम करके सारा पुराना कार्य पूरा कर लूँगी।
आराधना	मेरी सहायता की आवश्यकता हो, तो कहना।
कृतिका	धन्यवाद, परीक्षाओं के बाद खूब खेलेंगे।

4. दादी से संवाद करता हुआ बालक

दादी क्या बात है रोहित, आज बहुत चहक रहे हो?

रोहित हम विद्यालय की ओर से पिकनिक पर जा रहे हैं।

दादी अच्छा, कहाँ पर?

रोहित वहीं, जहाँ मैं बहुत दिनों से जाना चाहता था।

दादी अक्षरधाम, दिल्ली का एक अद्भुत स्थल।

रोहित सही पहचाना दादी। अक्षरधाम में बोटिंग करने का कितना मन था मेरा।

दादी बोटिंग के साथ अद्भुत कारीगरी, इतिहास की झलक भी दिखाई देगी।

रोहित मैं तो शाम को संगीतमय फ़व्वारा भी देखूँगा।

दादी फिर जाओ और पिकनिक की तैयारी कर लो। पूरा आनंद लेना।

रोहित हाँ दादी, आप भी चलतीं, तो कितना मज़ा आता।

दादी फिर कभी पूरे परिवार के साथ दोबारा चलेंगे।

हमने जाना

- संवाद दो व्यक्तियों के मध्य हुई बातचीत होता है।
- संवाद रोचक तथा स्वाभाविक होने चाहिए।

आओ कुछ करें

दिए गए विषयों पर संवाद लिखिए।

क. दुकानदार से मोल-भाव करती हुई स्त्री तथा दुकानदार के मध्य संवाद।

ख. परीक्षा-परिणाम के बारे में दो मित्रों के मध्य संवाद।

ग. विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति के संबंध में शिक्षक तथा अभिभावक के मध्य संवाद।

घ. विद्यालय में होनेवाले क्रिकेट मैच के बारे में दो सहपाठियों के मध्य संवाद।

ङ. पुत्र के प्रथम आने की खुशी में माता-पिता के मध्य संवाद।

च. स्वच्छता के बारे में दो महिलाओं के मध्य संवाद।

कार्यकलाप

शिक्षक विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँटेंगे तथा उनसे विभिन्न विषयों पर संवाद करवाएँगे।

जाना-समझा

संवादों की भाषा पात्रों की आयु तथा परिस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए।

32 चित्र-वर्णन

अर्पिता ने शिक्षिका द्वारा दिखाए गए उपर्युक्त चित्र का वर्णन इस प्रकार किया।

यह संध्या के समय एक उपवन का चित्र है। गरमी का मौसम है। दिनभर की गरमी से राहत पाने के लिए वृद्ध और बच्चे उपवन में आए हैं। दो वृद्ध बेंच पर बैठे बच्चों के खेल का आनंद ले रहे हैं। हरे-भरे पार्क में झूला झूलते बच्चे आनंद से मिल-जुलकर खेल रहे हैं। पार्क की हरियाली मोहक है तथा ठंडी हवा सुकून देनेवाली है।

> किसी चित्र को देखकर उसके प्रति मन में उठनेवाले भावों को व्यक्त करना चित्र-वर्णन कहलाता है।

चित्र-वर्णन करने से पहले चित्र को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। उसमें दिखाए गए पात्रों के हाव-भाव को देखना चाहिए। अपनी कल्पना द्वारा उस चित्र को सजीव रूप देकर उसका वर्णन करना चाहिए।

चित्र-वर्णन के कुछ उदाहरण पढ़ें।

यह किसी छुट्टी वाले दिन का चित्र है। बैठक साफ़-सुथरी है। दादाजी सोफ़े पर बैठे समाचार-पत्र पढ़ रहे हैं। वे विशेष खबरों को पढ़कर दादीजी को सुना रहे हैं। दादीजी आराम से बैठी अपने निपुण हाथों से स्वेटर बुन रही हैं तथा दादाजी द्वारा सुनाए गए समाचारों पर अपना मत व्यक्त कर रही हैं। दोनों बच्चे कुरसी पर बैठे अपना मनपसंद काम कर रहे हैं। बालिका कहानी पढ़ रही है तथा बालक चित्र बना रहा है। उनका प्यारा पिल्ला जीभ निकाले सबको प्रसन्नचित देख रहा है।

हमने जाना

- दिए गए चित्रों को देखकर उसका वर्णन करना चित्र-वर्णन कहलाता है।
- चित्र-वर्णन करते समय अपनी कल्पना से चित्र को सजीव रूप देना चाहिए।

आओ कुछ करें

दिए गए चित्रों को देखकर उनका वर्णन कीजिए।

क.

ख.

कार्यकलाप

विद्यार्थी समाचार-पत्रों अथवा पत्रिकाओं से कुछ आकर्षक चित्र काटकर अपनी अभ्यासपुस्तिका में लगाएँ तथा उनका वर्णन अपने शब्दों में करें।

जाना-समझा

चित्र-वर्णन में अवलोकन तथा अभिव्यक्ति दोनों ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, इसलिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखकर उसका वर्णन करना चाहिए।

33 अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद सीमित शब्दों में किसी विषय का सटीक वर्णन होता है। इसे निबंध का लघु रूप भी कहते हैं। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट तथा रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे तथा परस्पर संबंधित होने चाहिए। पूरा अनुच्छेद एक ही भाव या विचार को प्रकट करता है।

> किसी एक ही भाव या विचार को व्यक्त करनेवाले किसी विषय का स्पष्ट तथा संक्षिप्त वर्णन अनुच्छेद कहलाता है।

अनुच्छेद के कुछ उदाहरण

1. विद्यार्थी और अनुशासन

अनुशासन शब्द दो शब्दों 'अनु' तथा 'शासन' से मिलकर बना है। इसका अर्थ है स्वयं पर शासन करना, अर्थात नियमों के अनुसार स्वयं को चलाना। अनुशासन हमारे व्यक्तित्व के निर्माण तथा विकास में सहायक होता है। विद्यार्थी जीवन में इसकी आवश्यकता बहुत अधिक होती है। विद्यार्थियों के अनुशासित जीवन पर ही उनके जीवन की सफलता निर्भर करती है। एक विद्यार्थी यदि नियमित रूप से अपने सभी कार्य करता है, अपना अध्ययन समय सारणी बनाकर करता है, अपने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है, उसकी प्राप्ति के लिए ईमानदारी से प्रयास करता है, तो वह निश्चित रूप से जीवन में सफलता प्राप्त करता है। अनुशासित जीवन विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करता है तथा उनके आचरण को शुद्ध करता है। उन्हें एक आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करता है।

2. इंटरनेट की उपयोगिता

इंटरनेट आधुनिक तकनीक से निर्मित ऐसी संचार-प्रणाली है, जो दुनिया भर के सभी कंप्यूटरों को जोड़ती है। इससे सूचनाओं का आदान-प्रदान सरल हो गया है। इसने रेडियो, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं, मनोरंजन के अन्य साधनों तथा जानकारी के सभी स्रोतों को स्वयं में समाहित करके संचार के क्षेत्र में

एक क्रांति ला दी है। इसके माध्यम से शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, मनोरंजन, खेलकूद, पर्यटन, ज्ञान-विज्ञान आदि किसी भी विषय के संबंध में जानकारी सरलता से प्राप्त हो जाती है। विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से वीडियो कॉल के द्वारा किसी भी समय संपर्क किया जा सकता है, बातचीत की जा सकती है। इंटरनेट हमें ऑनलाइन पढ़ाई, शॉपिंग, बैंकिंग आदि की सुविधा भी प्रदान करता है। इंटरनेट की सहायता से हम दूर रहकर भी परस्पर जुड़े रह सकते हैं।

3. अभ्यास का महत्व

सफलता का मूलमंत्र है—अभ्यास। किसी कार्य को बार-बार करना अभ्यास कहलाता है। जब हम किसी कार्य को बार-बार करते हैं, तब उसमें निपुण हो जाते हैं। हम कार्य को अधिक कुशलता से कर पाते हैं। कठिन-से-कठिन कार्य भी हमें सरल लगने लगते हैं। अभ्यास से हमारी एकाग्रता में वृद्धि होती है और सफलता सुनिश्चित हो जाती है। अभ्यास ऐसी शक्ति है, जिसके बल पर मूर्ख व्यक्ति भी बुद्धिमान बन जाता है। अभ्यास के द्वारा हम अपने लक्ष्यों को सरलता से प्राप्त कर लेते हैं। अभ्यास के बल पर ही एकलव्य अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धारी बन पाया। वरदराज मूर्ख से व्याकरण के महान विद्वान बन गए। अभ्यास वह गुण है, जो असंभव को संभव कर देता है। व्यक्ति के अंदर निहित शक्तियों को जगाता है तथा एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होता है।

4. जन्मदिन का उत्सव

कल मेरे सहपाठी अक्षय का जन्मदिन था। उसने अपने जन्मदिन पर मुझे भी आमंत्रित किया था। उसके घर पर आयोजित जन्मदिन की पार्टी का आयोजन सचमुच भव्य था। पूरा घर गुब्बारों तथा फूलों से सजा हुआ था। लॉन में रंग-बिरंगी बत्तियाँ लगी थीं। मेरे सारे सहपाठी वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। अक्षय नए कपड़े पहने बहुत सुंदर लग रहा था। मैं जब उससे मिला, तब उसने मुझे गले लगाकर आने के लिए धन्यवाद कहा तथा अपने सभी मित्रों से मेरा परिचय करवाया। हम सब वहाँ बज रहे संगीत का आनंद लेने तथा नृत्य करने लगे। आठ बजे अक्षय ने केक काटा और जब उसने प्यार से केक का एक टुकड़ा मेरे मुँह में डाला, तब मैं गद्‌गद हो गया। हम सभी दोस्तों ने उसे जन्मदिन की बधाई दी। हमने मिलकर खाना खाया। खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। रात अधिक हो चली थी, हमने अक्षय से विदा ली तथा जन्मदिन की एक बार पुनः मुबारकबाद देते हुए घर की ओर चल पड़े।

5. स्वावलंबन

एक पुरानी कहावत है, "ईश्वर उनकी सहायता करते हैं, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।" दूसरों के भरोसे न रहकर स्वयं पर भरोसा करना स्वावलंबन कहलाता है। स्वयं अपनी क्षमताओं का विकास करके हम स्वावलंबी बन सकते हैं। स्वावलंबन की आदत बचपन से ही डाली जानी चाहिए। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है। दृढ़ इच्छाशक्ति तथा कठोर परिश्रम जैसे भाव मन में आते हैं। इनके बल पर प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। स्वावलंबी व्यक्ति प्रत्येक कार्य चिंतन-मनन करके करता है। उसमें सही समय पर सही निर्णय लेने की शक्ति होती है, जो प्रत्येक स्तर पर उसकी सफलता को सुनिश्चित करती है। व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व को समझता है। हर कठिनाई का डटकर मुकाबला कर सकता है, दूसरों के भरोसे रहकर अपना समय नष्ट नहीं करता। इसी कारण स्वावलंबी व्यक्ति सदा प्रसन्नचित, सुखी तथा शांत रहते हैं। उन्हें सर्वत्र सम्मान मिलता है।

6. मधुर वाणी

मधुर वाणी ईश्वर का दिया एक सर्वोत्तम उपहार है। वाणी की मधुरता ऐसी शक्ति है, जो सभी व्यक्तियों को आकर्षित कर सकती है, उन्हें अपना बना सकती है। कटु वाणी जहाँ वैमनस्य का कारण होती है, वहीं मधुर वाणी पारस्परिक कलह को दूर कर सौहार्दयता को बढ़ाती है। मधुर वाणी स्वयं के तथा सुननेवालों के मन को शीतलता प्रदान करती है। यह हमारे व्यक्तित्व का आईना है, जो हमारे आचरण की शिष्टता को दिखाता है। यह हमारे मन में स्थित मधुर भावों की अभिव्यक्ति है। ऐसे भाव श्रोता में प्रेम, स्नेह तथा अपनापन जगाते हैं। मधुर वाणी हमारे अहंकार का नाश कर हमें सबका प्रिय पात्र बना देती है। मधुर वाणी समाज में 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना का संचार करती है।

7. प्रात:काल भ्रमण के लाभ

स्वस्थ रहने के लिए एक उत्तम औषधि है—'प्रातःकाल का भ्रमण'। प्रातःकालीन भ्रमण हमारे तन तथा मन दोनों को स्वस्थ रखता है। पक्षियों का कलरव मन में उत्साह जगाता है तथा शरीर में स्फूर्ति भरता है। आसमान में उदित होता सूर्य नवीन आशा का संचार करता है। ऐसे समय में भ्रमण करने से आलस्य दूर होता है। मन चिंतारहित होता है। नए जोश से काम करने की इच्छा मन में जागती है। प्रातःकाल की शुद्ध हवा बीमारियों को दूर कर स्वास्थ्य में सुधार करती है। थकावट को दूर कर हमारे शरीर में नई स्फूर्ति उत्पन्न करती है। प्रातःकाल का भ्रमण एक प्रकार का व्यायाम है, जो शरीर के सभी अवयवों को स्वस्थ रखने में सहायक है। इसलिए, हमें नियमित रूप से प्रातःकाल का भ्रमण करना चाहिए।

8. यदि मैं वैज्ञानिक होता

जब मैं अपने चारों ओर दृष्टि घुमाता हूँ, तब पाता हूँ कि पूरा विश्व अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। चारों ओर अराजकता, अशांति, संदेह का वातावरण है। यदि मैं वैज्ञानिक होता, तो ऐसा आविष्कार करता, जिससे मानवीय समस्याओं का निराकरण हो पाता। हमें शुद्ध हवा तथा शुद्ध जल उपलब्ध होते। चारों ओर शांति होती। मेरे आविष्कारों का प्रयोग केवल शांतिपूर्ण कार्यों के लिए किया जाता। युद्ध जैसे विनाशकारी कार्यों में मेरे आविष्कार किसी काम न आते। मैं लाइलाज बीमारियों की रोकथाम के उपाय ढूँढ़ता। मानव जाति की सुख-समृद्धि तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं जी-जान से प्रयास करता। यदि मैं वैज्ञानिक होता, तो अपने देश को प्रगति के नए युग में ले जाता।

9. स्वच्छ भारत अभियान

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत को साफ़-सुथरा तथा स्वच्छ रखने के लिए चलाया गया अभियान है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता के अभाव में हमारे देश में स्थान-स्थान पर, यहाँ तक कि जल-स्रोतों के आसपास भी कूड़े के ढेर दिखाई देते हैं। स्वच्छता अभियान में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इसे 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया था। इस अभियान का उद्देश्य संपूर्ण राष्ट्र को स्वच्छ बनाना है। शौचालयों का निर्माण करना है, ताकि लोग खुले में शौच न जाएँ। प्रत्येक गली-मोहल्ले में कूड़ेदान की व्यवस्था की जाए, ताकि लोग कूड़ा इधर-उधर न फैलाएँ। स्वच्छता के प्रति लोगों की मानसिकता को बदला जाना चाहिए। लोग स्वेच्छा से साफ़-सफ़ाई रखें, इसके लिए व्यापक पैमाने पर जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

10. पुस्तकें—हमारी अभिन्न मित्र

पुस्तकें हमारी अभिन्न मित्र हैं। ये हमारी सच्ची पथ-प्रदर्शक होती हैं। ये ऐसा ज्ञान का भंडार हैं, जो हमें सदा सन्मार्ग पर अग्रसर करती हैं। एकांत में ये हमारी सच्ची साथी होती हैं, जो अपने लेखों, कहानियों तथा विभिन्न विषय-सामग्रियों के द्वारा हमारा मनोरंजन करती हैं। ये एक मित्र की भाँति हमें गलत रास्ते पर चलने से रोकती हैं। हमारे आचरण को शुद्ध करके हमें अच्छे-बुरे की पहचान करवाती हैं। इनसे हमें कठिन परिस्थितियों में विजय प्राप्त करने का आत्मबल मिलता है तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा भी। जिस प्रकार एक सच्चा मित्र अपने मित्र की समृद्धि तथा उन्नति चाहता है, उसी प्रकार पुस्तकों में निहित ज्ञान हमें विकास की राह दिखाता है। हमें नैतिक व आत्मिक बल प्रदान करता है।

हमने जाना

- किसी एक ही भाव या विचार को व्यक्त करनेवाले किसी विषय का स्पष्ट तथा संक्षिप्त वर्णन अनुच्छेद कहलाता है।
- अनुच्छेद की भाषा सरल, स्पष्ट तथा रोचक होती है।

आओ कुछ करें

दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।

क. नदी की आत्मकथा

ख. महानगरों की यातायात समस्या

ग. जैसी करनी, वैसी भरनी

घ. रोबोट

ङ. मेले का दृश्य

च. हमारा राष्ट्रीय ध्वज

कार्यकलाप

विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँटें। उन्हें कुछ विषय दें। एक समूह को उसके पक्ष में तथा दूसरे समूह को उसके विपक्ष में एक अनुच्छेद लिखने के लिए दें।

जाना-समझा

अनुच्छेद लिखने से पहले अपने मस्तिष्क में उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। इससे विषय स्पष्ट हो जाता है।

34 कहानी-लेखन

कहानी सुनने तथा सुनाने की परंपरा हमारे देश में सदियों से चली आ रही है। कहानी में किसी घटना या विषय को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। कहानी जितनी रोचक होती है, उतनी ही प्रभावशाली होती है। कहानी लिखते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- कहानी का शीर्षक रोचक होना चाहिए।
- कहानी सरल भाषा में लिखी जानी चाहिए।
- कहानी की विषयवस्तु स्पष्ट होनी चाहिए।
- कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए।

कहानी-लेखन के कुछ उदाहरण पढ़ें तथा समझें।

1. दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिखिए।

सूझबूझ

एक जंगल में एक हरा-भरा चरागाह था। वहाँ जानवर चरने के लिए आया करते थे। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक सँकरा पुल पार करना पड़ता था। पुल इतना सँकरा था कि उसपर से एक समय में केवल एक ही जानवर निकल पाता था। एक दिन एक भूरी बकरी उस चरागाह में चरने के

लिए जा रही थी। कुछ सोचते-सोचते वह पुल पर चढ़ गई। जब पुल के आधे में पहुँची, तब उसकी नज़र दूसरी ओर से आ रही एक काली बकरी पर पड़ी। काली बकरी भूरी बकरी के बिलकुल पास पहुँच चुकी थी। सँकरा पुल होने के कारण दोनों बकरियाँ एक ही समय में पुल पार नहीं कर सकती थीं। पुल पार करने के लिए एक बकरी को वापस जाना पड़ता। दोनों बकरियाँ आधा रास्ता पार कर चुकी थीं, इसलिए कोई भी वापस नहीं जाना चाहती थी। बकरियाँ समझदार थीं। आपस में लड़ने के स्थान पर उन्होंने समझदारी दिखाई। भूरी बकरी नीचे बैठ गई और काली बकरी उसके ऊपर पैर रखकर दूसरी ओर निकल गई। दोनों बकरियों ने मुड़कर एक-दूसरे को देखा और मुसकराईं। मानो कह रही हों—"सूझबूझ से किसी भी समस्या का हल निकाला जा सकता है।"

2. **दिए गए संकेतों को पढ़िए तथा उनके आधार पर कहानी लिखिए।**

   दो राजा...परस्पर युद्ध हुआ...एक राजा पराजित...जंगल में...गुफा में छिपा...एक मकड़ी जाला बुनती हुई...गिरना तथा उठना...बार-बार प्रयास... सफल...राजा उठा...नए जोश से...चढ़ाई की...विजयी हुआ

प्रयत्न का फल

एक राजा था। उसपर एक अन्य राजा ने चढ़ाई कर दी। राजा बड़ी वीरता से लड़ा, परंतु पराजित हो गया। वह स्वयं को बचाने के लिए रणभूमि छोड़ जंगल की ओर भागा। जंगल में वह एक गुफा में छिप गया। मन-ही-मन वह अपनी हार के कारणों पर विचार कर रहा था। तभी, उसकी निगाह गुफा की छत पर गई। वहाँ एक मकड़ी जाला बनाने का प्रयास कर रही थी। वह थोड़ा-सा जाला बनाती और ज़मीन पर आ गिरती। लेकिन, अगले ही पल वह उठती, फिर ऊपर चढ़ती तथा उसी जोश से जाला बनाने में जुट जाती। बार-बार गिरती और बार-बार उठती, लेकिन हिम्मत नहीं हारती। बार-बार प्रयास करते हुए आखिरकार वह जाला बनाने में सफल हुई।

उसे देख राजा के मन में यह बात आई कि नन्ही-सी मकड़ी ने इतनी बार असफल होने पर हिम्मत नहीं हारी। वह तो मनुष्य है, उसे भी पुनः प्रयास करना चाहिए। मन-ही-मन प्रण कर राजा उठा। गुफा से बाहर निकलकर उसने अपनी सेना को पुनः इकट्ठा किया और दुश्मन पर चढ़ाई कर दी।

राजा ने पूर्ण उत्साह और वीरता से लड़कर विजय प्राप्त की तथा अपने राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया। नन्ही-सी मकड़ी ने उसे यह पाठ पढ़ाया कि परेशानियों से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए। इससे सफलता अवश्य मिलेगी।

3. दिए गए शीर्षक के आधार पर कहानी लिखिए।

एकता में बल है

एक जंगल में चार गाएँ रहती थीं। उनमें गहरी मित्रता थी। वे साथ-साथ जंगल में चरती थीं, साथ-साथ रहती थीं। उनकी ओर आँख उठाकर देखने की किसी जानवर की हिम्मत न होती। उसी जंगल में एक शेर रहता था। वह बहुत दिनों से उन्हें अपना भोजन बनाना चाहता था, परंतु हिम्मत नहीं कर पाता था। एक दिन शेर ने एक गाय पर आक्रमण करने का प्रयास किया। तुरंत ही चारों ने मिलकर उसपर अपने सींगों के तीक्ष्ण प्रहार किए तथा उसे बुरी तरह घायल करके भगा दिया।

कुछ दिन बीत गए। एक दिन घास चरते-चरते चारों गाएँ न जाने किस बात पर लड़ पड़ीं और रूठकर अलग-अलग चल पड़ीं। शेर ने चुपके से एक गाय का पीछा किया। जब निश्चिंत हो गया कि उसकी सहेलियाँ उसकी सहायता के लिए नहीं आएँगी, तब उसपर झपटकर उसे मारकर खा गया। शेर रोज़ शाम के समय ताक में बैठा रहता। जैसे ही गाएँ चरकर अलग-अलग दिशा में जातीं, वह किसी एक का पीछा करता, उसे मारकर खा जाता। इस प्रकार उसने चारों को मारकर खा लिया। जिन्हें मिलकर रहने पर कोई हरा नहीं पाता था, उन्हें उनकी आपसी फूट ने हरा दिया। सच ही कहा गया है—"एकता में बल है।"

हमने जाना

- कहानी किसी घटना का रोचक वर्णन होती है।
- कहानी जितनी रोचक होती है, उतनी ही प्रभावशाली होती है।

आओ कुछ करें

1. दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिखिए।

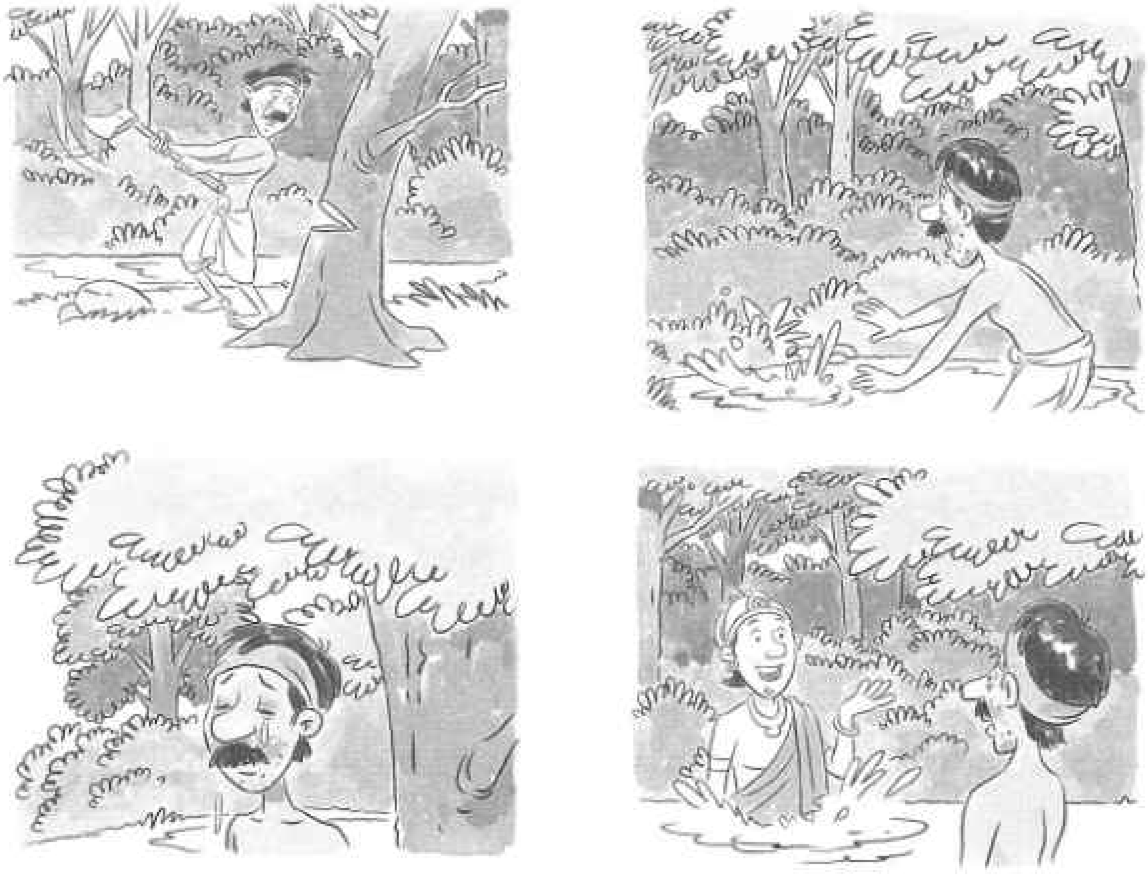

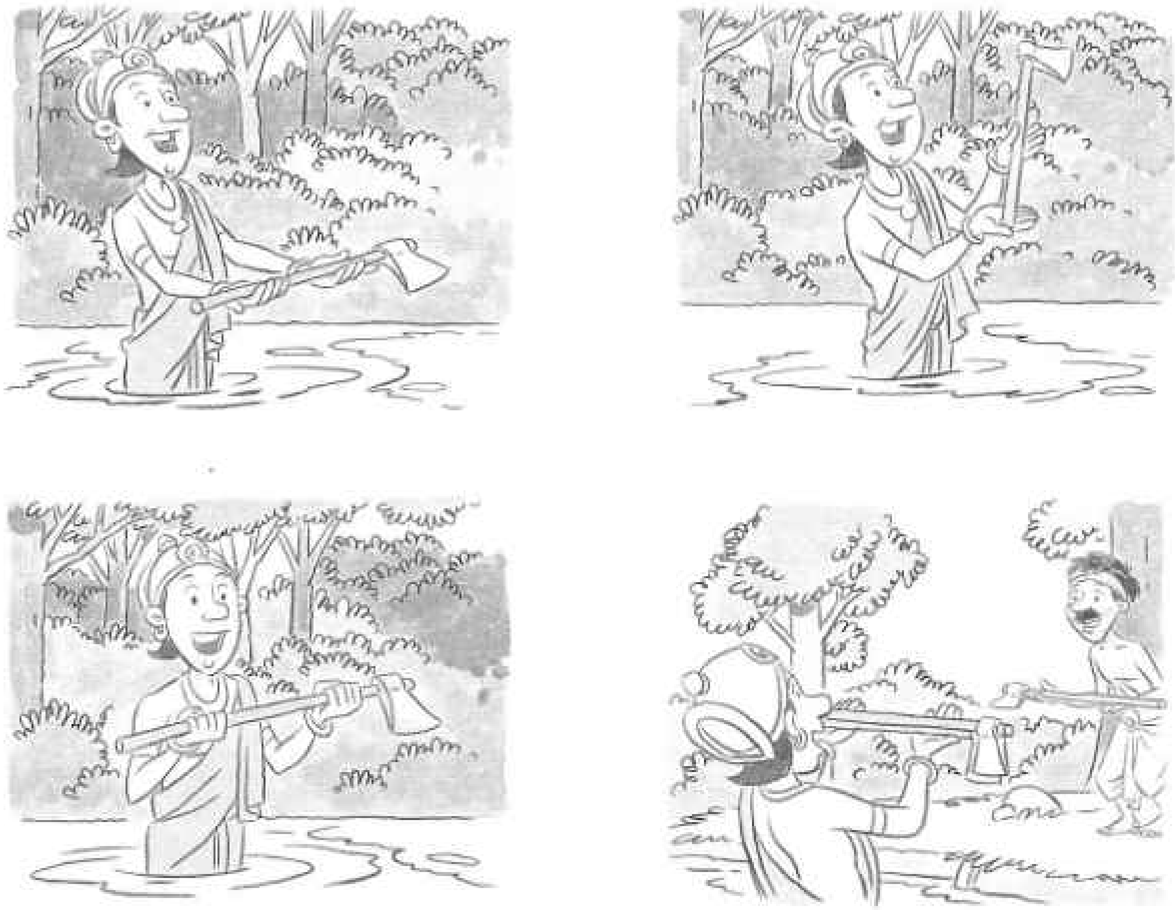

2. दिए गए संकेतों को पढ़िए तथा अपने शब्दों में इनपर आधारित रोचक कहानी लिखिए।

   तीन चोर...चोरी में बहुत माल मिला...जंगल में छिप गए...एक चोर शहर खाने का सामान... दो रखवाली...शहर में उसने भोजन में ज़हर मिलाया...वापस दोनों चोरों ने उसे मारा...खाना खाया...मर गए...जैसा करोगे वैसा भरोगे

3. **'लालच बुरी बला' शीर्षक पर एक कहानी लिखिए।**

कार्यकलाप

शिक्षक कक्षा में एक कहानी-प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे। सभी विद्यार्थियों को अपनी पसंद की कोई कहानी सुनाने का अवसर देंगे। शिक्षक कहानी में निहित शिक्षा पर कक्षा में चर्चा करेंगे।

जाना-समझा

कल्पना द्वारा कहानी को अधिक संवेदनशील बनाया जा सकता है। इसलिए, कहानी लिखते समय अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करना चाहिए।

35 पत्र-लेखन

आधुनिक समय में पत्र-लेखन कम अवश्य हुआ है, परंतु पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। आज भी पत्र अपने भावों, विचारों तथा संदेशों की अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण साधन हैं। एक पत्र लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पत्र संक्षिप्त, सरल तथा स्पष्ट हो। पत्र-लेखन का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।

पत्र संदेश भेजने तथा प्राप्त करने का सरल तथा सस्ता साधन है।

पत्र के प्रकार

पत्र दो प्रकार के होते हैं—औपचारिक तथा अनौपचारिक।

औपचारिक पत्र प्रार्थना-पत्र, व्यावसायिक पत्र तथा कार्यालयी पत्रों को औपचारिक पत्र कहते हैं।

अनौपचारिक पत्र मित्रों, पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों को लिखे पत्रों को अनौपचारिक पत्र कहते हैं।

औपचारिक पत्र का प्रारूप

भेजनेवाले का पता

दिनांक

जिसे पत्र भेजा गया है, उसका नाम/पद/पता

विषय

संबोधन (श्रीमान/महोदय/मान्यवर/माननीय आदि)

विषयवस्तु

धन्यवाद

भवदीय (आपका आज्ञाकारी शिष्य/शिष्या, निवेदक/प्रार्थी/विनीत इत्यादि)

पत्र भेजनेवाले का नाम/हस्ताक्षर

औपचारिक पत्रों के उदाहरण

1. आपकी बड़ी बहन का विवाह है। वैवाहिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रधानाचार्य को पाँच दिन के अवकाश के लिए पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

नवोदय बाल विद्यालय, खिचड़ीपुर

दिल्ली—110091

दिनांक 11 नवंबर, 20...

विषय अवकाश के लिए पत्र

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा छठी 'अ' का छात्र हूँ। मेरी बड़ी बहन का विवाह 15 नवंबर को होना निश्चित हुआ है। वैवाहिक कार्यक्रम 12 नवंबर से ही आरंभ हो जाएँगे। सभी रीति-रिवाजों को करते समय मेरा वहाँ उपस्थित रहना अनिवार्य है। इसलिए, मैं 12 नवंबर से 16 नवंबर तक विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। अतः, आप मुझे पाँच दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

सुधांशु वत्स

कक्षा छठी 'अ'

2. आपके क्षेत्र में फैली गंदगी के संबंध में नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

81 ब, भजनपुरा

नई दिल्ली—110053

दिनांक 18 जुलाई, 20...

सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी

दिल्ली नगर निगम

भजनपुरा, नई दिल्ली

विषय स्वास्थ्य अधिकारी को क्षेत्र की स्थिति के बारे में पत्र

महोदय

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र में फैली गंदगी तथा सफ़ाई-संबंधी अव्यवस्था

की ओर दिलाना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में कोई कूड़ा उठानेवाली गाड़ी नहीं आती जिसके कारण जगह-जगह कूड़े के ढेर लग गए हैं। उनपर मक्खी-मच्छर तो पनप ही रहे हैं, उससे उठनेवाली बदबू असहनीय होने के कारण वहाँ से लोगों का निकलना भी दूभर हो जाता है। बीमारियों के बढ़ने का खतरा निरंतर बढ़ता जा रहा है। कचरा नालियों में भरने के कारण पानी की निकासी अवरुद्ध हो जाती है, फलस्वरूप गंदा पानी लोगों के घरों में घुस जाता है।

आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं स्थिति का जायजा लें तथा दोषी कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करें।

धन्यवाद

भवदीय

केवल कृष्ण

('अध्यक्ष', भजनपुरा सुधार समिति)

3. लाउडस्पीकरों के शोर की शिकायत करते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

जनकपुरी पूर्व

नई दिल्ली—110058

दिनांक 18 फरवरी, 20...

सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय

जनकपुरी पूर्व, नई दिल्ली

विषय लाउडस्पीकरों के शोर की शिकायत करते हुए पत्र

महोदय

मैं अपने पत्र के माध्यम से आपका ध्यान असमय बजनेवाले लाउडस्पीकरों के शोर से विद्यार्थियों को होनेवाली असुविधा की ओर दिलाना चाहता हूँ। अगले महीने से बच्चों की बोर्ड की परीक्षाएँ आरंभ होनेवाली हैं। यह समय उनके भविष्य तथा अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बच्चे रात-रातभर जागकर अपनी पढ़ाई पूरी करने में जुटे हैं। ऐसे समय में रातभर बजनेवाले लाउडस्पीकरों का शोर उनकी एकाग्रता को भंग करता है। इससे उनकी पढ़ाई में बाधा पड़ती है।

लाउडस्पीकरों को बजाने के संबंध में यद्यपि संबंधित अधिकारियों की ओर से उचित दिशा-निर्देश दिए गए हैं, तथापि उन दिशा-निर्देशों की अवहेलना सामान्य बात है। अतः, आपसे विनम्र प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस संबंध में कठोर कार्यवाही करें।

धन्यवाद

भवदीय

अनंत कुमार

4. बिजली कटौती से उत्पन्न संकट की ओर ध्यान दिलाते हुए संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।

आदर्श सोसायटी

नांगलोई, दिल्ली—110041

दिनांक 9 मार्च, 20...

सेवा में

अधिशासी अभियंता

दिल्ली विद्युत बोर्ड

नांगलोई क्षेत्र, नई दिल्ली

विषय बिजली कटौती से उत्पन्न संकट के संबंध में पत्र

महोदय

मैं नांगलोई क्षेत्र का निवासी हूँ। मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान इस क्षेत्र में असमय की जा रही बिजली कटौती की ओर दिलाना चाहता हूँ। असमय बिजली कटौती से घरेलू कार्यों में असुविधा होती है। घरों में पीने के पानी के आने का निश्चित समय है, जो मोटरों के बिना नहीं आ पाता। मोटरों के न चलने से पानी की आपूर्ति नहीं हो पाती, सारा दिन बिना पानी के रहना पड़ता है। गरमी के कारण बच्चे न तो मन लगाकर पढ़ पाते हैं और न ही सो पाते हैं। सारी दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो जाती है। बिजली कटौती की कोई पूर्व सूचना नहीं मिलने के कारण यह संकट अधिक गहरा हो जाता है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया गरमी के दिनों में बिजली कटौती न की जाए। यदि अति आवश्यक हो, तो निश्चित समय के लिए की जाए तथा उसकी पूर्व सूचना दी जाए।

सधन्यवाद

भवदीय

आलोक भार्गव (अध्यक्ष, आदर्श सोसायटी, नांगलोई)

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

पत्र भेजनेवाले का पता

दिनांक

संबोधन (प्रिय मित्र/सखी/बहन/पिता आदि)

अभिवादन (मधुर स्मरण/सस्नेह/आशीर्वाद/सादर प्रणाम)

विषयवस्तु

समाप्ति (तुम्हारा अभिन्न मित्र/तुम्हारा अग्रज/आपका प्रिय पुत्र)

अनौपचारिक पत्रों के उदाहरण

1. आपका मित्र चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम आया है। उसे बधाई देते हुए एक पत्र लिखिए।

14ए, कैलाशपुरी

हरिद्वार

दिनांक 8 नवंबर, 20...

प्रिय मित्र

मधुर स्मरण

तुम मुझे याद करो या न करो, परंतु मैं तुम्हें हर क्षण याद करता हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे कहीं-न-कहीं से सूचना मिलती ही रहती है। अभी कल ही अनमोल से भेंट हुई थी। उसीसे पता चला कि तुमने राज्यस्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। तुम्हारे द्वारा बनाया गया चित्र स्थानीय समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हुआ था। सच में, यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। मुझे गर्व है कि मेरे मित्र ने ऐसा कर दिखाया। मेरी ओर से इस शानदार उपलब्धि के लिए तुम्हें हार्दिक बधाई। माताजी तथा पिताजी की ओर से भी तुम्हें बधाई तथा आशीर्वाद। पत्र लिखते रहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

राघव राय

2. मन लगाकर पढ़ने की सलाह देते हुए छोटी बहन को एक पत्र लिखिए।

आनंद निकेतन

मानसरोवर रोड, देहरादून

दिनांक 18 जनवरी, 20...

प्रिय नित्या

शुभाशीर्वाद

कई दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा था, परंतु व्यस्तता के कारण नहीं लिख सका। जानता हूँ, तुम मेरी स्थिति समझोगी तथा बुरा नहीं मानोगी। उम्मीद करता हूँ कि तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही होगी। परीक्षाएँ आनेवाली हैं, इसलिए अब और मन लगाकर पढ़ना तथा ज़रा भी लापरवाही मत करना। कहीं कोई कठिनाई अनुभव हो, तो निस्संकोच अपने शिक्षक से पूछ लेना।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दोगी तथा पढ़ाई से संबंधित अपनी प्रगति के बारे में मुझे अवगत करवाती रहोगी। घर में तुम्हें सभी बहुत याद करते हैं। छुट्टियों में घर आओगी, तो खूब मज़े करेंगे। ढेर-सा प्यार।

तुम्हारा अग्रज

अक्षत खन्ना

3. विद्यालय की ओर से आयोजित शैक्षणिक भ्रमण के अपने अनुभव बताते हुए अपने दादाजी को पत्र लिखिए।

14बी, तिलक गली

दिल्ली

दिनांक 10 सितंबर, 20...

आदरणीय दादाजी

सादर प्रणाम

हम यहाँ पर कुशलपूर्वक हैं। आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल तथा प्रसन्नचित होंगे। पिछले सप्ताह मैं विद्यालय की ओर से शैक्षणिक भ्रमण पर अग्रसेन की बावड़ी देखने गया था। दिल्ली के कनॉट प्लेस में स्थित यह बावड़ी बहुत प्राचीन है। पानी के संग्रहण तकनीक के कारण ही नहीं, बल्कि वास्तुकला की दृष्टि से भी यह बावड़ी आकर्षण का केंद्र है।

दादाजी, क्या आपने कभी ऐसी बावड़ी को देखा है? अब आप जब दिल्ली आएँगे, तब हम सब मिलकर दोबारा इसे देखने जाएँगे। पिताजी और माँ की ओर से आपको तथा दादी माँ को प्रणाम।

आपका पोता

नकुल

4. पिताजी से रुपये मँगवाने के लिए एक पत्र लिखिए।

सर्वोदय कन्या छात्रावास

कानपुर

दिनांक 15 जनवरी, 20...

आदरणीय पिताजी

सादर प्रणाम

कल ही आपका पत्र मिला। आप मेरी पढ़ाई के बारे में पूछ रहे थे। पिताजी मेरी पढ़ाई बिलकुल सही चल रही है। आजकल शिक्षक कोर्स पूरा करवाने में लगे हैं। आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कक्षाएँ भी ली जा रही हैं।

पिताजी, कहते हुए संकोच हो रहा है कि मुझे अतिरिक्त पुस्तकें खरीदने के लिए कुछ रुपयों की आवश्यकता है। मैं जानती हूँ कि इस समय आपका हाथ काफी तंग है। ये पुस्तकें परीक्षा के लिए उपयोगी हैं, इसलिए मैं इन्हें खरीदना चाहती हूँ। यदि संभव हो सके, तो मुझे 300 रुपये भिजवा दें।

माँ और दादी को मेरा प्रणाम। अनुज गुड्डू को बहुत-बहुत प्यार।

आपकी बेटी

शैलजा

हमने जाना

- पत्र संदेश भेजने तथा प्राप्त करने का सस्ता व सुलभ साधन है।
- पत्र औपचारिक तथा अनौपचारिक होते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए विषयों पर पत्र लिखिए।

क. विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

ख. माताजी को अपनी पढ़ाई की प्रगति के बारे में बताते हुए पत्र लिखिए।

ग. आपके किसी मित्र को अपने विद्यालय की फुटबॉल टीम का कप्तान चुना गया है। उसे बधाई-पत्र लिखिए।

घ. अपनी छोटी बहन को पढ़ाई के साथ-साथ व्यायाम का महत्व बताते हुए पत्र लिखिए।

ङ. आपके शहर में कई बार भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। अपने अनुभव बताते हुए अपनी नानी को पत्र लिखिए।

च. अपने छोटे भाई को जन्मदिन पर घड़ी उपहार में भेजते हुए एक शुभकामना-पत्र लिखिए।

छ. अपनी साइकिल चोरी होने की सूचना देते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

कार्यकलाप

आपने बचपन में कौए और लोमड़ी की कहानी पढ़ी थी। उस कहानी से आपने क्या सीखा या उसे पढ़ने के बाद आपके व्यवहार में क्या परिवर्तन आया? इसका वर्णन करते हुए अपनी दादी को पत्र लिखिए।

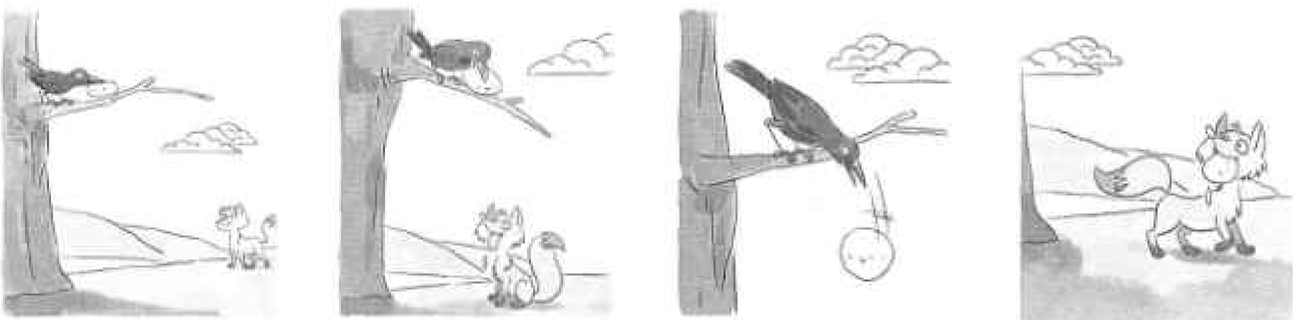

जाना-समझा

ई-मेल पत्र का आधुनिक रूप है।

36 निबंध-लेखन

किसी विषय पर अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखना निबंध कहलाता है। एक अच्छा निबंध लिखने से पहले हमें उसकी पूर्व रूपरेखा बना लेनी चाहिए। एक अच्छे निबंध में भूमिका, विषयवस्तु तथा उपसंहार प्रमुख होता है। भूमिका में विषय के संबंध में संक्षिप्त जानकारी होती है। विषयवस्तु में विषय-संबंधी जानकारी होती है। उपसंहार में विषय का सार दिया जाता है। निबंध की भाषा सरल तथा सुबोध होनी चाहिए।

निबंध के कुछ उदाहरण पढ़ें।

1. समय का महत्व

संत कबीरदासजी का एक प्रसिद्ध दोहा है—

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करैगा कब॥

अर्थात, हमें कल का काम आज और आज का काम अभी करना चाहिए। इस दोहे में समय के महत्व को बताया गया है। आनेवाले पल में क्या होनेवाला है, यह हम नहीं जानते। समय का पहिया निरंतर गतिमान रहता है। प्रत्येक पल जो बीत जाता है, उसे पुनः नहीं लौटाया जा सकता। इसलिए, हमें हर पल, हर क्षण का सदुपयोग करना चाहिए।

जिस प्रकार से लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं, उसी प्रकार समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह आता है, और चला जाता है। जो समय को पहचानकर उसका सही उपयोग करता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। एक प्रसिद्ध कहावत है—'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।' अर्थात, समय बीत जाने पर पश्चात्ताप करने से कोई लाभ नहीं। विद्यार्थी जीवन में तो समय का बहुत महत्व है। जो विद्यार्थी समय पर सभी दैनिक कार्य करते हैं, उनका भविष्य उज्ज्वल होता है।

समय के एक-एक पल का महत्व है। इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। विद्यार्थियों को पहले ही लक्ष्य निर्धारित करके रखना चाहिए ताकि उचित समय पर प्रयास कर वे अपनी सफलता सुनिश्चित कर लें। विद्यार्थियों को भूत तथा भविष्य के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए, अपितु जो समय चल रहा है, जो वर्तमान है, उसी का लाभ उठाना चाहिए।

समय अमूल्य है। मनुष्य सबकुछ खरीद सकता है, परंतु समय को खरीद नहीं सकता। लेकिन, इसका सही उपयोग करके इसका अधिकतम लाभ अवश्य उठा सकता है। इससे वह वो सबकुछ प्राप्त कर सकता है, जिसे वह प्राप्त करना चाहता है।

जीवन में सफलता उन्हें ही प्राप्त होती है, जो समय का सदुपयोग करते हैं। जो आलस्य का त्याग करते हैं और सभी काम नियत समय पर करते हैं, वही उन्नति और विकास के पथ पर अग्रसर होते हैं। इसलिए, समय के महत्व को स्वीकार करते हुए उसका उचित उपयोग करना चाहिए।

2. जीवन में खेलों का महत्व

एक प्राचीन कहावत है—"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।" शरीर को स्वस्थ रखने में खेलों के महत्वपूर्ण योगदान से आधुनिक पीढ़ी भली-भाँति परिचित है। इसलिए, युवाओं का रुझान खेलों के प्रति निरंतर बढ़ता जा रहा है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में विद्यार्थियों की रुचि भी खेलों के महत्व को उजागर करती है।

खेल दो प्रकार के होते हैं—एक वह जो घर के अंदर खेले जाते हैं तथा दूसरे वह जो घर के बाहर खेले जाते हैं। दोनों प्रकार के खेल शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास में सहायक होते हैं। इसलिए, खेलों का नियमित अभ्यास किया जाना आवश्यक है।

खेल एक शारीरिक व्यायाम है। इससे हमारे शरीर में चुस्ती तथा स्फूर्ति आती है। पूरे शरीर में रक्त का परिसंचरण होता है। हड्डियाँ मजबूत बनती हैं। शरीर सुडौल तथा आकर्षक बनता है। आलस्य दूर होता है तथा शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है। शरीर रोगमुक्त तथा तंदुरुस्त बनता है।

खेल हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ-साथ मानसिक रूप से भी स्वस्थ रखते हैं। खेलों से हम अपने मन को एकाग्र करना सीखते हैं। खेलों से अनुशासन की भावना आती है। हममें धैर्य, सहनशीलता, नियमितता आदि गुण उत्पन्न होते हैं। खेल हमें हार तथा जीत को समभाव से लेना सिखाते हैं। दूसरे खिलाड़ियों के साथ खेलने से परस्पर सहयोग, संगठन तथा अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण का भाव पैदा होता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिस एकाग्रता, अथक प्रयास तथा सहनशीलता की आवश्यकता होती है, वह हमें खेलों से सहज ही प्राप्त हो जाता है।

खेल हमारे अंदर कई नैतिक गुणों का विकास करते हैं। खेल हमें चिंतन-मनन द्वारा अपनी कमज़ोरियों को जानने-परखने का अवसर देते हैं तथा उन्हें दूर करने के उपाय सुझाते हैं। हमें विनम्र बनाते हैं तथा समय का पालन करना सिखाते हैं। हमारे अंदर सामूहिक गतिविधि में भाग लेने, सामाजिक व्यवहार, परस्पर प्रेम तथा मेलजोल के गुण आते हैं।

खेल मनोरंजन के साधन होते हैं। यह हमारी उदासी और निराशा को दूर कर हमें आनंद और खुशी से भर देते हैं। आधुनिक समय में तो खेल हमें प्रसिद्धि और धन भी प्रदान करते हैं। खेल हमारे तनाव को दूर कर हमें प्रफुल्लित भी करते हैं।

आजकल की भागदौड़-भरी ज़िंदगी में यदि हमें तनावमुक्त जीवन जीना है, स्वस्थ रहना है, अपना शारीरिक तथा मानसिक विकास करना है, तो हमें खेलों के महत्व को समझना चाहिए। शिक्षा के साथ-साथ खेलों पर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

3. परीक्षा का पहला दिन

विद्यार्थी जीवन में परीक्षा का बहुत महत्व है। परीक्षा विद्यार्थियों की समझ तथा योग्यता का मूल्यांकन करती है। अध्ययन के प्रति उनकी रुचि जागृत करती है। अपनी कमज़ोरियों को समझने का अवसर देती है तथा स्वयं में सुधार करने के उपाय अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

विद्यार्थी परीक्षा का नाम सुनकर ही भयभीत हो जाते हैं। उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उनकी सुध-बुध खो जाती है। जब मेरी परीक्षाएँ आरंभ हुईं, तब मेरी हालत भी कुछ ऐसी ही थी। परीक्षा के पहले

दिन तो मुझे अपना रोल नंबर ही नहीं मिल रहा था। बड़ी मुश्किल से मिला, तो मेरी जान-में-जान आई। पर, अंदर एक बेचैनी-सी महसूस होती रही। परीक्षा भवन पहुँचकर वहाँ का दृश्य देखकर मेरे हाथ-पाँव ही फूल गए। मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं सबकुछ भूल गया हूँ, मुझे कुछ भी याद नहीं।

मेरा मन रोने को कर रहा था। किसी से बात करने की भी इच्छा नहीं थी। आसपास विद्यार्थियों को पढ़ते हुए देख मैंने भी अपनी पुस्तक खोल ली थी, पर ऐसा लग रहा था कि उसमें लिखा कोई भी शब्द मुझे नहीं आता। बौखलाकर मैंने तुरंत पुस्तक बंद कर दी और थोड़ी देर आँख बंद करके बैठ गया।

परीक्षा आरंभ होने की घंटी सुन मेरा दिल बहुत ही ज़ोर-से धड़कने लगा। बार-बार अपने इष्टदेव का ध्यान कर मैंने परीक्षा भवन में प्रवेश लिया। परीक्षा पेपर हाथ में आते ही मेरे पसीने छूटने लगे। धड़कते हृदय से मैंने प्रश्नपत्र खोला। जल्दी-जल्दी एक सरसरी नज़र में सारा प्रश्नपत्र पढ़ गया। एक-दो-तीन...कोई भी प्रश्न मुझे नहीं आता था। मेरी रुलाई फूटने को थी। मैंने बड़ी कठिनाई से स्वयं को संयत किया। आँखें बंद की, तो माँ का चेहरा आँखों के सामने आ गया।

माँ कह रही थी,"हिम्मत नहीं हारते, सैनिक अंत तक लड़ते हैं।" धीरे-से मैंने आँखें खोलीं। संयत भाव से एक प्रश्न पढ़ा, शांत मन से उसपर विचार किया। उसका उत्तर लिख दिया। ऐसे ही मैंने एक-एक प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू किया। मेरा खोया आत्मविश्वास लौट आया। मेरे हाथों में दृढ़ता आ गई तथा लेखनी में तेज़ी। मैंने समय से पहले ही सारा प्रश्नपत्र हल कर लिया। एक बार पुनः पढ़ा। अनजानी जीत की चमक मेरी आँखों में थी।

परीक्षा भवन से निकलते हुए मैं सोच रहा था कि परीक्षा डर का नहीं, आत्मविश्वास का नाम है। यदि हम वर्षभर ईमानदारी से पढ़ते हैं, सभी कार्य समय पर करते हैं, नियमित अभ्यास करते हैं, तो परीक्षा हमारे अंदर डर नहीं, खुशी पैदा करती है। इसलिए, परीक्षाओं से विद्यार्थियों को घबराना नहीं चाहिए, अपितु पूरे साल कठिन परिश्रम करना चाहिए। विषय को रटने के स्थान पर समझकर तैयार करना चाहिए।

4. प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है, दूषित करना। पर्यावरण का दूषित होना या उसमें हानिकारक तत्वों का प्रवेश होना प्रदूषण कहलाता है। प्रकृति ने हमें अद्भुत पर्यावरण दिया था। शुद्ध जल, शुद्ध पवन, शुद्ध खाद्य पदार्थ, वनस्पतियों से भरी धरती।

मानव जाति ने स्वार्थवश प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार दोहन किया है कि वे अपनी स्वाभाविक निर्मलता छोड़कर मलिन तथा प्रदूषित हो गए हैं।

प्रदूषण हमें कई रूपों में दिखाई दे रहा है—भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।

बड़े-बड़े उद्योगों, कारखानों तथा वाहनों से निकलनेवाले धुएँ और जहरीली गैसों ने वातावरण को प्रदूषित कर दिया है। वातावरण में ये जहरीली गैसें इतनी घुल गई हैं कि साँस लेना भी दूभर हो गया है। प्रदूषित वायु से दमा जैसी अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं।

मनुष्य अपने लाभ के लिए वनों की कटाई करता जा रहा है, परिणामस्वरूप हमारे वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा कम तथा हानिकारक गैसों की मात्रा अधिक होती जा रही है।

वायु के साथ-साथ मानवीय गतिविधियाँ जल को भी प्रदूषित कर रही हैं। कल-कारखानों से निकला प्रदूषित पदार्थ नदी-नालों में मिलकर उसे प्रदूषित कर रहा है। यह प्रदूषित जल त्वचा-संबंधी अनेक रोगों को उत्पन्न करता है।

लाउडस्पीकर, वाहनों से निकलती कर्णकटु आवाज़ें, कल-कारखानों का शोर आदि ध्वनि प्रदूषण फैला रहे हैं। ध्वनि प्रदूषण मनुष्यों में तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग आदि बीमारियों को बढ़ा रहा है। इससे श्रवणशक्ति भी प्रभावित होती है।

हमारी मृदा भी प्रदूषण के प्रभाव से अछूती नहीं है। औद्योगिक कचरे, घरेलू कूड़ा-करकट, प्लास्टिक की थैलियाँ तथा फसलों के लिए प्रयुक्त कीटनाशक मृदा को दूषित कर रहे हैं। ऐसी मृदा पर उपजी खाद्य सामग्री में जहरीले तत्वों का समावेश कई रोगों को जन्म देता है।

बढ़ता हुआ प्रदूषण हमारी जीवनशैली को प्रभावित कर रहा है। इस समस्या से मुक्ति के लिए आवश्यक है कि जिन हानिकारक दूषित पदार्थों का समावेश हमारे पर्यावरण में हो गया है, हम उसे दूर करें। इसके लिए हमें अधिक-से-अधिक संख्या में पेड़-पौधे लगाने चाहिए। कारखानों से निकलनेवाले दूषित जल को नदियों में मिलने से रोकना चाहिए। वायु, जल, मृदा आदि को दूषित करनेवाले पदार्थों पर रोक लगानी चाहिए ताकि मानव जाति प्रदूषणमुक्त स्वच्छ पर्यावरण में जी सके।

5. वसंत ऋतु

भारत देश में अनेक ऋतुएँ बारी-बारी से आकर अपनी शोभा बिखेरती हैं। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत। इसमें वसंत ऋतु सबसे मनोहर होती है। इस समय मौसम बहुत सुहावना होता है। जलवायु समशीतोष्ण होती है। न तो अधिक गरमी होती है और न अधिक सरदी। इस कारण इस ऋतु को 'ऋतुराज' कहा जाता है।

वसंत ऋतु में प्रकृति अपने यौवन पर होती है। पेड़ों के पुराने पत्ते झड़ जाते हैं तथा नई, कोमल पत्तियाँ आने लगती हैं। उपवन में गुलाब, सूरजमुखी, गेंदा आदि अनेक फूल खिलने लगते हैं, जिनकी सुगंध आसपास के संपूर्ण वातावरण को सुगंधित कर देती है। फूलों पर यहाँ रंग-बिरंगी तितलियाँ मँडराने लगती हैं, वहीं भौंरे गुंजार करते हुए वातावरण को मदमस्त बनाते हैं। चारों ओर माधुर्य और सौंदर्य बिखरा रहता है।

इस समय खेतों में सरसों फूली हुई होती है। हरी-भरी पत्तियों के साथ पीले फूल अलग ही शोभा बिखेरते दिखाई देते हैं। खेतों में हरियाली छाई होती है। शीतल मंद पवन बहती है। आम के वृक्षों पर बौर आने लगते हैं। बागों में कोयल का मधुर स्वर गूँजने लगता है।

वसंत ऋतु में संपूर्ण जीव-जगत नई उमंग, नई स्फूर्ति तथा नई चेतना से भर जाता है। यह ऋतु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अति उत्तम होती है। यह ऋतु उदासी, निराशा को कम कर देती है। मनुष्यों में नए उत्साह का संचार करती है।

वसंत ऋतु में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। 'वसंत पंचमी' वसंत के आगमन पर मनाया जाता है।

इस दिन लोग पीले रंग के कपड़े पहनते हैं, केसरिया खीर अथवा हलवा बनाते हैं। झूला झूलते हैं तथा गीत गाते हैं। इसी ऋतु में होली का त्योहार मनाया जाता है।

वसंत ऋतु हमें आशा और आनंद का संदेश देती है। यह हमें सिखाती है कि जिस प्रकार ऋतु परिवर्तित होती रहती है, उसी प्रकार जीवन में परिस्थितियाँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। सुख के बाद दुख, दुख के बाद सुख आता ही रहता है। इसलिए, मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए। प्रत्येक क्षण का आनंद लेना चाहिए।

6. डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम

'मिसाइल मैन' के नाम से प्रसिद्ध डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने पूरे विश्व पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। ये महान वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, लेखक तथा शिक्षक थे। ये युवाओं के लिए विशेष प्रेरणास्रोत रहे हैं। इन्होंने अपनी मेहनत, ईमानदारी, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति से देश का सर्वोच्च पद प्राप्त किया।

डॉ० कलाम का पूरा नाम 'अबुल पाकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम' था। ये भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। इनका जन्म तमिलनाडु में रामेश्वरम जिले के धनुषकोडि गाँव में 15 अक्टूबर, 1931 को हुआ था। इनके पिता का नाम जैनुलआब्दीन तथा माता का नाम अशिअम्मा था। इनके पिता बहुत ही धर्मपरायण थे, इन्होंने अपने पिता से ईमानदारी तथा आत्मानुशासन की शिक्षा पाई। इनकी माता ने इन्हें ईश्वर पर विश्वास करना सिखाया।

अत्यंत निर्धन परिवार में जन्म लेने के कारण इन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा। अपनी फीस भरने के लिए इन्होंने अखबार बेचने का काम किया। इन्होंने बी० एस० सी० तथा एरोनोटिकल इंजीनियरिंग में उपाधि प्राप्त की। आगे चलकर ये भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त हुए।

सौम्य और सरल स्वभाव वाले डॉ० कलाम बहुमुखी तथा विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने कई मर्मस्पर्शी कविताओं का सृजन किया। इन्हें रूद्र वीणा बजाने का बहुत शौक था। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दूसरों को समर्पित कर दिया। ये जिस प्रकार दृढ़ता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़े, वैसे ही इन्होंने युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी। इनका कहना था—

सपने वो नहीं होते जो आप सोने के बाद देखते हैं,
सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।

इनकी ईमानदारी, समर्पण भाव के कारण ही 2002 में इन्हें भारत का राष्ट्रपति चुना गया। इनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए इन्हें 'भारत रत्न', 'पद्म विभूषण', 'इंदिरा गांधी पुरस्कार', 'रामानुजन पुरस्कार' आदि से अलंकृत किया गया।

27 जुलाई, 2015 को शिलांग के शिक्षण संस्थान में Livable Planet Earth विषय पर व्याख्यान देते समय ये अचानक अस्वस्थ हुए तथा इनका निधन हो गया। इतने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को खोकर पूरा देश शोक में डूब गया था। आज इनके विचार ही हमारे प्रेरणास्रोत हैं।

हमने जाना

- निबंध किसी विषय पर अपने विचारों का क्रमबद्ध लेखन होता है।
- निबंध की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए।

आओ कुछ करें

1. **दिए गए विषयों पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।**

   क. विद्यार्थियों के लिए व्यायाम का महत्व

   ख. गणतंत्र दिवस

   ग. सड़क दुर्घटना का एक दृश्य

   घ. कंप्यूटर की आत्मकथा

2. **दिए गए संकेतों के आधार पर निबंध लिखिए।**

   क. भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं—प्रमुख त्योहार—रंगों का त्योहार होली—मनाने का ढंग—इससे जुड़ी कथाएँ—त्योहारों के लाभ।

   ख. पेड़ किस प्रकार हमारे लिए उपयोगी हैं—पेड़-पौधों के लाभ—पेड़ पौधों के प्रति हमारा दायित्व—धरती को हरा-भरा बनाना।

   ग. मनोरंजन के आधुनिक साधन—मनोरंजन की आवश्यकता—साधनों के चुनाव में सावधानी—विज्ञान का मनोरंजन के क्षेत्र में योगदान—इससे होनेवाली हानियाँ।

कार्यकलाप

विद्यार्थियों से पूछेंगे कि क्या कभी उनके मन में कोई इच्छा उत्पन्न हुई है; जैसे—

काश! मैं पंछी होता।

काश! मैं शिक्षा मंत्री होता।

काश! मैं एक प्रसिद्ध चित्रकार होता।

अपने मन में उठनेवाली इच्छाओं की एक रूपरेखा बनाइए तथा उसपर एक निबंध लिखिए।

जाना-समझा

ऐसे निबंध जिनमें हम किन्हीं स्थानों, वस्तुओं, ऋतुओं, त्योहारों आदि का वर्णन करते हैं, उन्हें वर्णनात्मक निबंध कहते हैं।

आओ दोहराएँ 4 (पाठ 28 से 36 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आँखों का तारा' मुहावरे का क्या अर्थ है?

बहुत प्यारा | बहुत सुंदर | बहुत ऊँचा

ख. किस मुहावरे का अर्थ है, 'क्रोध को और बढ़ाना'?

नाकों चने चबवाना | आग में घी डालना | ईंट का जवाब पत्थर से देना

2. दिए गए मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. भीगी बिल्ली बनना ______________________

ख. मुँह में पानी भर आना ______________________

3. दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए।

क. अंत भले का भला ______________________

ख. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी ______________________

4. अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे। इनका जन्म बिहार के एक गाँव में हुआ था। शिक्षा में इनकी गहन रुचि थी। देशप्रेम इनमें कूट-कूटकर भरा था। भारत के स्वाधीनता संग्राम में इन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। ये अत्यंत प्रतिभाशाली थे। परंतु, देखने में ये एक सामान्य किसान का ही प्रतिनिधित्व करते थे। इनकी सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के लिए इन्हें 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

ख. डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद की रुचि किसमें थी?

ग. डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

घ. 'कूट-कूटकर भरा था' से क्या अभिप्राय है?

ङ. गद्यांश में से ढूँढ़कर विलोम रूप लिखिए—परतंत्र, विशेष।

5. अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

जो बहुत बनते हैं उनके पास से,
चाह होती है कि कैसे टलें।
जो मिले जी खोलकर उनके यहाँ,
चाहता है कि सर के बल चलें।
और की खोट देखती बेला,
टकटकी लोग बाँध लेते हैं।
पर कसर देखते समय अपनी,
बेतरह आँख मूँद लेते हैं।

क. कवि किनके पास नहीं रुकना चाहता है?

ख. कवि किस प्रकार के लोगों से मिलना चाहता है?

ग. दूसरों के दोष देख लोग कैसा व्यवहार करते हैं?

घ. अपने दोषों के प्रति लोग किस प्रकार का रवैया अपनाते हैं?

ङ. 'सर के बल चलें' से क्या अभिप्राय है?

6. फूलों की क्यारी लगाते माली से बातचीत करते हुए संवाद लिखिए।

7. 'दिल्ली मेट्रो' पर अनुच्छेद लिखिए।

8. अपने बड़े भाई को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएँ देते हुए एक पत्र लिखिए।